CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

HINDI MIDDLE VYAKARANA

(Prescribed as Text-Book in Grammar

FOR

CLASSES V—VII

OF

VERNACULAR SCHOOLS

FOR BOYS,

BY THE

Educational Department, United Provinces.)

हिन्दी मिडिल व्याकरण

लड़कों के वर्नाक्युलर मदरसों की पाँचवीं से सातवीं जमाअत के वास्ते.

EIGHTH EDITION.

(Copyright to Government.)

LUCKNOW:

PRINTED AND PUBLISHED BY K. D. SETH,
AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1924.

Price, -/6/3 क़ीमत ।≈)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या......................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम Hindi Middle Vyakarana

लेखक...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

HINDI MIDDLE VYAKARANA

(Prescribed as Text-Book in Grammar

FOR

CLASSES V–VII

OF

VERNACULAR SCHOOLS

FOR BOYS,

BY THE

Educational Department, United Provinces.)

5.24

१६११०२

हिन्दी मिडिल व्याकरण

लड़कों के वर्नाक्युलर मदरसों की पाँचवीं से सातवीं जमाअत के वास्ते.

(Copyright to Government.)

LUCKNOW:
PRINTED AND PUBLISHED BY K. D. SETH,
AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1924.

1724

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दी मिडिल व्याकरण का सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठ
अध्याय १	
साधारण परिचय ...	१
अध्याय २	
वर्णविभाग ...	३
अध्याय ३	
शब्दविभाग ...	६
विभक्ति ...	८
अध्याय ४	
संज्ञा	९
संज्ञा के भेद ...	९
अपत्यवाचक, लघुवाचक, कर्तृवाचक शब्द ...	१३
व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के भेद	१५
अध्याय ५	
लिङ्ग	१७
लिङ्ग के भेद ...	१७
अध्याय ६	
वचन	२२
अध्याय ७	
कारक	२८
कारक के भेद ...	२९
कर्म के अनुसार क्रिया के भेद	३०
कर्म के भेद ...	३०
अकर्मक क्रिया के कर्म ...	३१
कारकों का सम्बन्ध ...	३६
अपूर्ण अकर्मक क्रियायें और उनके पूरक ...	३७
अपूर्ण सकर्मक क्रियायें और उनके पूरक ...	३७
क्रियार्थक संज्ञा ...	३८
सर्वनाम के कारक ...	३८
पद	३९
पदों का पदान्वय ...	३९
संज्ञा का पदान्वय ...	३९
अध्याय ८	
सर्वनाम	४०
पुरुष	४१
पुरुष के भेद ...	४१
सर्वनाम के भेद ...	४२
पुरुषवाचक सर्वनाम ...	४२
निश्चयवाचक सर्वनाम	४६
अनिश्चयवाचक सर्वनाम	४७
सम्बन्धवाचक सर्वनाम ...	४९
प्रश्नवाचक सर्वनाम ...	५१
निजवाचक सर्वनाम ...	५३
सर्वनाम के पुरुष ...	५६
सर्वनाम के लिङ्ग ...	५६
सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान ...	५८
अध्याय ९	
विशेषण	६०
विशेषण के भेद ...	६१
व्यक्तिवाचक विशेषण ...	६५
विभागबोधक विशेषण ...	६६
विशेष्यरहित विशेषण शब्द	६७
विशेषण के रूप ...	६८
विशेष्यसहित उदाहरण	७१
सर्वनाम से बने हुये विशेषण	७४
क्रिया से विशेषण ...	७४
अव्यय से विशेषण ...	७४
विशेषण का पदान्वय ...	७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय	पृष्ठ
अध्याय १०	
क्रिया	७६
क्रियार्थक संज्ञा ...	७६
धातु	७६
क्रिया के भेद ...	७६
क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन	७७
क्रिया के काल ...	७८
वर्तमानकाल के भेद ...	८०
भूतकाल के भेद ...	८५
भविष्यत्काल के भेद ...	६७
भिन्न २ पुरुष, लिङ्ग और वचन के कर्ताओं की एक ही क्रिया	१०४
अध्याय ११	
क्रिया की विधि और पूर्वकालिक अवस्था ...	१०६
अध्याय १२	
प्रेरणार्थक क्रिया ...	१११
अध्याय १४	
संयुक्त क्रिया ...	११३
अकर्मक क्रिया ...	११४
सकर्मक क्रिया ...	११४
अध्याय १५	
कर्तृप्रधान क्रिया से कर्मप्रधान क्रिया बनाने की रीति	११७
कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान वाक्य	११६
कर्मप्रधान वाक्य से कर्तृप्रधान वाक्य बनाने के नियम	१२१
भावप्रधान क्रिया ...	१२३
अध्याय १६	
कृदन्त और क्रियावाचक विशेषण	१२४

विषय	पृष्ठ
अध्याय १७	
ने का प्रयोग और क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष	१२६
क्रिया शब्दों का पदान्वय	१३७
अध्याय १८	
अव्यय	१३८
अव्यय के भेद ...	१३६
विशेषण	१४५
अध्याय १६	
समास	१६०
समास के भेद ...	१६०
अध्याय २०	
संधि	१६३
संधि के भेद ...	१६३
अध्याय २१	
वाक्यविभाग ...	१७०
वाक्य	१७०
वाक्य के भेद ...	१७१
साधारण वाक्य ...	१७२
मिश्रित वाक्य ...	१७२
आश्रित वाक्यांश के भेद	१७५
संज्ञा वाक्यांश ...	१७५
विशेषण वाक्यांश ...	१७६
क्रियाविशेषण वाक्यांश	१७६
संसृष्ट वाक्य ...	१७८
मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अनुसार वाक्य के भेद	१७८
अध्याय २२	
छन्दोनिरूपण ...	१८४
छन्दों का परिमाण ...	१८४
छन्दों के भेद ...	१८६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दी मिडिल व्याकरण।

अध्याय १।

साधारण परिचय।

व्याकरण वह विद्या है जिसके जानने से किसी भाषा का ठीक २ लिखना, बोलना और समझना आ जावे।

भाषा **वाक्यों** से मिलकर बनती है।

जब हम बोलते हैं तब किसी मनुष्य या वस्तु के विषय में कुछ कहना चाहते हैं। जैसे, **सीता जी वन को गईं।** यहाँ हम **सीता जी** के विषय में यह कहना चाहते हैं कि वह **वन को गईं।**

इस प्रकार **वाक्य** के **दो भाग** होगये:—

(१) जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसे **उद्देश्य** कहते हैं।

(२) जो कुछ कहा जाय उसे **विधेय** कहते हैं।

ऊपर के वाक्य में सीता जी **उद्देश्य** और वन को गईं **विधेय** है। केवल शब्द जोड़ने से **वाक्य** नहीं होता जब तक उसमें **उद्देश्य** और **विधेय** न हों। जैसे **'राम चौकी ने चलो खाट'** पाँच शब्दों का समूह है। परन्तु इसमें न तो **उद्देश्य** है और न **विधेय**। इसलिये यह **वाक्य**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं है। हम नहीं जान सकते कि बोलनेवाला **किसके विषय में और क्या** कह रहा है। इसलिये **वाक्य** दो या अधिक **शब्दों** का ऐसा **समूह** है जिससे बोलने वाले का **पूरा आशय** मालूम होसके।

वाक्य शब्दों से बनते हैं। इसलिये जब तक **शब्दों** का ज्ञान न हो **वाक्य** बन ही नहीं सकते। इस लिये व्याकरण में **शब्दों** का भी वर्णन है।

शब्द कई अक्षरों से मिलकर बनते हैं। जैसे, **राम शब्द** 'रा' और 'म' से मिलकर बना है।

व्याकरण में **अक्षरों** का भी वर्णन होता है।

इस प्रकार व्याकरण में **तीन विभाग** होजाते हैं:-

(१) वह विभाग जिसमें अक्षर या वर्णों का वर्णन हो **वर्णविभाग** कहलाता है।

(२) वह विभाग जिसमें शब्दों का वर्णन किया जाता है **शब्दविभाग** कहलाता है।

(३) वह विभाग जिसमें वाक्यों के बनाने के नियम दिये जाते हैं **वाक्यविभाग** कहलाता है।

विद्वानों की **सुलिखित वाक्य रचना** को **काव्य** कहते हैं। यह **काव्य** दो प्रकार का होता है—**गद्य** और **पद्य**।

गद्य में **साधारण वाक्य** रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्य में कवित्त, दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छन्द रहते हैं।

अध्याय २।

वर्णविभाग।

वर्ण अर्थात् अक्षर दो प्रकार के होते हैं—**स्वर** और **व्यञ्जन**।

स्वर।

जिन अक्षरों का उच्चारण **स्वयं** होता है उन्हें **स्वर** कहते हैं। जिन अक्षरों का उच्चारण विना **स्वर की सहायता** के नहीं होता उन्हें **व्यञ्जन** कहते हैं। निम्न लिखित अक्षर स्वर हैं:—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।

ए ऐ ओ औ दो दो स्वरों से मिलकर बने हैं। "ए" अ तथा इ से, "ऐ" अ तथा ए से, "ओ" अ तथा उ से और "औ" अ तथा ओ से मिलकर बने हैं।

अ इ उ ऋ के उच्चारण में थोड़ा समय लगता है इसलिये इनको **ह्रस्व** वा **एकमात्रिक स्वर** कहते हैं।

आ ई ऊ ए ऐ ओ औ के उच्चारण में ह्रस्व का दूना समय लगता है इसलिये इनको **दीर्घ** वा **द्विमात्रिक स्वर** कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसीके पुकारने में स्वरों के उच्चारण में **ह्रस्व का तिगुना समय** लगता है। ऐसे स्वरों को **प्लुत स्वर** कहते हैं। जैसे, ओ राम।

प्लुत स्वर का कोई चिह्न नहीं है। कहीं २ इस प्रकार के स्वरों को प्रकट करने के लिये स्वर के आगे **३ का अंक** लिख देते हैं। जैसे, राम हो ३।

व्यञ्जन।

निम्नलिखित अक्षर **व्यञ्जन** हैं :-

(१)	क	ख	ग	घ	ङ	—**कवर्ग**
(२)	च	छ	ज	झ	ञ	—**चवर्ग**
(३)	ट	ठ	ड	ढ	ण	—**टवर्ग**
(४)	त	थ	द	ध	न	—**तवर्ग**
(५)	प	फ	ब	भ	म	—**पवर्ग**
(६)	य	र	ल	व		—**अन्तस्थ**
(७)	श	ष	स	ह		—**ऊष्म**

नोट—अं और अः भी एक प्रकार के **व्यञ्जन** हैं। अं में अ के ऊपर जो विन्दु है उसको **अनुस्वार** कहते हैं। यह अक्षरों के आगे समझा जाता है परन्तु उनके ऊपर लिखा जाता है। अः में अ के आगे जो बिन्दु हैं उनको **विसर्ग** कहते हैं। ये अक्षरों के आगे लिखे जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क ख ग घ ङ ह अ आ को **कण्ठ्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **कण्ठ** से होता है।

च छ ज झ ञ श य इ ई को **तालव्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **तालु** से होता है।

ट ठ ड ढ ण र ष ऋ को **मूर्द्धन्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **मूर्द्धा** से होता है।

त थ द ध न ल स को **दन्त्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **दाँतों** से होता है।

प फ ब भ म उ ऊ को **ओष्ठ्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **ओठों** से होता है।

ए ऐ को **कण्ठतालव्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **कण्ठ और तालु** से होता है।

ओ औ को **कण्ठोष्ठ्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण **कण्ठ और ओठों** से होता है।

व को **दन्तोष्ठ्य अक्षर** कहते हैं क्योंकि इसका उच्चारण **दाँतों और ओठों** से होता है।

ङ ञ ण न म का उच्चारण **नासिका** से भी होता है। इसलिये ये **सानुनासिक** कहलाते हैं।

जब दो वा दो से अधिक वर्णों के मध्य में **स्वर** नहीं होता तब वे आपस में मिला कर लिखे जाते हैं। इस प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से मिले हुये अक्षरों को **संयुक्ताक्षर** कहते हैं। जैसे, **पक्का, अच्छा, सन्ध्या, स्त्री** इत्यादि।

अध्याय ३।

शब्द विभाग।

शब्द।

जो कान से सुनाई दे उसे **शब्द** कहते हैं। पशुओं और सितार, सारंगी इत्यादि बाजों की बोली को **ध्वन्यात्मक शब्द** कहते हैं क्योंकि इस प्रकार की बोली से केवल **ध्वनि** का ज्ञान होता है।

जिस शब्द का कुछ अर्थ नहीं होता उसे **निरर्थक शब्द** कहते हैं। जिस शब्द का कुछ अर्थ हो उसे **सार्थक शब्द** कहते हैं।

व्याकरण में केवल **सार्थक शब्दों** का वर्णन किया जाता है।

हिन्दी भाषा के शब्द प्रायः संस्कृत भाषा के शब्द हैं। इनमें से कई एक तो ऐसे हैं जो **शुद्ध संस्कृत** हैं जैसे, **जल** और कई एक ऐसे हैं जो कुछ बदल गये हैं जैसे, **पानीय से पानी,** परन्तु इस देश में अंगरेज़ और मुसलमान लोगों के आने के कारण आज कल हिन्दी में **अंगरेज़ी, अरबी और फ़ारसी शब्दों** का भी प्रयोग होता है। जैसे:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत–**राजा, प्रजा, पुत्र, माता, पिता** इत्यादि।

अंगरेज़ी–**स्लेट, पेन्सिल, क्लास, मास्टर, कोर्ट** इत्यादि।

अरबी–**मालूम, क़ायदा, तरीक़ा, वजह** इत्यादि।

फ़ारसी–**रास्ता, पेशा, चश्मा, सख्त** इत्यादि।

शब्द के भेद।

व्याकरण के अनुसार **शब्द पाँच प्रकार** के होते हैं:–

(१) संज्ञा, (२) सर्वनाम, (३) विशेषण, (४) क्रिया, (५) अव्यय।

(१) किसीके नाम को **संज्ञा** कहते हैं। जैसे, **राम, मनुष्य, घोड़ा, चाँदी, भलाई, सुन्दरता** इत्यादि।

(२) जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के बदले होता है उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं। जैसे, **मैं, तुम, जो, कौन** इत्यादि।

(३) जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता जनाते हैं उन्हें **विशेषण** कहते हैं। जैसे, **बड़ा, छोटा, सुन्दर** इत्यादि।

(४) जिन शब्दों से करना वा होना जाना जाता है उन्हें **क्रिया** कहते हैं। जैसे, **गया, खाता है, सोता है, पढ़ूँगा, आयाहोगा** इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) जिन **शब्दों के रूप** सदा **एकही बने** रहते हैं अर्थात् जो शब्द **वचन लिंग** और **कारक** इत्यादि से रहित होते हैं उन्हें **अव्यय** कहते हैं। जैसे, **आज, कल, पास, निकट, और, या, कैसे, अब** इत्यादि।

विभक्ति।

संज्ञा, विशेषण और **सर्वनाम** के साथ जो चिह्न **क्रिया से सम्बन्ध** दिखाने को लगाये जाते हैं **विभक्ति** कहलाते हैं। जैसे, राम **ने** मुझ **को** पढ़ाया। शस्त्र **से** वह लड़ता है। राम **के लिये** मैं बड़ी पुस्तक लायाहूँ। मोहन **से** कमल का फूल लेलो। यह राम **की** घड़ी है। उसके घर **में** तुम क्या करते हो? इस चौड़ी मेज़ **पर** मत बैठो। मैं तुम्हारे साथ पाठशाला **तक** जाऊँगा। इन वाक्यों में **ने, को, से, के लिये, से, का, की, के, तक** विभक्तियाँ हैं। ये चिह्न सात प्रकार की **विभक्तियों** में बाँटे जाते हैं जिनके नाम ये हैं—**प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी।**

नोट—(१) **हे, हो, अरे, हरे, ओ** सम्बोधन कारक के चिह्न हैं। इनका प्रयोग प्राय: सम्बोधन कारक की संज्ञा के पहिले होता है। जैसे, **हे राम** इत्यादि। ये स्वयं अव्यय शब्द हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) विभक्तियों को **कारकार्थक अव्यय** भी कहते हैं।

अध्याय ४।

संज्ञा।

किसीके **नाम** को **संज्ञा** कहते हैं। जैसे, **राम, लड़का** इत्यादि।

संज्ञा के भेद।

संज्ञा **तीन प्रकार** की होती है–(१) **जातिवाचक** संज्ञा, (२) **व्यक्तिवाचक** संज्ञा, (३) **भाववाचक** संज्ञा।

(१) जातिवाचक संज्ञा।

संसार में जितने जीव वा पदार्थ हम देखते हैं वे अपने २ गुणों के अनुसार **भिन्न २ जातियों** में विभक्त हैं। जैसे, **मनुष्य, पशु** इत्यादि।

इन जातियों में फिर **अवान्तर भेद** होते हैं। जैसे, पशु एक बड़ी जाति है। इससे निकली हुई जातियाँ कुत्ता, बिल्ली, गाय, बैल, सिंह इत्यादि हैं। इसी प्रकार कपड़ा एक बड़ी जाति है। इससे निकली हुई जातियाँ–मलमल, मारकीन इत्यादि हैं। इसी प्रकार पात्र एक बड़ी जाति है। इससे निकली हुई जातियाँ घड़ा, थाली, लोटा इत्यादि हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन संज्ञाओं से जाति का बोध होता है उनका प्रयोग उस जाति के प्रत्येक व्यक्ति के लिये होता है । इसलिये संसार में जितने कुत्ते हैं उनमें से प्रत्येक को कुत्ता कहेंगे ।

जिस संज्ञा से **जाति का बोध** होता है और जिसका प्रयोग उस जाति के प्रत्येक व्यक्ति के लिये होता है उसे **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं ।

इसलिये वृक्ष, पशु, मनुष्य, आम, घोड़ा इत्यादि **जाति-वाचक** संज्ञा हैं ।

(२) व्यक्तिवाचक संज्ञा ।

जिस संज्ञा का प्रयोग किसी जाति के एकही व्यक्ति के लिये होता है उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं । जैसे, राम, हिमालय, बनारस, लंका, हिन्दुस्तान, शिवपुर, गंगा, रामायण इत्यादि ।

(३) भाववाचक संज्ञा ।

(१) सुन्दर फूल में **सुन्दरता** पाई जाती है ।

(२) यह मनुष्य **दुख** से दुखी है ।

(३) तुम क्यों इतनी धीमी **चाल** से चलते हो ?

नं० १ में सुन्दर शब्द फूल का **गुण** बतलाता है परन्तु **सुन्दरता** उस गुण का नाम है ।

नं० २ में दुखी शब्द आदमी की दशा प्रकट करता है परन्तु **दुख** उस दशा का नाम है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ३ में 'चलते हो' से चलने का व्यापार जाना जाता है परन्तु **चाल** उस व्यापार का नाम है।

गुण, दशा और **व्यापार** के **नाम** को **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं। इसलिये **सुन्दरता, दुख** और **चाल भाववाचक** संज्ञा हैं।

भाववाचक संज्ञाओं के और उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं:—

गुण के नाम—भलाई, बुराई, दुष्टता, लाली इत्यादि।

दशा के नाम—सुख, लड़कपन, दरिद्रता, दासत्व इत्यादि।

व्यापार के नाम—दृष्टि, दौड़, छूत, रुलाई इत्यादि।

भाववाचक संज्ञायें सदा **एकवचन** में होती हैं। जब ये **बहुवचन के रूप** में होती हैं तब **जातिवाचक संज्ञा** होजाती हैं। जैसे, (१) इस आदमी में बहुत सी **बुराइयाँ** पाई जाती हैं। (२) इस मनुष्य को अनेकों प्रकार के **दुखों** ने घेर लिया है।

भाववाचक संज्ञायें **जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया** और **अव्यय** शब्दों से बनती हैं। जैसे:—

जातिवाचक संज्ञा	मित्र	लड़का	मनुष्य
भाववाचक संज्ञा	मित्रता	लड़कपन	मनुष्यत्व
विशेषण	मोटा	सुन्दर	सुखी
भाववाचक संज्ञा	मोटाई	सुन्दरता	सुख
क्रिया	चलना	छूना	दौड़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाववाचक संज्ञा	चाल	छूत	दौड़
अव्यय	वृथा	मिथ्या	तथा
भाववाचक संज्ञा	वृथात्व	मिथ्यात्व	तथात्व

भाववाचक संज्ञायें बनाने की रीति।

(१) कहीं २ **ई** का प्रयोग होता है। जैसे, **बुरा** से **बुराई**, **भला** से **भलाई**।

(२) कहीं २ **पन** का प्रयोग होता है। जैसे, **बालक** से **बालकपन**, **लड़का** से **लड़कपन**।

(३) कहीं २ **हट** का प्रयोग होता है। जैसे, **चिकना** से **चिकनाहट**, **चिल्लाना** से **चिल्लाहट**।

(४) कहीं २ **वट** का प्रयोग होता है। जैसे, **बनाना** से **बनावट**, **सजाना** से **सजावट**।

(५) कहीं २ **पा** का प्रयोग होता है। जैसे, **बूढ़ा** से **बुढ़ापा**।

(६) कहीं २ **स** का प्रयोग होता है। जैसे, **मीठा** से **मिठास**।

(७) कहीं २ **न्त** का प्रयोग होता है। जैसे, **गढ़ना** से **गढ़न्त**।

नोट—ऊपर के नियमों का प्रयोग **प्राकृत शब्दों** के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ होता है । संस्कृत शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाने के नियम नीचे लिखे जाते हैं:—

(१) कहीं २ ता का प्रयोग होता है । जैसे, सुन्दर से सुन्दरता, मित्र से मित्रता, दीन से दीनता, चतुर से चतुरता ।

(२) कहीं कहीं त्व का प्रयोग होता है । जैसे, प्रभु से प्रभुत्व, मनुष्य से मनुष्यत्व, दास से दासत्व ।

(३) कहीं कहीं धातु से भी भाववाचक संज्ञा बनती है । जैसे, भज् से भक्ति, गम् से गति, पठ् से पठन, जि से जय ।

संस्कृत में अनेक प्रकार से भाववाचक संज्ञायें बनती हैं और उनका प्रयोग हिन्दी में भी होता है जैसे:— पाण्डित्य, माधुर्य्य, कौमार, पौरुष, गौरव ।

अपत्य-वाचक, लघु-वाचक, कर्तृ-वाचक शब्द ।

(१) अपत्यवाचक शब्द ।

नोट—अपत्य का अर्थ सन्तान है ।

शब्द	अपत्यवाचक शब्द	अर्थ
वसुदेव	वासुदेव	वसुदेव का पुत्र (कृष्ण जी)
पाण्डु	पाण्डव	पाण्डु के पुत्र (पाँचो पाण्डव)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुरु	**कौरव**	कुरु के पुत्र (१०० कौरव)
सुमित्रा	**सौमित्रि**	सुमित्रा का पुत्र (लक्ष्मणजी)
पुत्र	**पौत्र**	पुत्र का पुत्र (नाती)
शिव	**शैव**	शिव का भक्त वा अनुयायी
विष्णु	**वैष्णव**	विष्णु का भक्त वा अनुयायी
बुद्ध	**बौद्ध**	बुद्ध का अनुयायी

नोट—कहीं कहीं शब्द को **ईकारान्त** कर देने से भी **अपत्यवाचक** शब्द बनते हैं। जैसे, **दयानन्द** से **दयानन्दी**, **रामानन्द** से **रामानन्दी** इत्यादि।

(२) लघुवाचक शब्द।

निम्नलिखित प्रकार से **लघुवाचक** शब्द बनते हैं जो जातिवाचक संज्ञा होते हैं। लघु का अर्थ **छोटा** है।

(१) कहीं कहीं आकारान्त शब्दों को ईकारान्त कर देते हैं। जैसे, **टोकरा** से **टोकरी**, **रस्सा** से **रस्सी**, **गोला** से **गोली**, **नाला** से **नाली**।

(२) कहीं कहीं शब्द के **अन्तस्वर** को **लोप** करके **इया** जोड़ देते हैं। जैसे, (इस दशा में शब्द के मध्य का स्वर प्रायः ह्रस्व होजाता है) **खाट** से **खटिया**, **खाँची** से **खँचिया**।

(३) कर्तृवाचक शब्द।

संज्ञा और क्रिया के अन्त में **हारा**, **वाला**, **इया**,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क इत्यादि प्रत्यय लगाने से **कर्तृवाचक** शब्द बनते हैं जो **जातिवाचक** संज्ञा होते हैं। जैसे, (कर्तृ का अर्थ करनेवाला है) **चूड़ी** से **चुड़िहारा, बोलना** से **बोलनेवाला, दूध** से **दूधवाला, लिखना** से **लिखनेवाला, मक्खन** से **मखनिया, गाना** से **गवैया, उपदेश** से **उपदेशक, पूजना** से **पूजक** इत्यादि।

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के भेद।

स्वरूप अथवा व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द तीन प्रकार के होते हैं।

	(१) रूढ़।	(२) यौगिक।	(३) योगरूढ़।
जैसे,	गौ।	सेवक।	पङ्कज।

गौ शब्द गम् धातु से बनता है जिसका अर्थ गमन करना है किन्तु यह शब्द पशु विशेष का बोधक है। गौ के अर्थ से प्रकट है कि गम् और उसकी व्युत्पत्ति से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इसलिये गौ **रूढ़** है।

सेवक (सेवा करनेवाला) इस शब्द का अर्थ **व्युत्पत्ति के अनुसार** है इसलिये सेवक **यौगिक** है।

पङ्कज शब्द की व्युत्पत्ति पङ्क और ज है। पङ्क का अर्थ कीचड़ और जन् का अर्थ पैदा होना है। व्युत्पत्ति के अनुसार पङ्कज उन वस्तुओं को कहना चाहिये जो कीचड़ से पैदा हों, अर्थात् सिंघाड़ा, कुमुदिनी, मोथा, धान, कमल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्यादि। परन्तु पङ्कज केवल कमल ही को कहते हैं। कुमुदिनी, सिंघाड़ा इत्यादि को नहीं कहते। इसलिये पङ्कज **योगरूढ़** है।

(१) जिन शब्दों की व्युत्पत्ति न हो अथवा व्युत्पत्ति हो भी तो उससे शब्द के अर्थ से सम्बन्ध न हो उसे **रूढ़शब्द** कहते हैं। जैसे, खुर, घर, गज, घोड़ा, बैल इत्यादि।

(२) जिन शब्दों की व्युत्पत्ति होसके और उनके अर्थ व्युत्पत्ति से ठीक २ मिलें उन्हें **यौगिक शब्द** कहते हैं। जैसे, पाठशाला, मनुज, सज्जन, शिवालय इत्यादि।

(३) जिन शब्दों की व्युत्पत्ति होसके परन्तु उनके अर्थ व्युत्पत्ति से कुछ कुछ मिलें पर सर्वथा व्युत्पत्ति के अनुसार न हों उन्हें **योगरूढ़ शब्द** कहते हैं। जैसे, पङ्कज, जलज, हिमालय, हनुमान्, मुरलीधर इत्यादि।

नोट–(१) कोष के देखने में शब्दों की व्युत्पत्ति का कुछ ज्ञान होजायगा।

नोट–(२) अर्थ के अनुसार ऊपर के तीनों प्रकार के शब्द भी **जातिवाचक**, **व्यक्तिवाचक** संज्ञा वा **विशेषण** इत्यादि होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय ५।

संज्ञा में लिंग, वचन और कारक होते हैं।

लिंग।

लिंग से संज्ञा का **जातिभेद** जाना जाता है, अर्थात् इससे यह जाना जाता है कि अमुक संज्ञा **पुरुषजाति** की है वा **स्त्रीजाति** की।

लिंग के भेद।

हिन्दी में **पुल्लिग** और **स्त्रीलिंग** ही होते हैं किन्तु संस्कृत में **तीसरा नपुंसकलिंग** भी होता है।

(१) जिस संज्ञा से **पुरुष का बोध** होता है वह संज्ञा **पुल्लिग** कही जाती है। जैसे, लड़का, घोड़ा, हाथी, हाथ, नमक, चावल इत्यादि।

(२) जिस संज्ञा से **स्त्री का बोध** होता है वह **स्त्रीलिंग** कही जाती है। जैसे, लड़की, घोड़ी, हथिनी, नाक, दाल इत्यादि।

प्राणीवाचक संज्ञाओं का लिंग जानना सहज है परन्तु अप्राणीवाचक संज्ञाओं का लिंग जानना कठिन है। क्योंकि ऐसे शब्दों में लिंग के कोई चिह्न नहीं पाये जाते। ऐसी संज्ञाओं का लिंग कोष के देखने और विद्वानों की बोल चाल से जाना जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्ञाओं के लिंग जानने के थोड़े से नियम नीचे लिखे जाते हैं:-

स्त्रीलिंग।

निम्नलिखित प्रकार के शब्द प्रायः **स्त्रीलिंग** होते हैं:-

(१) आकारान्त संस्कृत शब्द । जैसे, मात्रा, दया, कृपा, धारा, वसुधा, शोभा, सभा, निन्दा, शाखा, प्रजा, माया, रक्षा इत्यादि ।

नोट–राजा, वक्ता, भरोसा, आत्मा **पुल्लिंग** हैं ।

(२) इकारान्त संस्कृत शब्द । जैसे, रीति, नीति, हानि, मुक्ति, भूमि, बुद्धि, ग्लानि, रात्रि, विपत्ति, भक्ति इत्यादि ।

नोट–ऋषि, मुनि **पुल्लिंग** हैं ।

(३) ईकारान्त शब्द । जैसे, नदी, बोली, चिट्ठी, सिलाई, पिसाई, पोथी इत्यादि ।

नोट–घी, जी, हाथी, मोती, दही **पुल्लिंग** हैं ।

(४) नदियों के नाम । जैसे, गंगा, सरयू, यमुना, गोमती इत्यादि ।

(५) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में न्त, वट, हट, ई, ता होता है । जैसे, गढ़न्त, बनावट, सजावट, रुलाई, सुन्दरता इत्यादि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुल्लिंग।

निम्नलिखित प्रकार के शब्द प्राय: पुल्लिंग होते हैं:—

(१) आकारान्त शब्द । जैसे, कपड़ा, छाता, लोटा, सोंटा, जाड़ा, पाला इत्यादि ।

(२) ईकारान्त शब्द जिनसे किसी व्यापार करनेवाले वा जाति का बोध होता है। जैसे, माली, धोबी, पुजारी, मंत्री, पंजाबी, बंगाली, गुजराती इत्यादि ।

(३) तारों और ग्रहों के नाम । जैसे, सूर्य्य, चन्द्रमा, मंगल इत्यादि ।

नोट—पृथ्वी स्त्रीलिंग है।

(४) विभाग के नाम । जैसे, वर्ष, मास, सप्ताह, दिन, घंटा, मिनट, सेकन्ड, अगहन, पूस, सोमवार, रविवार इत्यादि ।

(५) पहाड़ों के नाम । जैसे, हिमालय, विन्ध्याचल इत्यादि ।

(६) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में आव, पन, पा होता है। जैसे, चढ़ाव, लड़कपन, बुढ़ापा इत्यादि ।

पुल्लिंग प्राणीवाचक शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के नियम।

(१) कहीं कहीं **अकारान्त** शब्द को **ईकारान्त** करदेते हैं। जैसे, **दास** से **दासी**, **देव** से **देवी**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) कहीं कहीं **आकारान्त** शब्द को **ईकारान्त** कर देते हैं। जैसे, **घोड़ा** से **घोड़ी**, **बेटा** से **बेटी**।

(३) कहीं कहीं **आकारान्त** शब्द को **अकारान्त** कर देते हैं। जैसे, **भेड़ा** से **भेड़**, **भैंसा** से **भैंस**।

(४) कहीं कहीं **अकारान्त** शब्द के अन्त में **नी** जोड़ देते हैं। जैसे, **मोर** से **मोरनी**, **सिंह** से **सिंहनी**।

(५) कहीं कहीं **अकारान्त** शब्द के **अकार** को **आकार** करके **नी** जोड़ देते हैं। जैसे, **देवर** से **देवरानी**, **मेहतर** से **मेहतरानी**।

(६) कहीं कहीं **ईकारान्त** शब्द के **ईकार** को **इकार** करके **नी** जोड़ देते हैं। जैसे, **अपराधी** से **अपराधिनी**, **अधिकारी** से **अधिकारिनी**।

(७) कहीं कहीं शब्द के **अन्तिम स्वर** का **लोप** करके **इन** जोड़ देते हैं। जैसे, **लोहार** से **लोहारिन**, **ग्वाला** से **ग्वालिन**, **तेली** से **तेलिन**, **माली** से **मालिन**।

(८) कहीं कहीं **संस्कृत अकारान्त** शब्द के **अकार** को **इकार** करके **का** जोड़ देते हैं। जैसे, **बाल** से **बालिका**, **पुत्र** से **पुत्रिका**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(९) कहीं कहीं **अकारान्त संस्कृत** शब्द को **आकारान्त** करदेते हैं। जैसे, **अज** से **अजा**, **वत्स** से **वत्सा**।

(१०) कहीं कहीं शब्द के **अन्तिम स्वर का लोप करके आइन** जोड़ देते हैं परन्तु इस दशा में **शब्द के मध्य के दीर्घ स्वर ह्रस्व** होजाते हैं। जैसे, **तिवारी** से **तिवराइन**, **ठाकुर** से **ठकुराइन**, **चौबे** से **चौबाइन**, **बाबू** से **बबुआइन**।

(११) कुछ शब्दों के **स्त्रीलिंग भिन्न शब्द** होते हैं। जैसे, पुं० पिता भाई बैल राजा पुरुष भ्राता।
स्त्री० माता बहिन गाय रानी स्त्री भगिनी।

(१२) कुत्ता का स्त्रीलिंग—कुतिया, बछवा का बछिया, बेटा का बिटिया और चकवा का चकई होता है।

(१३) कुछ शब्दों का **स्त्रीलिंग** नहीं होता। जब ऐसे शब्दों का प्रयोग पुल्लिंग में करना होता है तो शब्द के पहिले नर जोड़ा जाता है और स्त्रीलिंग के पहिले मादा। जैसे, नर भेड़िया, मादा भेड़िया। तोता, मैना, लोमड़ी आदि इसी प्रकार के शब्द हैं।

(१४) कुछ शब्दों का प्रयोग **दोनों लिंगों** में होता है। जैसे, मित्र, शत्रु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय ६।

वचन।

वचन से **संज्ञा की संख्या** जानी जाती है अर्थात् इससे यह जाना जाता है कि अमुक संज्ञा से **एक का बोध होता है वा एक से अधिक का।**

हिन्दी में **दो वचन** हैं:—**एकवचन** और **बहुवचन**, और संस्कृत में **द्विवचन** भी होता है।

(१) जिस संज्ञा से **एक का बोध** होता है वह संज्ञा **एकवचन** कही जाती है। जैसे, गाय, पाठशाला इत्यादि।

(२) जिस संज्ञा से **एक से अधिक का बोध** होता है वह संज्ञा **बहुवचन** कही जाती है। जैसे, गायें, पाठशालायें इत्यादि।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम।

विभक्तिरहित और विभक्तिसहित संज्ञाओं के बहुवचन भिन्न २ प्रकार से बनते हैं।

विभक्तिरहित पुल्लिंग संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम।

(विभक्तिरहित शब्द से अभिप्राय यह है कि उस शब्द में विभक्ति का चिह्न दिखाई नहीं पड़ता)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) आकारान्त संस्कृत शब्द और सब प्रकार के अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त इत्यादि शब्दों का रूप दोनों वचनों में एक ही होता है। इस दशा में केवल क्रिया से वचन का ज्ञान होता है। जैसे:—

ए० वह देवता है। बैल आया। भालू बैठा है। हाथी आया।
ब० वे देवता हैं। बैल आये। भालू बैठे हैं। हाथी आये।

(२) **आकारान्त** हिंदी, अरबी, और फ़ारसी शब्द **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे:—

हिंदी शब्द।

ए० वहाँ एक **लड़का** था। राम का **छाता** अच्छा है।
ब० वहाँ कई **लड़के** थे। राम के **छाते** अच्छे हैं।

अरबी शब्द।

ए० यह **क़ायदा** अच्छा है। यह **तरीक़ा** बुरा है।
ब० ये **क़ायदे** अच्छे हैं। ये **तरीक़े** बुरे हैं।

फ़ारसी शब्द।

ए० यह **रास्ता** ख़राब है। यह **पेशा** अच्छा है।
ब० ये **रास्ते** ख़राब हैं। ये **पेशे** अच्छे हैं।

नोट—(१) आकारान्त हिंदी **आदरयोग्य** शब्द एकवचन में भी **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे:— पंडितजी के **लड़के** विद्वान् हैं।

नोट—(२) आकारान्त हिंदी, अरबी, और फ़ारसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द **विभक्तियुक्त** होने पर **एकवचन** में भी **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे:—

हिंदी—उस **लड़के** का, इस **छाते** पर, इस **कपड़े** में।
अरबी—इस **क़ायदे** का, इस **तरीक़े** पर, इस **नतीजे** से।
फ़ारसी—इस **रास्ते** पर, इस **पेशे** का, इस **चश्मे** में।

नोट—(३) संस्कृत शब्द **एकारान्त** नहीं होते। जैसे:—इस **राजा** का, इस **देवता** का।

विभक्तिरहित स्त्रीलिंग संज्ञाओं के बहु-वचन बनाने के नियम।

(१) **अकारान्त** शब्द **एँकारान्त** होजाते हैं। जैसे:—

ए०	यह **बात** अच्छी है।	**गाय** चरती है।
ब०	ये **बातें** अच्छी हैं।	**गायें** चरती हैं।

(२) आकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त इत्यादि शब्दों के अन्त में **एँ** जोड़ा जाता है परन्तु इस दशा में **ऊकारान्त** शब्द का **ऊकार, उकार** होजाता है। जैसे:—

ए०	यह **माला** अच्छी है।	यह **वस्तु** बुरी है।	**बहू** आई।
ब०	ये **मालाएँ** अच्छी हैं।	ये **वस्तुएँ** बुरी हैं।	**बहुएँ** आईं।

(३) **इकारान्त** और **ईकारान्त** शब्दों के अन्त में **याँ** जोड़ा जाता है परन्तु इस दशा में **ईकारान्त** शब्द का **ईकार, इकार** होजाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

ए० यह **रीति** अच्छी है। **घोड़ी** चरती है।

ब० ये **रीतियाँ** अच्छी हैं। **घोड़ियाँ** चरती हैं।

(४) याकारान्त हिंदी शब्द याँकारान्त होजाते हैं।

जैसे:—

ए० यह **खटिया** अच्छी है। **चिड़िया** उड़ी।

ब० ये **खटियाँ** अच्छी हैं। **चिड़ियाँ** उड़ीं।

नोट—(१) याकारान्त संस्कृत शब्द **याँकारान्त** नहीं होते। जैसे:—

ए० उसकी **कन्या** आई। यह **शय्या** अच्छी है।

ब० उसकी **कन्याएँ** आईं। ये **शय्याएँ** अच्छी हैं।

(२) किसी भाषा के **आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द विभक्तियुक्त** होने पर **एकारान्त** नहीं होते। जैसे:—**माला** में, **कन्या** से, **खटिया** पर, **हवा** में इत्यादि।

विभक्तिसहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम।

विभक्तिसहित पुल्लिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं के बहुवचन एक ही प्रकार से बनते हैं।

(१) **आकारान्त** हिंदी, अरबी और फ़ारसी शब्दों को **ओंकारान्त** करदेते हैं। जैसे:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंदी शब्द ।

ए० लड़के ने, छाते पर, चिड़िया ने, खटिया पर।
ब० लड़कों ने, छातों पर, चिड़ियों ने, खटियों पर।

अरबी शब्द ।

ए० क़ायदे का, तरीक़े से, नतीजे में ।
ब० क़ायदों का, तरीक़ों से, नतीजों में ।

फ़ारसी शब्द ।

ए० रास्ते से, पेशे में, चश्मे का ।
ब० रास्तों से, पेशों में, चश्मों का ।

नोट-(१) आकारान्त स्त्रीलिंग अरबी शब्दों के अन्त में ओं जोड़ा जाता है । जैसे, हवाओं में, दुआओं से ।

(२) अकारान्त शब्द को ओंकारान्त करदेते हैं । जैसे:-

ए० बात में, बैल ने, पाप से, गाय को ।
ब० बातों में, बैलों ने, पापों से, गायों को ।

(३) आकारान्त संस्कृत, अरबी शब्द और सब प्रकार के उकारान्त, ऊकारान्त इत्यादि शब्दों के अन्त में ओं जोड़ देते हैं परन्तु इस दशा में ऊकारान्त शब्दों का ऊकार, उकार होजाता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

ए० राजा ने, कन्या से, बहू का, हवा में, भालू ने ।

ब० राजाओं ने, कन्याओं से, बहुओं का, हवाओं में, भालुओं ने ।

(४) इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के अन्त में यों जोड़ा जाता है परन्तु इस दशा में ईकारान्त शब्दों का ईकार, इकार होजाता है । जैसे:—

ए० मुनि ने, रीति में, घोड़ी पर, माली को ।

ब० मुनियों ने, रीतियों में, घोड़ियों पर, मालियों को ।

नोट—कोष के देखने से ज्ञात होजायगा कि कौन से शब्द किस भाषा के हैं ।

(५) समुदाय का अर्थ जनाने के लिये पुरुषवाचक संज्ञाओं के बहुवचन लोग के और सब प्रकार की संज्ञाओं के बहुवचन गण के प्रयोग से बनते हैं । जैसे:—

आदमी लोग, पण्डित लोग, माली लोग ।

मित्रगण, पाठकगण, तारागण ।

(६) सम्बोधन कारक की अवस्था की संज्ञाओं के बहुवचन विभक्तिसहित संज्ञाओं के नियम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के अनुसार बनते हैं परन्तु इस दशा में अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता। जैसेः–

ए० हे **लड़के**, हे **लड़की**, हे **माता**, हे **राजा**।

ब० हे **लड़को**, हे **लड़कियो**, हे **माताओ**, हे **राजाओ**।

नोट–कहीं २ **स्थानवाचक**, **समयवाचक**, **मूल्य-वाचक** इत्यादि शब्दों के रूप **बहुवचन** में नहीं पलटते। जैसे, (१) मोहन **दस मील** से आता है। (२) कल्लू **चार महीने** में लौटेगा। (३) **आठ पैसे** में क्या होगा। (४) **बारह हाथ** लम्बा रस्सा लाओ। (५) उसके पास बहुत **रुपया** है।

अध्याय ७।

कारक।

वाक्य में संज्ञाओं की अवस्था को **कारक** कहते हैं। कारक से यह जाना जाता है कि अमुक संज्ञा का सम्बन्ध **वाक्य की क्रिया** अथवा **दूसरे शब्द के साथ** किस प्रकार से है। जैसे, (१) **राम** घर जाता है। (२) मैं **राम को** देखता हूँ। (३) मैं **राम से** पढ़ता हूँ। (४) यह पुस्तक **राम की** है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० (१) में राम जाने का काम करता है। नं० (२) में राम पर देखने का काम पड़ता है। नं० (३) में राम की सहायता से पढ़ने का काम होता है। नं० (४) में पुस्तक पर राम का अधिकार जाना जाता है।

इसलिये चारो वाक्यों में **राम** भिन्न २ अवस्थाओं अर्थात् कारकों में है।

कारक के भेद।

कारक **आठ** होते हैं—(१) कर्त्ता, (२) कर्म,
(३) करण, (४) सम्प्रदान,
(५) अपादान, (६) सम्बन्ध,
(७) अधिकरण, (८) सम्बोधन।

(१) कर्त्ता कारक।

क्रिया के **करनेवाले** वा **होनेवाले** को **कर्त्ता** कहते हैं। कर्त्ता कारक में **प्रथमा विभक्ति** आती है। जैसे, (१) मोहन वहाँ क्यों रहता है? (२) वह लड़का दुखी है।

ऊपर के वाक्यों में **रहनेवाला मोहन** है और **होनेवाला लड़का** है इसलिये **मोहन** और **लड़का** कर्त्ता कारक में हैं। कर्त्ता का चिह्न **ने** है जिसका प्रयोग कहीं होता है और कहीं नहीं। जैसे "मोहन ने रोटी खाली है"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहाँ पर ने चिह्न है और जैसे "मोहन रोटी खाता है"। यहाँ पर ने चिह्न नहीं है। इसका वर्णन आगे किया गया है।

(२) कर्म कारक।

वाक्य में जिस पर क्रिया का फल होता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति आती है। जैसे:- (१) मोहन भात खाता है। (२) कल्लू हिन्दी पढ़ता है।

ऊपर के वाक्यों में खाना क्रिया का फल भात पर और पढ़ना क्रिया का फल हिन्दी पर पड़ता है। इसलिये भात और हिन्दी कर्म कारक में हैं।

कर्म के अनुसार क्रिया के भेद।

(१) जिस क्रिया का कर्म होता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे, पढ़ना, लिखना, बोलना, देखना इत्यादि।

(२) जिस क्रिया का कर्म नहीं होता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे, आना, जाना, हँसना, बैठना इत्यादि।

कर्म के भेद।

कुछ सकर्मक क्रियायें ऐसी हैं जिनके दो कर्म होसकते हैं। द्विकर्मक धातुओं के दो कर्म होते हैं—एक मुख्य और दूसरा गौण। जो कर्म कर्त्ता को अभीष्ट है वह मुख्य वा प्रधान कहलाता है और दूसरा गौण वा अप्रधान। जैसे,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम ने मोहन को एक चित्र दिखाया। सोहन उस लड़के को हिन्दी पढ़ाता है। राम ने गोविन्द को एक बैल दिया। मैं कृष्ण को अपना नौकर दूँगा।

इन वाक्यों में **चित्र, हिन्दी, बैल, नौकर, मुख्य** वा **प्रधान कर्म** हैं और **मोहन, लड़का, गोविन्द** तथा **कृष्ण गौण** वा **अप्रधान कर्म** हैं।

अकर्मक क्रिया के कर्म।

कुछ **अकर्मक क्रियायें** भी कभी कभी **कर्म** रखती हैं। इस दशा में जो संज्ञा **कर्म** होती है वह प्राय: **उसी धातु** से बनी होती है जिस धातु से **वह क्रिया** बनी होती है। जैसे, (१) कल्लू धीमी **चाल** चलता है। (२) मोहन दो मील की **दौड़** दौड़ा।

नोट—इस दशा में क्रिया **अकर्मक** ही बनी रहती है।

कर्म कारक का चिह्न **को** है जिसका प्रयोग कहीं होता है और कहीं नहीं होता। जैसे, राम ने **सिंह को** देखा है और राम ने **सिंह** देखा है।

(३) करण कारक।

जिसकी सहायता से क्रिया कीजाती है उसे **करण कारक** कहते हैं। करण कारक में **तृतीया विभक्ति** होती है। जैसे, (१) राम **आँख से** देखता है। (२) मोहन **क़लम से** लिखता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में देखनारूप क्रिया **आँख** की सहायता से और लिखनारूप क्रिया क़लम की सहायता से होती है। इसलिये **आँख** और **क़लम** करण कारक में हैं।

नोट–कहीं २ **से** का चिह्न **छिपा** रहता है। जैसे:– मैंने न **आँखों** (से) देखा न **कानों** (से) सुना।

(४) सम्प्रदान कारक।

जिसके लिये कुछ किया जाय वा **जिसको कुछ दिया जाय** वह सम्प्रदान कारक होता है। सम्प्रदान कारक में **चतुर्थी विभक्ति** आती है। जैसे, (१) मोहन **राम के लिये** पुस्तक लाया। (२) मोहन **धन के लिये** परिश्रम करता है। (३) उसने **बालक को** मिठाई दी।

ऊपर के वाक्यों में लाने का काम **राम के लिये** होता है, परिश्रम करने का काम **धन के लिये** होता है और देने का काम **बालक के लिये** होता है। इसलिये **राम, धन** और **बालक सम्प्रदान कारक** में हैं।

(५) अपादान कारक।

जिस निश्चित अवधि से वियोग पाया जाय वह **अपादान कारक** है। इस कारक में **पञ्चमी विभक्ति** आती है। जैसे:– (१) **पर्वत से** पत्थर गिरे। (२) मोहन **काशी से** आता है। (३) गोविन्द ने **राम से** पुस्तक लेली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **पर्वत, काशी,** और **राम अपादान कारक** में हैं।

वाक्य में (१) **जिससे** कोई **पढ़े** वा **डरे,** (२) **जिससे** कोई **वस्तु उत्पन्न** हो, (३) **जिससे** कोई **बचाया जाय,** (४) **जिससे** कुछ **सुना जाय,** (५) **जिससे** कोई **लज्जा** करे, (६) **जिससे** कोई कुछ **छिपावे,** (७) **जिससे भिन्नता** हो, (८) **जिससे दूर** हो, (९) **जिससे बढ़कर** वा **घटकर** हो, उसे भी **अपादान कारक** कहते हैं। जैसे:—

(१) पढ़ना—डर—मोहन **गुरु** से संस्कृत पढ़ता है।
मैं **राम** से डरता हूँ।

(२) उत्पन्न—**दूध** से घी निकलता है।

(३) बचाव—मैंने मोहन को **हाथी** से बचाया।

(४) सुनना—मैंने यह बात **मोहन** से सुनी।

(५) लज्जा—कल्लू **मोहन** से लजाता है।

(६) छिपाना—यह बात **सोहन** से मत छिपाओ।

(७) भिन्नता—यह वस्तु उस **वस्तु** से भिन्न है।

(८) दूर—मैं लल्लू से **दूर** रहता हूँ।

(९) बढ़कर—घटकर—मोहन **लल्लू** से अच्छा है। यह
दूध उस **दूध** से बुरा है।

अपादान कारक का चिह्न **से** है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) सम्बन्ध कारक ।

जिसका **सम्बन्ध** किसी **वस्तु** वा **व्यक्ति** के साथ होता है वह हिन्दी में **सम्बन्ध कारक** कहलाता है । इस कारक में **षष्ठी विभक्ति** आती है । जैसे, (१) **मोहन का** लड़का आया था । (२) इस **पुस्तक का** मोल क्या था ?

ऊपर के वाक्यों में **मोहन** और **पुस्तक** सम्बन्ध कारक में हैं ।

सम्बन्ध कारक में **का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी** चिह्न आते हैं । जैसे, **मोहन का** घोड़ा अच्छा है । **सोहन के** तीन भाई और हैं । यह पुस्तक **राम की** है । मैं **अपना** मुँह धोता हूँ । तुम **अपने** लड़कों को बुला लो । **अपनी** पुस्तक लाया करो । **मेरा** भाई पढ़ने में तेज़ है । **तुम्हारे** कै पुत्र हैं ? **मेरी** घड़ी खूब चलती है ।

(७) अधिकरण कारक ।

जो **क्रिया का आधार** होता है उसे **अधिकरण कारक** कहते हैं । इस कारक में **सप्तमी विभक्ति** आती है । जैसे, (१) राम **घर में** है । (२) पक्षी **पेड़ों पर** रहते हैं ।

ऊपर के वाक्यों में होने का आधार **घर** है और रहने का आधार **पेड़ों** है । इसलिये **घर** और **पेड़ों** **अधिकरण** कारक में हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब किसी **समुदाय में से एक वा अधिक का निश्चय किया जाता है** तो वह **समुदाय** भी अधिकरण कारक में होता है। जैसे, **पशुओं में** सिंह बड़ा बलवान् होता है।

अधिकरण कारक के चिह्न **में** और **पर** हैं।

(८) सम्बोधन कारक।

जिसका प्रयोग **पुकारने** वा **सचेत करने** के लिये होता है उसे **सम्बोधन** कहते हैं। इस कारक में **प्रथमा विभक्ति** आती है। जैसे, (१) **हे राम!** यहाँ आओ। (२) **पंडितजी!** आप यहाँ बैठिये।

ऊपर के वाक्यों में **राम** का प्रयोग **पुकारने के लिये** और **पंडितजी** का प्रयोग **सचेत करने के लिये** हुआ है। इसलिये **राम** और **पंडितजी सम्बोधन कारक** में हैं।

नोट–जिस वाक्य में सम्बोधन कारक होता है उस **वाक्य का कर्त्ता मध्यम पुरुष** होता है जो कहीं **प्रकट** और कहीं **गुप्त** रहता है।

नं० (१) में **तुम कर्त्ता गुप्त** है और नं० (२) में **आप कर्त्ता प्रकट** है।

सम्बोधन कारक के चिह्न **हे, हो, अरे, हरे, ओ, ऐ** हैं जिनका प्रयोग कहीं होता है और कहीं नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे, हरे, अरे का प्रयोग **समीप के लोगों के लिये** होता है, और **ओ, हो** का प्रयोग **दूर के लोगों के लिये**। **हरे, अरे** का प्रयोग प्रायः **छोटे लोगों के लिये** होता है।

हिन्दी में भी केवल सम्बोधन कारक में संस्कृत शब्दों के रूप कहीं २ लिखे जाते हैं। जैसे, हे भगवन्, हे दासि, हे राजन्, हे प्रभो इत्यादि।

कारकों का सम्बन्ध।

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण **कारकों का सम्बन्ध क्रिया के साथ** होता है।

सम्बन्ध कारक का सम्बन्ध **सम्बन्धी** के साथ होता है **जो संज्ञा वा अव्यय शब्द** होता है।

सम्बोधन कारक का **सम्बन्ध** वाक्य के किसी शब्द के साथ नहीं होता। **अकर्मक क्रियायें** प्रायः अपने पूरक **कर्त्ता** के साथ **पूरा अर्थ** प्रकट करदेती हैं। इसी प्रकार से **सकर्मक क्रियायें** भी प्रायः अपने कर्त्ता और कर्म के साथ **पूरा अर्थ** प्रकट करदेती हैं। जैसे:—

अकर्मक।	सकर्मक।
(१) राम आया था।	(१) राम आम खाता है।
(२) मोहन दौड़ता है।	(२) लल्लू मोहन को देखता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु कुछ अकर्मक और सकर्मक क्रियायें ऐसी हैं जो कर्त्ता वा कर्म के रहते भी **पूरा अर्थ** नहीं प्रकट करतीं। इस दशा में ऐसी क्रियाओं के साथ **कुछ शब्द जोड़े** जाते हैं जिनको **पूरक** कहते हैं और इस प्रकार की **अकर्मक** वा **सकर्मक** क्रियाओं को **अपूर्ण अकर्मक** वा **सकर्मक क्रिया** कहते हैं। जैसे:—

अपूर्ण अकर्मक क्रियायें और उनके पूरक।

(१) राम **विद्वान्** जान पड़ता है।
(२) कल्लू **चोर** है।
(३) सोहन **लड़का** मालूम होता है।
(४) लल्लू **मूर्ख** था।

अपूर्ण अकर्मक क्रियाओं के **पूरक** यदि **संज्ञा** हों तो वे **कर्त्ता कारक** में होते हैं क्योंकि वे **कर्त्ता ही** से **सम्बन्ध** रखते हैं।

अपूर्ण सकर्मक क्रियायें और उनके पूरक।

(१) मोहन उस आदमी को **चोर** बनाता है।
(२) राम ने कल्लू को **नौकर** रक्खा।
(३) सोहन ने रोगी को **चंगा** करदिया।
(४) राजा ने सोहन को **मंत्री** बनाया।

अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं के **पूरक** यदि **संज्ञा** हों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो वे **कर्मकारक** में होते हैं क्योंकि उनका **सम्बन्ध कर्म के साथ** होता है ।

क्रियार्थक संज्ञा ।

क्रिया के सामान्यरूप को **क्रियार्थक संज्ञा** कहते हैं । जैसे, खेलना, पढ़ना, लिखना, सोना, आना, जाना इत्यादि ।

क्रियार्थक संज्ञा की गणना **भाववाचक संज्ञा** में होसकती है । इन संज्ञाओं का भी प्रयोग सम्बोधन कारक को छोड़ शेष **सात कारकों** में होता है । जैसे :–

(१) कर्त्ता–	राम का **पढ़ना** अच्छा है ।
(२) कर्म–	मैं राम का **पढ़ना** सुनता हूँ ।
(३) करण–	राम **पढ़ने से** विद्वान् होगया ।
(४) सम्प्रदान–	राम **पढ़ने के लिये** आया है ।
(५) अपादान–	राम **पढ़ने से** भागता है ।
(६) सम्बन्ध–	राम के **पढ़ने का** ढंग अच्छा है ।
(७) अधिकरण–	राम **पढ़ने में** अच्छा है ।

सर्वनाम के कारक ।

सर्वनाम का भी प्रयोग **सम्बोधन कारक को छोड़ शेष सात कारकों** में होता है । जैसे:–

(१) कर्त्ता–	**मैं** घर से आता हूँ ।
(२) कर्म–	लल्लू **मुझे** देखता है ।
(३) करण–	राम ने **मुझ से** पत्र लिखवाया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) सम्प्रदान— राम **मेरे लिये** पुस्तक लाया।
(५) अपादान— कल्लू **मुझसे** दूर रहता है।
(६) सम्बन्ध— **मेरी** छड़ी लाओ।
(७) अधिकरण— मोहन **मुझपर** भरोसा रखता है

पद।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण इत्यादि शब्दों का प्रयोग जब **वाक्य** में होता है तो वे **पद** कहेजाते हैं। **विभक्तियुक्त** शब्द **एकपद** कहे जाते हैं।

पदों का पदान्वय।

पदों के विषय में व्याकरणसम्बन्धी बातों के बताने को **पद-व्याख्या, पद-परिचय, पदान्वय** इत्यादि कहते हैं।

संज्ञा का पदान्वय।

(१) राम के पिता मोहन ने उस दिन कला-वती से अपनी पुस्तकें लेलीं।

राम के—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, सम्बन्ध कारक, पिता का सम्बन्ध।

पिता—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, लेलीं क्रिया का कर्त्ता।

मोहन—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, पिता का समानाधिकरण कारक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिन—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, लेलीं क्रिया का क्रियाविशेषण कर्म ।

कलावती से—व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अपादान कारक, लेलीं क्रिया का अपादान ।

पुस्तकें—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्म कारक, लेलीं क्रिया का कर्म ।

(२) हे लड़के ! तू घर पर गुरुजी से क्यों नहीं रामायण पढ़ता ?

हे लड़के !—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, सम्बोधन कारक ।

घर पर—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, पढ़ता क्रिया का अधिकरण ।

गुरुजी से—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अपादान कारक, पढ़ता क्रिया का अपादान ।

रामायण—व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पढ़ता क्रिया का कर्म ।

अध्याय ८ ।

सर्वनाम ।

जिन शब्दों का प्रयोग **संज्ञा के बदले** होता है उन्हें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वनाम कहते हैं। जैसे, **राम** ने **मोहन** से कहा कि **मैं अपनी** पुस्तक **तुमको** दूँगा।

ऊपर के वाक्य में **मैं** और **अपनी** का प्रयोग **राम संज्ञा के बदले** और **तुम** का प्रयोग **मोहन संज्ञा के बदले** हुआ है। इसलिये **मैं, अपनी, तुम सर्वनाम** हैं।

पुरुष।

जो बात कहता है वा **जिससे** बात कही जाती है वा **जिसके विषय** में बात कही जाती है उसे **पुरुष** कहते हैं। जैसे, **मैं तुमको राम के पास** भेजता हूँ।

ऊपर के वाक्य में **मैं, तुम** और **राम पुरुष** हैं।

पुरुष के भेद।

पुरुष तीन हैं—उत्तम, मध्यम और प्रथम वा अन्य।

(१) जिस शब्द का प्रयोग **बात कहनेवाले के लिये** हो उसे **उत्तम पुरुष** कहते हैं। जैसे, **मैं, हम**।

(२) जिस शब्द का प्रयोग उस पुरुष के लिये हो **जिससे बात कही जाती है** उसे **मध्यम पुरुष** कहते हैं। जैसे, **तू, तुम**।

(३) जिस शब्द का प्रयोग **उस पुरुष के लिये** हो **जिसके विषय में** बात कही जाती है उसे **प्रथम वा अन्य पुरुष** कहते हैं। जैसे, **वह, वे**।

नोट—सम्बोधन कारक की संज्ञायें **मध्यम पुरुष** में होती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं और शेष **सात कारकों** की **संज्ञायें** सदा **अन्य पुरुष** में होती हैं क्योंकि **उन्हींके विषय में** बात कही जाती है।

सर्वनाम के भेद।

सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं:—

(१) **पुरुषवाचक**, (२) **निश्चयवाचक**,
(३) **अनिश्चयवाचक**, (४) **सम्बन्धवाचक**,
(५) **प्रश्नवाचक**, (६) **निजवाचक**।

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम।

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग **तीनों पुरुषों में** होता है उन्हें **पुरुषवाचक** सर्वनाम कहते हैं। जैसे, **मैं तुमको उसके** पास भेजता हूँ।

ऊपर के वाक्य में **मैं** का प्रयोग **उत्तम पुरुष** के लिये, **तुम** का प्रयोग **मध्यम पुरुष** के लिये और **उस** का प्रयोग **अन्य पुरुष** के लिये हुआ है। इसलिये **मैं, तुम, वह पुरुषवाचक सर्वनाम** हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम छः शब्द हैं :—

	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम पुरुष	मैं।	हम।
मध्यम पुरुष	तू।	तुम।
अन्य पुरुष	वह।	वे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) **मैं** सदा **एकवचन** में बोला जाता है। जैसे, राम ने कहा कि **मैं** आऊँगा।

(२) **हम** वास्तव में **बहुवचन** है परन्तु आज कल इसका प्रयोग **एकवचन के लिये भी** होता है। जैसे, राम ने कहा कि **हम** आवेंगे। **बहुवचन में** इसके आगे **लोग** का प्रयोग करते हैं। जैसे, लड़कों ने कहा कि **हम लोग** आवेंगे।

(३) **तू** का प्रयोग सदा **एकवचन** में होता है। जैसे, **तू** जायगा।

तू का प्रयोग आज कल **परमेश्वर** वा **अपने से छोटे के लिये** होता है। जैसे, (१) हे परमेश्वर ! **तू** मुझे पाप से बचा। (२) ऐ लड़के ! **तू** यहाँ क्यों आया ?

प्राचीन समय में **तू** का प्रयोग **राजाओं के लिये भी** होता था। जैसे, हे राजा ! **तू** मुझे क्यों दण्ड देता है ?

(४) **तुम** वास्तव में **बहुवचन** है परन्तु आज कल इसका प्रयोग **साधारण** और **अपने से छोटे लोगों के लिये एकवचन** में होता है। जैसे, मोहन ! **तुम** कहाँ जा रहे हो ?

आदरयोग्य पुरुष के लिये **तुम** के बदले **आप** और **तुम लोग** के बदले **आप लोग** का प्रयोग होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे, (१) पंडितजी ! **आप** कहाँ से आ रहे हैं ?

(२) **आप लोग** कहाँ जा रहे हैं ?

(५) **वह** का प्रयोग एकवचन में होता है । जैसे, **वह** कहाँ जाता है ?

(६) **वे** वह का **बहुवचन** है परन्तु आज कल इसके आगे **लोग** का भी प्रयोग होता है। जैसे, **वे लोग** आरहे हैं।

विभक्तियुक्त पुरुषवाचक सर्वनाम शब्दों के रूप ।

(१) मैं और तू के साथ जब **को, से, में, पर, तक** विभक्तियों का प्रयोग होता है तो **मैं** का **मुझ, तू** का **तुझ** होजाता है । जैसे:—

मैं—मुझको, मुझसे, मुझमें, मुझपर, मुझतक ।

तू—तुझको, तुझसे, तुझमें, तुझपर, तुझतक ।

ने विभक्ति के साथ इनके रूप नहीं पलटते। जैसे, मैंने, तूने ।

विभक्तियुक्त होने पर **हम** और **तुम** के **रूप नहीं पलटते** । जैसे:—

हमने, हमको, हममें इत्यादि ।

तुमने, तुमको, तुममें इत्यादि ।

(२) सम्बन्धकारक में **मैं** का **मेरा, मेरी, मेरे, तू** का **तेरा, तेरी, तेरे, हम** का **हमारा, हमारी, हमारे, तुम** का **तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे** होजाता है ।

नोट—रा, री, रे का प्रयोग का, की, के के ढंग पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है। जैसे, **मेरा** घोड़ा, **मेरी** घोड़ी, **मेरे** घोड़े; **तेरे** घोड़े को, **तेरी** घोड़ी को, **तेरे** घोड़ों को।

(३) विभक्तियुक्त होने पर **वह** का **उस** होजाता है। जैसे, उसने, उसको, उससे, उसमें, उसपर इत्यादि।

(४) **वे** के साथ जब **ने** विभक्ति का प्रयोग होता है तो **वे** का **उन्हों** होजाता है। जैसे, उन्होंने। शेष विभक्तियों के साथ **वे** का **उन** होजाता है। जैसे, उनका, उनसे, उनमें इत्यादि।

(५) कर्म और सम्प्रदान कारक में मुझको, हमको, तुझको, तुमको, उसको, उनको के बदले मुझे, हमें, तुझे, तुम्हें, उसे, उन्हें का प्रयोग भी होता है। जैसे,

(१) **उसको** पढ़ाओ या **उसे** पढ़ाओ।

(२) **मुझको** रुपया मिला या **मुझे** रुपया मिला।

निश्चय जनाने के लिये **मुझ** का **मुझी**, **तुझ** का **तुझी**, **हम** का **हम्हीं**, **वह** का **वही**, **तुम** का **तुम्हीं**, **उस** का **उसी** होजाता है। जैसे, (१) यह किताब **मुझी** को दीजिये। (२) **उसी** को हिन्दी पढ़ाइये।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों को **शुद्ध** करो और उनके **अशुद्ध होने का कारण** भी बताओ:—

(१) वे ने मैं को बुलाया था। (२) तुम की पुस्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह ही ने ली थी । (३) वे को मुझी ने देखा था । (४) यह माला वह ही की है । (५) वह ने वैसे क्या कहा था । (६) मेरा टोपी तुम्हारे भाई ने ली है । (७) हमारी देश के राजा बड़े न्यायी हैं । (८) मेरे ओर तुम क्यों देखते हो ? (९) तुम्हारा सब कुत्ते अच्छे हैं । (१०) मेरे माता के हाथ में घाव है ।

(२) निश्चयवाचक सर्वनाम ।

जिस सर्वनाम से **किसी का निश्चय** हो उसे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं । जैसे, (१) **यह** कहाँ से आता है ? (२) **वह** कहाँ जाता है ?

ऊपर के वाक्यों में **यह** और **वह** का प्रयोग किसी ऐसे पुरुष के लिये हुआ है जिसको **पूछनेवाला** और **उत्तर देनेवाला** जानते हैं । इसलिये **यह** और **वह निश्चयवाचक** सर्वनाम हैं ।

निश्चयवाचक सर्वनाम चार शब्द हैं—**वह, वे, यह, ये**। **वह** और **यह** का प्रयोग एकवचन में होता है, और **वे** और **ये** का बहुवचन में ।

नोट—वह और **वे पुरुषवाचक** सर्वनाम भी हैं ।

यह ।

(१) **यह** का बहुवचन **ये** है । जैसे, **यह** अच्छा है, **ये** अच्छे हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) विभक्तियुक्त होने पर **यह** का **इस** होजाता है। जैसे, **इसने, इसको, इसमें** इत्यादि।

(३) **ये** के साथ **ने** विभक्ति आने से **इन्हों** और शेष विभक्तियों के आने से **इन** होजाता है। जैसेः—**इन्होंने, इनका, इनसे, इनपर** इत्यादि।

(४) कर्म और सम्प्रदानकारक में **इसको** के बदले **इसे, इनको** के बदले **इन्हें** का प्रयोग भी होता है। जैसे, (१) **इसको** पढ़ाओ या **इसे** पढ़ाओ। (२) **इनको** पैसा मिला या **इन्हें** पैसा मिला।

(५) निश्चय जनाने के लिये **यह** का **यही, ये** का **येही, इस** का **इसी, इन** का **इन्हीं** होजाता है। जैसे, **येही** आये थे। **इसी** ने पढ़ा था इत्यादि।

वह और यह का भेद।

वह से दूर की वस्तु समझी जाती है और **यह** से निकट की। जैसे, (१) **वह** कहाँ रहता है? **वे** कहाँ रहते हैं? (२) **यह** कहाँ रहता है? **ये** कहाँ रहते हैं?

(३) अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

जिस सर्वनाम से **किसी का निश्चय** न हो उसे **अनिश्चय-वाचक** कहते हैं। जैसे, **कोई** यहाँ आया होगा। ऊपर के वाक्य में **कोई** शब्द का प्रयोग **अनिश्चित**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुष के लिये हुआ है। इसलिये यह शब्द **अनिश्चय-वाचक सर्वनाम** है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम **दो** शब्द हैं—**कोई, कुछ**।

कोई।

कोई का प्रयोग प्रायः **एकवचन** में होता है। कोई का प्रयोग **दो बार** करने से **बहुवचन** का अर्थ निकलता है। जैसे, **कोई कोई** कहते हैं कि पृथ्वी सूर्य्य से बनी है। **विभक्तियुक्त** होने पर **कोई** का **किसी** होजाता है। जैसे, **किसीने, किसीको, किसीका** इत्यादि।

निश्चय जनाने के लिये **कोई** के साथ **ही** का प्रयोग नहीं होता परन्तु **न कोई** का। जैसे, **कोई न कोई** यहाँ आया होगा।

कुछ।

कुछ का बहुवचन नहीं होता और इसका **प्रयोग अधिकतर कर्त्ता** और **कर्मकारक** की अवस्था में होता है जैसे:—

कर्त्ता—कुछ तार सा बोल रहा है।

कर्म—मैंने कुछ खा लिया है।

कोई और कुछ का भेद।

कोई का प्रयोग **मनुष्य** के लिये होता है और **कुछ** का प्रयोग **जानवर** तथा **निर्जीव वस्तु** के लिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

(१) **कोई** बोल रहा है। (पुरुष, लड़का इ०)
(२) **कुछ** बोल रहा हैं। (साँप, कौवा इ०)
(३) **कुछ** रक्खा हुआ है। (लोटा, पैसा इ०)

(४) सम्बन्धवाचक सर्वनाम ।

जिस **सर्वनाम** से **सम्बन्ध** जाना जाता है उसे **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे, **जो** सोवेगा **सो** खोवेगा।

ऊपर के वाक्य में **जो** का सम्बन्ध **सो** के साथ है, और **सो** का सम्बन्ध **जो** के साथ। इसलिये **जो** और **सो सम्बन्धवाचक सर्वनाम** हैं। सम्बन्धवाचक सर्वनाम दो शब्द हैं—**जो** और **सो**। इनका प्रयोग **दोनों वचनों** में होता है। जैसे:—

एकवचन—**जो** सोवेगा **सो** खोवेगा।

बहुवचन—**जो** पढ़ेंगे **सो** विद्वान् होंगे।

परन्तु आज कल **बहुवचन** में इन शब्दों के साथ **लोग** का प्रयोग होता है। जैसे, **जो लोग, सो लोग**।

(१) विभक्तियुक्त होने पर एकवचन में **जो** का **जिस** और **सो** का **तिस** होजाता है। जैसे, **जिस**ने, **जिस**को, **जिस**में, **तिस**में, **तिस**को।

(२) बहुवचन में **ने** विभक्ति के साथ **जो** का **जिन्हों** और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो का **तिन्हों** होजाता है। जैसे, **जिन्होंने**, **तिन्होंने**। शेष विभक्तियों के साथ **जो** का **जिन** और **सो** का **तिन** होजाता है। जैसे, **जिन**को, **जिन**से, **तिन**पर, **तिन**में इत्यादि।

(३) **कर्म** और **सम्प्रदान** कारक में **जिसको** के बदले **जिसे**, **जिनको** के बदले **जिन्हें**, **तिसको** के बदले **तिसे**, **तिनको** के बदले **तिन्हें** का प्रयोग भी होता है। जैसे, **जिसे** चाहो **तिसे** बुला लो।

नोट—आज कल **सो** के बदले **वह** और **तिस** के बदले **उस**, **तिन** के बदले **उन** का प्रयोग होता है। जैसे, **जिस**को चाहो **उस**को बुलाओ।

(४) निश्चय जनाने के लिये **जो** का **जोही**, **सो** का **सोही**, **जिस** का **जिसी**, **तिस** का **तिसी**, **जिन** का **जिन्हीं**, **तिन** का **तिन्हीं** होजाता है। जैसे, **जोही** जायगा **सोही** पावेगा।

(५) **अनिश्चय** जनाने के लिये **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** के साथ **कोई** और **कुछ** का प्रयोग होता है। जैसे:—(१) **जो कोई** यहाँ सोवेगा सो बीमार होजायगा। (२) **जो कुछ** चाहो ले लो।

नोट—**जो कोई** का प्रयोग **मनुष्य** के लिये और **जो**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ का प्रयोग **निर्जीव पदार्थों** के लिये होता है। इनका प्रयोग **बहुवचन** में नहीं होता। **विभक्तियुक्त** होने पर **जो कोई** का **जिस किसी** होजाता है। जैसे, **जिस किसी** को चाहो बुला लो।

नोट—जो का अर्थ जब **यदि** होजाता है तो यह **अव्यय** होता है। जैसे, **जो (यदि)** तुम कहो तो मैं आऊँ।

(५) प्रश्नवाचक सर्वनाम।

जिस सर्वनाम से **प्रश्न** जाना जाता है उसे **प्रश्न-वाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे, (१) **कौन** आरहा है ? (२) यह **क्या** है ?

ऊपर के वाक्यों में **कौन** और **क्या** शब्दों से प्रश्न जाना जाता है। इसलिये ये शब्द **प्रश्नवाचक सर्वनाम** हैं। प्रश्नवाचक सर्वनाम **दो शब्द** हैं—**कौन, क्या**।

कौन।

कौन का रूप दोनों वचनों में एक ही होता है। जैसे:—
(१) **कौन** आरहा है ? (२) **कौन** आ रहे हैं ?

परन्तु आज कल बहुवचन में **कौन लोग, कौन कौन** का प्रयोग होता है। जैसे, (१) **कौन लोग** आवेंगे ? (२) **कौन कौन** आवेंगे ?

नोट—कौन कौन से **पृथक्ता** का बोध होता है।
(१) **विभक्तियुक्त** होने पर **एकवचन** में **कौन** का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किस होजाता है। जैसे, **किसने**, **किसको**, **किस** पर, **किससे** इत्यादि।

बहुवचन में **ने** विभक्ति के साथ **किन्हों** और **शेष विभक्तियों** के साथ **किन** होजाता है। जैसे, **किन्होंने**, **किनको**, **किनसे**, **किनपर** इत्यादि।

(२) **कर्म** और **सम्प्रदान** कारक में **किसको** के बदले **किसे**, और **किनको** के बदले **किन्हें** का प्रयोग भी होता है। जैसे, (१) मैं **किसको** वा **किसे** बुलाऊँ ? (२) मैं **किनको** वा **किन्हें** बुलाऊँ ?

क्या।

(३) कर्त्ता और कर्म कारक की अवस्था में **क्या** के साथ विभक्तियों का प्रयोग नहीं होता। शेष कारकों में विभक्तियुक्त होने पर इसका रूप **काहे** होजाता है। जैसे, **काहेको**, **काहेसे**, **काहेमें**, **काहेपर** इत्यादि।

परन्तु आज कल **काहेमें**, **काहेपर** इत्यादि के बदले **किसमें**, **किसपर** इत्यादि का भी प्रयोग होता है। जैसे:— (१) इसे मैं **किसमें** रक्खूँ ? (२) तुम **किसमें** दूध लाओगे ?

कौन और क्या का भेद।

कौन का प्रयोग **मनुष्य** के लिये और **क्या** का प्रयोग **जानवर** और **निर्जीव वस्तुओं** के लिये होता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। जैसे, **कौन** बोल रहा है ? (मोहन)। **क्या** बोल रहा है ? (साँप)। **क्या** खा रहे हो ? (आम)।

नोट—जब **क्या** का अर्थ **कौन वस्तु** होता है तब यह **सर्वनाम** होता है और जब यह केवल **प्रश्नवाचक** होता है तो **अव्यय** होता है। जैसे:—

सर्वनाम।	**अव्यय।**
(१) तुम **क्या** खाते हो ?	(१) **क्या** तुम जाते हो ?
(२) वह **क्या** पढ़ रहा है ?	(२) **क्या** तुम सोओगे ?

(६) निजवाचक सर्वनाम।

जिस सर्वनाम का प्रयोग **वाक्य के कर्त्ता के लिये** होता है उसे **निजवाचक** सर्वनाम कहते हैं। जैसे:— (१) मोहन **अपने** घर चला गया। (२) मैं **अपना** छाता लाया हूँ।

ऊपर के वाक्यों में **अपने** का प्रयोग **मोहन** कर्त्ता के लिये और **अपना** का प्रयोग **मैं** कर्त्ता के लिये हुआ है। इसलिये **अपने, अपना निजवाचक सर्वनाम** हैं।

निजवाचक सर्वनाम **आप** शब्द है। इसका रूप **दोनों वचनों में एक ही** होता है। जैसे, (१) लड़का **आप** आया। (२) लड़के **आप** आये। इस शब्द का प्रयोग कर्त्ता कारक में **अकेला** नहीं होता।

ऊपर के वाक्यों में **लड़का** और **आप** दोनों शब्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी क्रिया के कर्त्ता कहेजावेंगे **जिस क्रिया** के **कर्त्ता** **लड़का** और **लड़के** हैं।

आपके साथ **ने** विभक्ति का प्रयोग नहीं होता। शेष विभक्तियों के साथ इसका रूप **अपने** होजाता है। जैसे, **अपने** को, **अपने** से, **अपने** में, **अपने** घर, **अपने** तक।

नोट–**अपने में** के बदले **आपस में** का प्रयोग भी होता है। जैसे, वे लोग **आपस में** लड़ते हैं।

सम्बन्ध कारक में इसका रूप **अपना, अपनी, अपने** होता है। जैसे, **अपना** घोड़ा, **अपनी** घोड़ी, **अपने** घोड़े। **ना, नी, ने** का प्रयोग **का, की, के** के ढंग पर होता है।

निश्चय जनाने के लिये **ही** का प्रयोग होता है। जैसे:–
(१) वह **आपही** आया। (२) मैं **अपनाही** घोड़ा लूँगा।

नोट–जब **आप** का प्रयोग आदर के लिये **तुम** के बदले होता है तो वह **आदरप्रदर्शक** सर्वनाम होता है।

जब **आप आदरप्रदर्शक** होता है तो यह सदा **मध्यम पुरुष** में होता है। जैसे, **आप** कब आये? **आप** कृपा करके बैठिये।

जब **आप निजवाचक सर्वनाम** होता है तो इसका प्रयोग **तीनों पुरुषों** में होता है। जैसे, (१) मैं **आप**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दौड़ा (उत्तम पुरुष)। (२) तुम **आप** दौड़े (मध्यम पुरुष) । (३) वह **आप** दौड़ा (अन्य पुरुष) ।

आदरप्रदर्शक होने की अवस्था में **विभक्तियुक्त** होने पर इसके **रूप नहीं** पलटते । जैसे, **आपने, आपको, आपसे** इत्यादि ।

निजवाचक की अवस्था में इसके **रूप पलटते** हैं । जैसे, **अपने** से, **अपने** को, **अपना, अपनी** इत्यादि ।

नोट–(१) जिन सर्वनाम शब्दों के रूप **विभक्तियुक्त** होने पर **पलट** जाते हैं उनकी **विभक्तियाँ** प्राय: शब्दों में **मिलाकर** लिखी जाती हैं । जैसे, **उसने, किसको, उनकी, मुझसे** इत्यादि ।

पृथक्ता का अर्थ जनाने के लिये **अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक** और **निजवाचक** सर्वनामों का प्रयोग **एकही** स्थान पर **दो बार** होता है । जैसे, (१) **कोई कोई** कहते हैं । (२) **जो जो** आवेंगे । (३) **कौन कौन** आते हैं ? (४) तुम लोग **अपने अपने** घर जाओ ।

अभ्यास ।

निम्नलिखित वाक्यों को **शुद्ध** करो और उनके **अशुद्ध होने का कारण** भी बताओ :–

(१) यही ने मेरी पुस्तक ली है। (२) ये आम कोई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को न देना।(३) कोई से यह प्रश्न पूछ लो।(४) जौने तुमको यह पुस्तक दी है वह कहाँ है ? (५) यह छड़ी कौनकी है ? (६) तुम आज भात क्या से खाओगे ? (७) कोई ने वह को यह पुस्तक दी होगी । (८) तुम अपना भाई को पाठशाला क्यों नहीं भेजते ? (९) वे लोग अपनी अपनी घर पर चले गये ।(१०) यह से यह प्रश्न नहीं होगा।

सर्वनाम के पुरुष ।

निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक सर्वनाम सदा **अन्यपुरुष** में होते हैं । परन्तु **पुरुषवाचक** और **निजवाचक सर्वनामों** का **प्रयोग** तीनों **पुरुषों में** होता है । जैसे, उ० पु० **मैं अपनी** पुस्तक पढ़ता हूँ । म० पु० **तुम अपनी** पुस्तक पढ़ते हो । अ० पु० **वह अपनी** पुस्तक पढ़ता है ।

सर्वनाम के लिंग ।

सब प्रकार के **सर्वनाम शब्दों** का प्रयोग **दोनों लिंगों** में होता है । कहीं तो केवल **वाक्य की क्रिया** अथवा **विशेषण** के प्रयोग से जाना जाता है कि सर्वनाम **पुल्लिंग** है वा **स्त्रीलिंग** और कहीं उसकी **संज्ञा** से । जैसे :—

मैं पढ़ता हूँ (पुं०)।

मैं पढ़ती हूँ (स्त्री०)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह अच्छा है (पुं०)।
यह अच्छी है (स्त्री०)।
कौन आ रहा है ? (पुं०)।
कौन आ रही है ? (स्त्री०)।
लड़का **अपनी** पुस्तक पढ़ता है (पुं०)।
लड़की **अपनी** पुस्तक पढ़ती है (स्त्री०)।

नोट—जिस सर्वनाम का लिंग क्रिया इत्यादि से ज्ञात न हो उसे **पुल्लिग** वा **स्त्रीलिंग** कहना चाहिये।

निम्नलिखित वाक्यों के **सर्वनाम शब्दों** का **पदान्वय** किया गया है:—

(१) जिसे तुमने बुलाया है उसे अपने घर भेज दो।

जिसे—सम्बन्धवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिग वा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, बुलाया है क्रिया का कर्म।

तुमने—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुल्लिग वा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक, बुलाया है क्रिया का कर्त्ता।

उसे—निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिग वा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, भेज दो क्रिया का कर्म।

अपने—निजवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुल्लिग वा स्त्रीलिंग, एकवचन, सम्बन्धकारक, घर संज्ञा का सम्बन्ध।

(२) आप लोग किसे देखना चाहती हैं ?

आप लोग—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, स्त्रीलिंग,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुवचन, कर्त्ताकारक, "**देखना चाहती हैं**" क्रिया का कर्त्ता।

किसे—प्रश्नवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग वा स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, "**देखना चाहती हैं**" क्रिया का कर्म।

सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान।

सर्वनाम शब्द जब **संज्ञा के पहिले** आते हैं तब उनका प्रयोग **विशेषण** के समान होता है। और इस लिये वे किसी कारक की अवस्था में नहीं होते। जैसे:—(१) **वह** आदमी आया था। (२) **यह** पुस्तक अच्छी है। (३) **कोई** आदमी आ रहा है। (४) **कुछ** रोटी लाओ। (५) **जो** किताब तुम पढ़ते हो वह अच्छी नहीं है। (६) **कौन** पुस्तक तुम पसन्द करते हो?

ऊपर के उदाहरणों के देखने से ज्ञात होगा कि केवल **निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक सर्वनाम शब्दों** का प्रयोग **विशेषण** के समान होता है।

विशेष्य के **विभक्तियुक्त** होने पर इस प्रकार के **विशेषणों** के रूप सर्वनाम की अवस्था के रूपों के समान **पलट** जाते हैं। जैसे:—(१) **उस** आदमी को बुलाओ। (२) **इस** पुस्तक को पढ़ो। (३) **किसी** जीव को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न सताओ। (४) जिस पुस्तक में यह लिखा है वह कहाँ है ? (५) इसे मैं किस बर्तन में रक्खूँ ?

क्रियाविशेषण कर्म के साथ भी इनके रूप पलट जाते हैं। जैसेः—(१) तुम उस दिन कहाँ थे ? (२) तुम इस जगह क्या करते हो ?

अभ्यास ।

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो और उनके अशुद्ध होने का कारण भी बताओ :—

(१) तुम कोई आदमी को यहाँ बुला सकते हो ? (२) मैंने यही आदमी को वहाँ देखा था। (३) यह लड़के ने कोई कुत्ते को नहीं मारा। (४) उस आदमी क्यों घर जा रहा है ? (५) इस लोगों ने उसीको देखा था। (६) यहाँ किसी आदमी कल आया था। (७) वे लोगों ने कौन आदमियों को बुलाया है ? (८) जो पुस्तक में यह लिखा हुआ है वही पुस्तक को यहाँ लाओ। (९) यह बात को कोई नहीं जानता। (१०) कौन लोगों ने तुमको मारा है ?

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान होता है उनका पदान्वय निम्नलिखित ढंग पर होता है। इनके लिंग वचन इनके विशेष्य के अनुसार होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) तुम उस दिन किस गाँव में ठहरे थे ?

उस—निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एक-वचन, दिन संज्ञा का विशेषण।

(२) वे इन दिनों किसी मनुष्य से नहीं बात करते।

इन—निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, बहु-वचन, दिनों संज्ञा का विशेषण।

किसी—अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, मनुष्यसंज्ञा का विशेषण।

अध्याय ६।

विशेषण।

जो शब्द **संज्ञा की कुछ विशेषता** प्रकट करते हैं उन्हें **विशेषण** कहते हैं। जैसे, (१) **अच्छे** लड़के को बुलाओ। (२) **बुरे** लोगों के साथ मत बैठो।

विशेषण का प्रयोग **संज्ञा के पहिले** भी होता है और उसके **परे भी**। जैसे, (१) यह **अच्छा** घोड़ा है। (२) यह घोड़ा **अच्छा** है।

विशेषण **सर्वनाम की भी विशेषता** प्रकट करता है। इस दशा में इसका **प्रयोग** सदा **सर्वनाम के आगे** होता है। जैसे, (१) वह **बुरा** है। (२)मैं **छोटा** हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषण जिस **संज्ञा** वा **सर्वनाम** की **विशेषता** प्रकट करता है उसे **विशेष्य** कहते हैं। जैसे, (१) **अच्छा** **आम** लाओ। (२) **वह** पागल है।

नं० (१) में **आम** अच्छा का **विशेष्य** है, और नं० (२) में **वह** पागल का **विशेष्य** है।

विशेषण के भेद।

विशेषण छः प्रकार के होते हैं—(१) गुणवाचक, (२) परिमाणवाचक, (३) संख्यावाचक, (४) संकेत-वाचक, (५) व्यक्तिवाचक, (६) विभागबोधक।

(१) गुणवाचक विशेषण।

जो विशेषण **संज्ञा** वा **सर्वनाम** के **गुण प्रकट** करते हैं उन्हें **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, (१) वह **अच्छा** आदमी है। (२) वह **नटखट** लड़का है। (३) मैं **छोटा** हूँ। (४) वे लोग **बुरे** हैं।

निम्नलिखित शब्द **गुणवाचक विशेषण** हैं:—

अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा, नीच, काला, लाल, कठिन, सहज, चञ्चल, बुड्ढा, नया, पुराना, लम्बा, चौड़ा इत्यादि।

नोट—ऊपर के विशेषण शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कराओ।

(२) परिमाणवाचक विशेषण।

जो विशेषण **संज्ञा** का **परिमाण** जनाते हैं उन्हें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे, (१) **थोड़ा** पानी लाओ। (२) उसके पास **बहुत** धन है।

निम्नलिखित शब्द **परिमाणवाचक विशेषण** हैं:— थोड़ा, बहुत, कुछ, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, तनिक इत्यादि।

नोट—ऊपर के विशेषण शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कराओ।

(३) संख्यावाचक विशेषण।

जो विशेषण **संज्ञा की संख्या** जनाते हैं उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, (१) यहाँ **चार** आदमी आये। (२) **दो** आम लाओ।

निम्नलिखित शब्द **संख्यावाचक विशेषण** हैं:— एक, दो, तीन, चार, पाँच, पहिला, दूसरा, दोनो, तीनो इत्यादि।

संख्यावाचक विशेषण के भेद।

संख्यावाचक विशेषण **चार प्रकार** के होते हैं—(१) संख्याबोधक, (२) क्रमबोधक, (३) समुच्चयबोधक, (४) गुनाबोधक।

(१) जिस विशेषण में केवल संख्या का ज्ञान होता है उसे **संख्याबोधक विशेषण** कहते हैं। जैसे, **चार** आदमी, **बीस** घोड़े, **एक सौ** बैल इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) जिस विशेषण से **क्रम** का **बोध** होता है उसे **क्रमबोधक संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, **पहिला** लड़का, **चौथा** आदमी, **दसवाँ** घोड़ा इत्यादि।

(३) जिस विशेषण से **सम्पूर्णता** का **बोध** होता है उसे **समुच्चयबोधक संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, **दोनो** लड़के, **तीनो** आदमी, **सातो** घोड़े इत्यादि।

(४) जिस विशेषण से **गुना** का बोध होता है उसे **गुनाबोधक संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, **चौगुने** आदमी, **सतगुने** घोड़े, **तिगुने** फल।

नोट—गुनाबोधक संख्यावाचक विशेषण को **परिमाणवाचक विशेषण** भी कहते हैं।

चारो प्रकार के संख्यावाचक विशेषणों के थोड़े से शब्द नीचे लिखे जाते हैं:—

(१)	(२)	(३)	(४)
एक	पहिला	—	एकगुना
दो	दूसरा	दोनो	दूना, दुगुना
तीन	तीसरा	तीनो	तिगुना
चार	चौथा	चारो	चौगुना
दस	दसवाँ	दसो	दसगुना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) संकेतवाचक विशेषण ।

जिस विशेषण से **संज्ञा की ओर संकेत** जाना जाता है उसे **संकेतवाचक विशेषण** कहते हैं । जैसे, (१) **वह** आदमी क्या करता है ? (२) **इस** पुस्तक को पढ़ो ।

निम्नलिखित शब्द **संकेतवाचक विशेषण** हैं:– वह, वे, यह, ये, ऐसा, वैसा, कैसा, जैसा ।

नोट–जब इन शब्दों का प्रयोग **संज्ञा के बदले** होता है तब वे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहे जाते हैं ।

प्रश्नवाचक और **सम्बन्धवाचक** इत्यादि **सर्वनाम शब्दों** का **प्रयोग** जब **विशेषण** के समान होता है तब वे भी **संकेतवाचक विशेषण** कहे जाते हैं । जैसे, **कौन** आदमी, **क्या** चीज़, **जो** बालक इत्यादि ।

वह, यह, वे, ये का प्रयोग ।

(१) **वह** और **यह** का प्रयोग **विभक्तिरहित एकवचन विशेष्य** के साथ होता है । जैसे, **वह** घोड़ा, **यह** लड़का, **वह** पुस्तक, **यह** पुस्तक ।

(२) **वे** और **ये** का प्रयोग **विभक्तिरहित बहुवचन विशेष्य** के साथ होता है । जैसे, **वे** लड़के, **ये** लोग, **ये** घोड़े, **वे** लोग ।

(३) **विभक्तिसहित एकवचन विशेष्य** के साथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह का **उस** और **यह** का **इस** होजाता है। जैसे, **उस** आदमी ने, **इस** लड़के को इत्यादि।

(४) **विभक्तिसहित बहुवचन विशेष्य** के साथ **वे** का **उन** और **ये** का **इन** होजाता है। जैसे, **उन** लड़कों से, **उन** बैलों पर, **इन** लोगों ने इत्यादि।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों को **शुद्ध** करो और उनके **अशुद्ध होने के कारण** भी बताओ :—

(१) वह आदमी ने मुझसे प्रश्न किया था। (२) यह पुस्तक में अच्छी अच्छी बातें लिखी हैं। (३) उस लड़के कहा से आये हैं? (४) इस छाते किसके हैं? (५) ये लोगों ने मुझे बहुत दुख दिया। (६) वे लोगों पर मेरा भरोसा नहीं है।

(५) व्यक्तिवाचक विशेषण।

जो विशेषण **व्यक्तिवाचक संज्ञाओं** से बनते हैं उन्हें **व्यक्तिवाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे, **बनारसी** साड़ी, **लखनउआ** ख़रबूज़ा।

व्यक्तिवाचक विशेषण बनाने के नियम।

(१) **अकारान्त** शब्द को **ईकारान्त** करदेते हैं। जैसे, बनारस से बनारसी, कानपुर से कानपुरी, इलाहाबाद से इलाहाबादी, हिन्दुस्तान से हिन्दुस्तानी इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) **आकारान्त** शब्द के **आकार** को **इकार** करके **या** जोड़ देते हैं। जैसे, मथुरा से मथुरिया, पटना से पटनिया, कलकत्ता से कलकतिया इत्यादि।

(३) **ऊकारान्त** शब्द के **ऊकार** को **उकार** करके **आ** जोड़ देते हैं। जैसे, लखनऊ से लखनउआ, मऊ से मउआ इत्यादि।

(४) कहीं कहीं **व्यक्तिवाचक संज्ञाओं** के आगे **वाला** जोड़ देते हैं। जैसे, आगरा से आगरेवाला, दिल्ली से दिल्लीवाला इत्यादि।

नोट—व्यक्तिवाचक विशेषण अपनी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की ओर **संकेत** करते हैं इसलिये उनको **संकेतवाचक विशेषण** भी कहते हैं।

(६) विभागबोधक विशेषण।

जिस विशेषण से **पृथक्ता का बोध** होता है उसे **विभागबोधक विशेषण** कहते हैं। जैसे, मैंने इस कक्षा के **प्रत्येक** बालक को बुलाया है।

निम्नलिखित शब्द **विभागबोधक विशेषण** हैं:-

प्रति, प्रत्येक, हर, हरएक। विभागबोधक का **विशेष्य सदा एकवचन** होता है। जैसे, प्रत्येक बालक को बुलाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) जब **गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक विशेषण** शब्दों का प्रयोग **एक ही स्थान पर दो बार** होता है तो उनसे **पृथक्ता का बोध** होता है। जैसे, (१) **छोटे छोटे** फूल लाइयो। (२) **थोड़ा थोड़ा** पानी निकल रहा है। (३) **चार चार** आदमी एक साथ आओ।

(२) **न्यूनता** वा **अधिकता** का अर्थ जनाने के लिये कहीं कहीं विशेषण शब्दों के आगे **सा, सी, से** का प्रयोग होता है। जैसे, **छोटा सा** फूल। **बड़ा सा** घोड़ा। **थोड़ी सी** दाल।

नोट—सा, सी, से का प्रयोग **का, की, के** के समान होता है।

(३) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान होता है उनके साथ **सा, सी, से** के प्रयोग से **निश्चय का अर्थ** प्रकट होता है। जैसे, **कौनसा** घोड़ा, **कौनसे** लोग इत्यादि।

विशेष्यरहित विशेषण शब्द।

(१) **गुणवाचक** और **व्यक्तिवाचक विशेषण** शब्दों का प्रयोग जब **विना विशेष्य** के होता है तब ये **संज्ञा** होजाते हैं और इसलिये इनका प्रयोग **बहुवचन** के रूप में भी होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे :—

ए०	ब०
(१) उस बुड्ढे को बुलाओ।	(१) उन बुड्ढों को बुलाओ।
(२) उस पागल से क्या लोगे?	(२) उन पागलों से क्या लोगे?
(३) इस जापानी को स्थान दो।	(३) इन जापानियों को स्थान दो।

(२) **परिमाणवाचक, संख्यावाचक** और **संकेतवाचक विशेषण** शब्दों का **प्रयोग** जब **विना विशेष्य** के होता है तब वे **सर्वनाम** होते हैं। जैसे :—(१) **कुछ** खाओगे? (२) मैंने इसमें से **एक** को भी नहीं जाने दिया। (३) **इसे** मैं न जाने दूँगा। (४) राम ने इसमें से **प्रत्येक** को देखा है।

(३) **गुणवाचक** और **परिमाणवाचक विशेषण** जब **क्रिया की विशेषता** जनाते हैं तब वे **क्रियाविशेषण** होजाते हैं। जैसे, (१) मोहन ने **अच्छा** पढ़ा। (२) लल्लू **थोड़ा** चला।

विशेषण के रूप।

केवल आकारान्त विशेषण शब्दों के रूप निम्नलिखित दशाओं में **एकारान्त** और **ईकारान्त** होजाते हैं :—

(१) **विभक्तिरहित एकवचन पुल्लिंग विशेष्य** के साथ **विशेषण आकारान्त** ही बने रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे, (१) **थोड़ा** दूध लाओ। (२) यह बालक **अच्छा** है।

(२) **आदरयोग्य पुल्लिंग एकवचन विशेष्य** के साथ **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे, पंडित जी **अच्छे** हैं। मेरे **बड़े** भाई आये हैं।

(३) **विभक्तिसहित एकवचन पुल्लिंग विशेष्य** के साथ **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे, (१) **दूसरे** घोड़े को लाओ। (२) इस **छोटे** छाते को देखो।

(४) **विभक्तिरहित** वा **विभक्तिसहित पुल्लिंग बहुवचन** विशेष्य के साथ **एकारान्त** होजाते हैं। जैसे, (१) ये लोग **बुरे** हैं। (२) **अच्छे** आदमियों को बुलाओ।

(५) **सब प्रकार के स्त्रीलिङ्ग विशेष्य** शब्दों के साथ **ईकारान्त** होजाते हैं। जैसे, (१) **अच्छी** टोपी लाओ। (२) **अच्छी** टोपियाँ लाओ। (३) इस **बड़ी** घोड़ी को देखो। (४) इन **बड़ी** घोड़ियों को देखो।

(६) **अकारान्त, उकारान्त** इत्यादि विशेषण शब्दों के रूप नहीं पलटते। जैसे, **सुन्दर** लड़का, **सुन्दर** लड़के, **सुन्दर** लड़की, **दयालु** पुरुष, **दयालु** स्त्री इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७) कुछ अकारान्त विशेषण संस्कृत के नियम के अनुसार स्त्रीलिङ्ग विशेष्य के साथ आकारान्त होजाते हैं। जैसे, सुशील पुरुष, सुशीला स्त्रियाँ।

(८) थोड़ेसे अरबी भाषा के आकारान्त विशेषण शब्दों के रूप नहीं पलटते क्योंकि वे पूरे आकारान्त नहीं होते। जैसे, ताज़ा रोटी, ताज़ा फूल, उम्दा हवा, उम्दा पानी।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो और उनके अशुद्ध होने के कारण भी बताओ :–

(१) ये आम छोटा हैं। (२) चौथे कक्षा में तुम क्यों नहीं पढ़ते ? (३) तीसरा आदमी को बुलाओ। (४) उस बड़ा घोड़े पर कौन सवार था ? (५) थोड़ी दही लाइये। (६) सुशील स्त्रियों का आदर होता है। (७) उस पुस्तक के दसवाँ अध्याय में क्या लिखा है ?

विशेषण शब्द बनाने के नियम।

कुछ विशेषण शब्द तो संज्ञा, क्रिया के समान पहिले ही से बने हुए हैं। जैसे, सुन्दर, कोमल, छोटा, बड़ा इत्यादि। परन्तु बहुतसे विशेषण शब्द संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम इत्यादि से प्रत्यय, उपसर्ग इत्यादि शब्दों की सहायता से निम्नलिखित ढंग पर बनाये जाते हैं :–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) कहीं कहीं **इक प्रत्यय** से। जैसे, मास से **मासिक।**

इस दशा में निम्नलिखित ढंग पर शब्द का **प्रथम स्वर पलट** जाता है और **अन्तिमस्वर** का **लोप** होजाता है।

(१) यदि शब्द का प्रथम स्वर **अ** हो तो वह **आ** हो जाता है। जैसे :—

शब्द	शरीर	धर्म	समय	अधुना	पक्ष।
विशेषण	शारीरिक	धार्मिक	सामयिक	आधुनिक	पाक्षिक।

नोट—शब्द का प्रथम स्वर **आ** हो तो वह ज्यों का त्यों बना रहता है। जैसे, मास से मासिक।

(२) यदि शब्द का प्रथम स्वर **इ, ई, ए** हो तो वह **ऐ** होजाता है। जैसे :—

शब्द	पितृ	दिन	नीति	वेद।
विशेषण	पैत्रिक	दैनिक	नैतिक	वैदिक।

(३) यदि शब्द का प्रथम स्वर **उ, ऊ, ओ** हो तो वह **औ** होजाता है। जैसे :—

शब्द	पुराण	भूत	लोक	योग।
विशेषण	पौराणिक	भौतिक	लौकिक	यौगिक।

विशेष्यसहित उदाहरण।

शारीरिक बल, धार्मिक पुरुष, सामयिक पवन, आधुनिक समय, पाक्षिक पत्र, पैत्रिक धन, दैनिक पत्र, नैतिक विषय,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैदिक प्रचार, पौराणिक मत, भौतिक कष्ट, लौकिक व्यवहार, यौगिक शब्द ।

अभ्यास ।

निम्नलिखित विशेषण शब्दों को शुद्ध करो और उनके **अशुद्ध होने के कारण** भी बताओ :—

राजनीतिक विषय, प्रकृतिक भूगोल, स्वभाविक गुण, शब्दिक अर्थ, अवलोकिक शोभा, सप्ताहिक पत्र, वर्षिक आय, मुखिक वार्तालाप ।

(२) कहीं कहीं शब्द के अन्तिम स्वर का लोप करके **ईण** वा **ईन** जोड़ देते हैं । जैसे, ग्राम से ग्रामीण, कुल से कुलीन ।

(३) कहीं कहीं **इम** जोड़ देते हैं । जैसे, अन्त से अन्तिम ।

(४) कहीं कहीं **मान्** जोड़ देते हैं । जैसे, शक्ति से शक्तिमान्, बुद्धि से बुद्धिमान् ।

(५) कहीं कहीं **वान्** जोड़ देते हैं । जैसे, बल से बलवान्, धन से धनवान् ।

(६) कहीं कहीं **अकारान्त** शब्द को **ईकारान्त** करदेते हैं। जैसे, गुण से गुणी, सुख से सुखी, ज्ञान से ज्ञानी ।

(७) कहीं कहीं **लु** जोड़ देते हैं । जैसे, दया से दयालु, कृपा से कृपालु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८) कहीं कहीं **ईय** जोड़ देते हैं। जैसे, ईश्वर से ईश्वरीय, उत्तर से उत्तरीय।

(९) कहीं कहीं **रूपी** जोड़ देते हैं। जैसे, विद्या से विद्यारूपी, ज्ञान से ज्ञानरूपी।

(१०) कहीं कहीं **सम्बन्धी** जोड़ देते हैं। जैसे, ध्रुव से ध्रुवसम्बन्धी, हिन्दुस्थान से हिन्दुस्थानसम्बन्धी।

(११) कहीं कहीं **शाली** जोड़ देते हैं। जैसे, प्रभाव से प्रभावशाली।

(१२) कहीं कहीं **हीन** जोड़ देते हैं। जैसे, ज्ञान से ज्ञानहीन।

(१३) कहीं कहीं **कारक** जोड़ देते हैं। जैसे, हानि से हानि-कारक।

(१४) कहीं कहीं **नि** अव्यय जोड़ देते हैं। जैसे, धन से निर्धन, जल से निर्जल।

(१५) कहीं कहीं **जनक** जोड़ देते हैं। जैसे, संतोष से संतोषजनक।

निम्नलिखित उदाहरणों में **प्राकृतिक नियम का प्रयोग** हुआ है :—

सं०—	घर	झगड़ा	बन	पैसा	घड़ा	विष	प्यास।
त्रि०—	घरेलू	झगड़ालू	बनैला	पैसाभर	घड़ाभर	विषभरा	प्यासा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वनाम से बने हुए विशेषण।

सर्वनाम	विशेषण।
कौन	कैसा, कितना।
जो	जैसा, जितना।
सो	तैसा, तितना।
वह	वैसा, उतना।
यह	ऐसा, इतना।

क्रिया से विशेषण।

क्रिया	विशेषण।
लिखना	लिखा हुआ।
हँसना	हँसता हुआ।
दौड़ना	दौड़ता हुआ।
गाना	गाने वाला।

अव्यय से विशेषण।

अव्यय	विशेषण।
कल	कल वाला।
परसों	परसों वाला।

विशेषण के पुरुष, लिङ्ग, वचन और कारक।

जो पुरुष, लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य का होता है वही पुरुष, लिङ्ग, वचन और कारक उसके विशेषण का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है। **पदान्वय** करने में **विशेषण** के **पुरुष** और **कारक** बतलाने की आवश्यकता नहीं है।

विशेषण का पदान्वय।

(१) उस पागल आदमी को इतने पैसे किसने दिये?

उस—संकेतवाचक विशेषण, पुल्लिङ्ग, एकवचन, आदमी का विशेषण।

पागल—गुणवाचक विशेषण, पुल्लिङ्ग, एकवचन, आदमी का विशेषण।

इतने—परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिङ्ग, बहुवचन, पैसे का विशेषण।

(२) प्रत्येक लड़की को एक एक बनारसी साड़ी दो

प्रत्येक—विभागबोधक विशेषण, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, लड़की का विशेषण।

एक एक—संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, साड़ी का विशेषण।

बनारसी—व्यक्तिवाचक विशेषण, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, साड़ी का विशेषण।

(३) चारो स्त्रियाँ दैनिक पत्र पढ़ती हैं।

चारो—समुच्चयबोधक संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिङ्ग बहुवचन, स्त्रियाँ शब्द का विशेषण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दैनिक-गुणवाचक विशेषण, पुल्लिङ्ग, एकवचन, पत्र का विशेषण।

अध्याय १०।

क्रिया।

जिस शब्द से **कोई काम** जाना जाय वा **किसी का होना** जाना जाय उसे **क्रिया** कहते हैं। जैसे, (१) मैं हिन्दी **पढ़ता** हूँ। (२) वह दुखी है।

क्रियार्थकसंज्ञा।

क्रिया के **सामान्यरूप** को **क्रियार्थक संज्ञा** कहते हैं। जैसे, आना, गिनना, पीना, झुकना, छूना, लेना, तैरना, सोना, खौलना। इसको **भाववाचकसंज्ञा** भी कहते हैं।

धातु।

क्रिया के सामान्यरूप के **अन्त के ना** का लोप कर देने से जो बच जाता है उसे **धातु** कहते हैं। जैसे, आ, गिन, पी, झुक, छू, ले, तैर, सो, खौल।

धातु से **क्रिया** बनती है। जैसे, **आ** से **आता है, आवेगा** इत्यादि।

क्रिया के भेद।

क्रिया **दो प्रकार** की होती है-**सकर्मक** और **अकर्मक**।

(१) जिस **क्रिया** का **कर्म** होता है उसे **सकर्मक** क्रिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहते हैं। जैसे, (१) मैं हिन्दी **पढ़ता हूं**।
(२) वह मुझे **देखता है**।

(२) जिस क्रिया का **कर्म** नहीं होता उसे **अकर्मक** क्रिया कहते हैं। जैसे, (१) मैं वहाँ **जाता हूँ**।
(२) तुम क्यों **हँसते हो** ?

क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन।

क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन वही होते हैं जो पुरुष, लिङ्ग और वचन उसके **कर्त्ता** के होते हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं पढ़ता हूँ।	हम पढ़ते हैं।
म० पु०	तू पढ़ता है।	तुम पढ़ते हो।
अ० पु०	वह पढ़ता है।	वे पढ़ते हैं।

स्त्रीलिङ्ग।

	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं पढ़ती हूँ।	हम पढ़ती हैं।
म० पु०	तू पढ़ती है।	तुम पढ़ती हो।
अ० पु०	वह पढ़ती है।	वे पढ़ती हैं।

नोट—(१) आदरयोग्य कर्त्ता की क्रिया प्रायः **बहुवचन** में होती है। जैसे:—(१) पंडितजी आते हैं। (२) आप सोते हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट–(२) **ने युक्त कर्त्ता** की **क्रिया** के पुरुष, लिङ्ग और वचन **कर्त्ता** के पुरुष, लिङ्ग और वचन के अनुसार नहीं होते इसका वर्णन आगे किया गया है।

क्रिया के काल।

क्रिया के होने के समय को **काल** कहते हैं।

क्रिया के **तीन काल** होते हैं–(१) वर्तमानकाल, (२) भूतकाल, (३) भविष्यत्काल।

(१) जिस क्रिया का होना **वर्तमानकाल** में पाया जाय वह क्रिया **वर्तमानकाल** की होती है। जैसे, मैं आता हूँ।

(२) जिस क्रिया का होना **भविष्यत्काल** में पाया जाय वह क्रिया **भविष्यत्काल** की होती है। जैसे, मैं आऊँगा।

(३) जिस क्रिया का होना **भूतकाल** में पाया जाय वह क्रिया **भूतकाल** की होती है। जैसे, मैं आया।

होना क्रिया के रूप तीनो कालों, तीनो पुरुषों, दोनो वचनों और दोनो लिङ्गों में नीचे लिखे गये हैं:–

हो (धातु)

वर्तमानकाल।

	पुल्लिङ्ग। एकवचन।	पुल्लिङ्ग। बहुवचन।	स्त्रीलिङ्ग। एकवचन।	स्त्रीलिङ्ग। बहुवचन।
उ० पु०	मैं हूँ।	हम हैं।	मैं हूँ।	हम हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म० पु०	तू है।	तुम हो।	तू है।	तुम हो।
अ० पु०	वह है।	वे हैं।	वह है।	वे हैं।

भूतकाल।

	पुल्लिङ्ग।		स्त्रीलिङ्ग।	
	एकवचन।	बहुवचन।	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं था।	हम थे।	मैं थी।	हम थीं।
म० पु०	तू था।	तुम थे।	तू थी।	तुम थीं।
अ० पु०	वह था।	वे थे।	वह थी।	वे थीं।

भविष्यत्काल।

	पुल्लिङ्ग।		स्त्रीलिङ्ग।	
	एकवचन।	बहुवचन।	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं हूँगा।	हम होंगे।	मैं हूँगी।	हम होंगी।
म० पु०	तू होगा।	तुम होगे।	तू होगी।	तुम होंगी।
अ० पु०	वह होगा।	वे होंगे।	वह होगी।	वे होंगी।

नोट—ऊपर लिखे हुए **तीनो कालों के रूपों को** अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

कुछ लोग **होना क्रिया के रूप भविष्यत्काल** में निम्नलिखित ढंग पर लिखते हैं पर ऐसा बहुत कम होता है:—

	पुल्लिङ्ग।		स्त्रीलिङ्ग।	
	एकवचन।	बहुवचन।	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं होऊँगा।	हम होवेंगे।	मैं होऊँगी।	हम होवेंगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म०पु० तू होवेगा। तुम होओगे। तू होवेगी। तुम होओगी।
अ०पु० वह होवेगा। वे होवेंगे। वह होवेगी। वे होवेंगी।

वर्तमानकाल के भेद।

वर्तमानकाल **चार प्रकार** के होते हैं—(१) सामान्य वर्तमान, (२) तात्कालिक वर्तमान, (३) संदिग्ध वर्तमान, (४) हेतुहेतुमद्वर्तमान।

(१) मोहन दही खाता है। (२) मोहन दही खा रहा है। (३) मोहन दही खाता होगा। (४) यदि मोहन दही खाता हो तो उसको भी दो।

नं० (१) में **खाता है** क्रिया में केवल **वर्तमानकाल** का बोध होता है कोई **निश्चित समय** नहीं जाना जाता है। [जिस **वर्तमानकाल** से कोई **निश्चित समय** न प्रकट हो उसे **सामान्य वर्तमानकाल** कहते हैं]। इसलिये **खाता है** क्रिया **सामान्य वर्तमान** की है।

नं० (२) में **खारहा है** क्रिया से यह जाना जाता है कि खाने का काम **इस समय** होरहा है, अर्थात् मोहन इस समय दही खा रहा है। [जिस **वर्तमानकाल** से यह जाना जाय कि काम **इस समय** होरहा है उसे **तात्कालिक वर्तमान** कहते हैं]। इसलिये **खारहा है तात्कालिक वर्तमान** है।

नोट—तात्कालिक वर्तमान को **अपूर्ण वर्तमान** भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहते हैं क्योंकि इससे क्रिया की **अपूर्णता** भी प्रकट होती है।

नं० (३) में **खाता होगा** से **सामान्य वर्तमान** और **तात्कालिक वर्तमान दोनों** प्रकट होते हैं अर्थात् (१) मोहन का दही खाने का स्वभाव होगा वा (२) मोहन इस समय दही खाता होगा। परन्तु इस क्रिया से काम के होने में **संदेह** पाया जाता है। जिस **वर्तमान काल** से काम के होने में **संदेह** पाया जाय उसे **संदिग्ध वर्तमान** कहते हैं। इसलिये **खाता होगा संदिग्ध वर्तमान** है।

नं० (४) में **खाता हो** क्रिया से यह जाना जाता है कि इस क्रिया के होने पर एक दूसरी क्रिया अर्थात् **देना** क्रिया निर्भर है। जिस वर्तमानकाल की क्रिया के होने पर किसी दूसरी क्रिया का होना निर्भर हो उसे **हेतुहेतुमद्वर्तमान** कहते हैं। इसलिये **खाता हो** क्रिया **हेतुहेतुमद्वर्तमान** है।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में **वर्तमानकाल की क्रियाओं के भेद** बतलाओ:—

(१) यदि वे आते हों तो उनको मेरे पास भेज देना। (२) मैं बनारस जा रहा हूँ। (३) तुम क्या करते हो ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) वह आज कल क्या करता है ? (५) लल्लू स्कूल जाता है । (६) वे चिट्ठी पढ़ रहे हैं । (७) तुम किसको पढ़ाते हो ? (८) यहाँ लड़कियाँ आती होंगी । (९) तुम क्यों लड़ती हो ? (१०) वे लोग कहाँ रहते हैं ? (११) लल्लू मुझे देख रहा है ।

सामान्य वर्तमान बनाने की रीति ।

धातु के आगे पुल्लिङ्ग एकवचन में **ता** और बहुवचन में **ते** और स्त्रीलिङ्ग एकवचन और बहुवचन में **ती** लगा कर **होना** क्रिया के **रूपों** का **प्रयोग** होता है । जैसे :—

पुल्लिङ्ग ।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
उ० पु०	मैं खाता हूँ ।	हम खाते हैं ।
म० पु०	तू खाता है ।	तुम खाते हो ।
अ० पु०	वह खाता है ।	वे खाते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग ।

उ० पु०	मैं खाती हूँ ।	हम खाती हैं ।
म० पु०	तू खाती है ।	तुम खाती हो ।
अ० पु०	वह खाती है ।	वे खाती हैं ।

इसी तरह आना, जाना, उठना, बैठना इत्यादि क्रियाओं से **सामान्यवर्तमान** बनते हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—जिस वाक्य में **नहीं** का प्रयोग होता है उस वाक्य में **होना क्रिया के रूप** अधिकतर **छिपे** रहते हैं परन्तु स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में क्रिया **ईकारान्त** के बदले **ईंकारान्त** होजाती है । जैसे:—

पुल्लिङ्ग ।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
उ० पु०	मैं नहीं जाता ।	हम नहीं जाते ।
म० पु०	तू नहीं जाता ।	तुम नहीं जाते ।
अ० पु०	वह नहीं जाता ।	वे नहीं जाते ।

स्त्रीलिङ्ग ।

उ० पु०	मैं नहीं जाती ।	हम नहीं जातीं ।
म० पु०	तू नहीं जाती ।	तुम नहीं जातीं ।
अ० पु०	वह नहीं जाती ।	वे नहीं जातीं ।

तात्कालिक वर्तमान बनाने की रीति ।

धातु के आगे **पुल्लिङ्ग एकवचन** में **रहा, बहुवचन** में **रहे,** और **स्त्रीलिङ्ग एकवचन** और **बहुवचन** में **रही** लगाकर **होना** क्रिया के रूपों का प्रयोग होता है । जैसे:—

(जाना)

पुल्लिङ्ग ।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
उ० पु०	मैं जारहा हूँ ।	हम जारहे हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म० पु०	तू जारहा है।	तुम जारहे हो।
अ० पु०	वह जारहा है।	वे जारहे हैं।

स्त्रीलिङ्ग।

उ० पु०	मैं जारही हूँ।	हम जारही हैं।
म० पु०	तू जारही है।	तुम जारही हो।
अ० पु०	वह जारही है।	वे जारही हैं।

संदिग्ध वर्तमान बनाने की रीति।

धातु के आगे **ता, ती, ते** लगाकर **होना** क्रिया के **भविष्यत्काल** के रूपों का प्रयोग होता है। जैसे :–

(सोना)

पुल्लिङ्ग।

	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं सोता हूँगा।	हम सोते होंगे।
म० पु०	तू सोता होगा।	तुम सोते होंगे।
अ० पु०	वह सोता होगा।	वे सोते होंगे।

स्त्रीलिङ्ग।

उ० पु०	मैं सोती हूँगी।	हम सोती होंगी।
म० पु०	तू सोती होगी।	तुम सोती होंगी।
अ० पु०	वह सोती होगी।	वे सोती होंगी।

हेतुहेतुमद्वर्तमान बनाने की रीति।

संदिग्ध वर्तमानकाल की क्रियाओं के अन्त के **गा, गी,**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गे इत्यादि को **लोप** कर देने से **हेतुहेतुमद्वर्तमान** की क्रिया बनजाती हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	मैं सोता हूँ।	हम सोते हों।
म० पु०	तू सोता हो।	तुम सोते हो।
अ० पु०	वह सोता हो।	वे सोते हों।

स्त्रीलिङ्ग।

उ० पु०	मैं सोती हूँ।	हम सोती हों।
म० पु०	तू सोती हो।	तुम सोती हो।
अ० पु०	वह सोती हो।	वे सोती हों।

नोट—होना क्रिया को **सहायक क्रिया** कहते हैं क्योंकि प्राय: इसीकी **सहायता** से **काल** बनते हैं।

भूतकाल के भेद।

भूतकाल छ: प्रकार के होते हैं:—

(१) सामान्यभूत, (२) आसन्नभूत, (३) पूर्णभूत, (४) संदिग्धभूत, (५) अपूर्णभूत, (६) हेतुहेतुमद्भूत।

(१) सामान्यभूत।

(१) मोहन **आया है**। (२) मोहन **आया था**। (३) मोहन **आया**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० (१) में **आया है** क्रिया से जाना जाता है कि काम को समाप्त हुये **थोड़ा समय** बीता है और नं० (२) में **आया था** क्रिया से यह जाना जाता है कि काम को समाप्त हुये **अधिक समय** बीता है, परन्तु नं० (३) में **आया** क्रिया से कोई **निश्चित समय** नहीं जाना जाता अर्थात् इससे यह नहीं जाना जाता कि **आने का काम अभी** हुआ है वा इसको हुये **अधिक समय** बीता है।

जिस भूतकाल से कोई **निश्चित समय** न जाना जाय उसे **सामान्यभूत** कहते हैं। इसलिये नं० (३) में **आया** क्रिया सामान्यभूतकाल में है।

(२) आसन्नभूत।

(१) मोहन **आया है**। (२) लल्लू किताब **पढ़ चुका है**।

ऊपर के वाक्यों में **आया है, पढ़ चुका है** क्रियाओं से यह जाना जाता है कि काम समाप्त हुये **थोड़ा समय** बीता है।

जिस भूतकाल से यह जाना जाय कि **काम समाप्त हुये थोड़ा समय** बीता है उसे **आसन्नभूत** कहते हैं। इसलिये **आया है, पढ़ चुका है** आसन्नभूतकाल में हैं।

नोट—आसन्नभूत को **निकटवर्तीभूत** भी कहते हैं।

(३) पूर्णभूत।

(१) मोहन **आया था**। (२) लल्लू किताब **पढ़ चुका था**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **आया था, पढ़ चुका था** क्रियाओं से यह जाना जाता है कि काम को समाप्त हुये अधिक समय बीता है।

जिस **भूतकाल** से यह जाना जाय कि काम को समाप्त हुये **अधिक समय** बीता है उसे **पूर्णभूत** कहते हैं। इसलिये **आया था, पढ़ चुका था पूर्णभूतकाल** की क्रिया हैं।

(४) अपूर्णभूत।

(१) मोहन **आता था।** (२) कल कल्लू गीत **गा रहा था।**

ऊपर के वाक्यों में **आता था, गा रहा था** से भूतकाल तो जाना जाता है परन्तु उनसे **काम का समाप्त होना** नहीं जाना जाता। इन क्रियाओं से यही जाना जाता है कि काम होरहा था।

जिस भूतकाल से **काम का पूरा होना** न जाना जाय उसे **अपूर्णभूत** कहते हैं। इसलिये **आता था, गा रहा था अपूर्णभूतकाल** की क्रिया हैं।

(५) संदिग्धभूत।

(१) मोहन **आया होगा।** (२) लड़की घर **गई होगी।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **आया होगा, गई होगी** से **भूतकाल** तो पाया जाता है परन्तु **काम होने में संदेह** पाया जाता है। इन क्रियाओं से यह नहीं जाना जाता कि **काम हुआ या नहीं।**

जिस **भूतकाल** से काम के होने में **संदेह** पाया जाय उसे **संदिग्धभूत** कहते हैं। इसलिये **आया होगा, गई होगी** क्रियायें **संदिग्धभूतकाल** की हैं।

(६) हेतुहेतुमद्भूत।

मोहन आता तो मैं जाता।

ऊपर के वाक्य में **आता, जाता** से **भूतकाल** तो जाना जाता है परन्तु काम का **सिद्ध होना** नहीं पाया जाता, **जाने** का काम **आने** पर निर्भर था (न मोहन आया न मैं गया)।

जिस **भूतकाल** से यह जाना जाय कि **एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होनेपर** निर्भर है उसे **हेतुहेतुमद्भूत** कहते हैं। इसलिये **आता, जाता हेतुहेतुमद्भूतकाल** में हैं।

हेतुहेतुमद्भूत के भेद।

हेतुहेतुमद्भूत **चार प्रकार** के होते हैं:—

(१) सामान्यहेतुहेतुमद्भूत, (२) आसन्नहेतुहेतुमद्भूत,
(३) अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत, (४) अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) राम **आता** तो मैं **जाता**। (२) राम **आया हो** तो उसे बुलाओ। (३) राम **आया होता** तो मैं **गया होता**। (४) राम यहाँ **आता होता** तो मैं उसे देखता।

नं० (१) में **आता जाता** से कोई **निश्चित समय** नहीं जाना जाता इसलिये इनको **सामान्य हेतुहेतुमद्भूत** कहते हैं।

नं० (२) में **आया हो** से **निकटता** जानी जाती है इसलिये इसको **आसन्नहेतुहेतुमद्भूत** कहते हैं।

नं० (३) में **आया होता, गया होता** से **दूरता** जानी जाती है इसलिये इनको **अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत** कहते हैं।

नं० (४) में **आता होता** से **अपूर्णता** जानी जाती है इसलिये इसको **अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत** कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में भूतकाल के भेद बताओ:-

(१) मैंने उसे कभी नहीं देखा है। (२) तुम कहाँ से आये हो? (३) कल मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। (४) उस दिन तुमने क्या खाया था? (५) मैं राम को अपनी किताब देता था पर उसने उसे नहीं लिया। (६) वह मुझे राह में देखता तो बुला लेता। (७) जब मैंने राम को देखा तब वह रोटी खा रहा था। (८) लल्लू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल कहाँ था ? मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा है। (९) लल्लू ने घर पर हिन्दी पढ़ी होगी। (१०) मोहन बनारस गया होता तो उसने अपने भाई को देखा होता। (११) कल वे लड़कियाँ घर गईं थीं। (१२) अगर लल्लू अब तक हिन्दी पढ़ता होता तो बहुत कुछ सीख गया होता। (१३) यदि मोहन आया हो तो उसे बुलाओ।

(१) सामान्यभूत बनाने की रीति।

(१) अकारान्त धातु को पुल्लिङ्ग एकवचन में आकारान्त, पुल्लिङ्ग बहुवचन में एकारान्त, स्त्रीलिङ्ग एकवचन में ईकारान्त और स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में ईंकारान्त करदेते हैं। जैसे:—

क्रिया।	धातु।	भूतकाल।			
		पु०ए०।	पु०ब०।	स्त्री०ए०।	स्त्री०ब०।
रहना।	रह।	रहा।	रहे।	रही।	रहीं।
देखना।	देख।	देखा।	देखे।	देखी।	देखीं।
चलना।	चल।	चला।	चले।	चली।	चलीं।

नोट—रख धातु से बनी हुई क्रिया भूतकाल में रक्खा, रक्खे, रक्खी, रक्खीं होजाती है।

(२) आकारान्त, ओकारान्त धातु के अन्त में या, ये, ई, ईं जोड़ देते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे :—

क्रिया।	धातु।	भूतकाल।			
		पु० ए०।	पु० ब०।	स्त्री० ए०।	स्त्री० ब०।
पाना।	पा।	पाया।	पाये।	पाई।	पाईं।
सोना।	सो।	सोया।	सोये।	सोई।	सोईं।

(३) **ईकारान्त, एकारान्त** धातु को **इकारान्त** करके **या, ये** जोड़ देते हैं परन्तु **स्त्रीलिङ्ग** में केवल धातु ही **ईकारान्त** होजाता है। जैसे :—

क्रिया।	धातु।	भूतकाल।			
		पु० ए०।	पु० ब०।	स्त्री० ए०।	स्त्री० ब०।
पीना।	पी।	पिया।	पिये।	पी।	पीं।
देना।	दे।	दिया।	दिये।	दी।	दीं।

(४) **ऊकारान्त** धातु को **उकारान्त** करके **आ, ये, ई, ईं** जोड़ देते हैं। जैसे :—

क्रिया।	धातु।	भूतकाल।			
		पु० ए०।	पु० ब०।	स्त्री० ए०।	स्त्री० ब०।
छूना।	छू।	छुआ।	छुये।	छुई।	छुईं।
चूना।	चू।	चुआ।	चुये।	चुई।	चुईं।

(५) **जाना** क्रिया का **भूतकाल गया, गये, गई, गईं** और **करना** का **किया, किये, की, कीं** होता है।

होना क्रिया का **भूतकाल दो प्रकार** से बनता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे :—

क्रिया ।	धातु ।	भूतकाल ।			
		पु०ए०।	पु०ब०।	स्त्री०ए०।	स्त्री०ब०।
(१) होना ।	हो ।	था ।	थे।	थी।	थीं ।
(२) होना ।	हो ।	हुआ।	हुए।	हुई।	हुईं ।

(२) आसन्नभूत बनाने की रीति ।

सामान्य भूत के आगे **होना** क्रिया के **वर्तमान-काल के रूप** लगाने से **आसन्नभूत** बनता है। जैसे :—

पुल्लिङ्ग ।

ए०व०	ब०व०
मैं गया हूँ।	हम गये हैं।
तू गया है।	तुम गये हो।
वह गया है।	वे गये हैं।

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं गई हूँ।	हम गई हैं।
तू गई है।	तुम गई हो।
वह गई है।	वे गई हैं।

(३) पूर्णभूत बनाने की रीति ।

सामान्यभूत के आगे **होना** क्रिया के **भूतकाल** के **रूप** लगाने से **पूर्णभूत** बनता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे :—

पुल्लिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं गया था ।	हम गये थे ।
तू गया था ।	तुम गये थे ।
वह गया था ।	वे गये थे ।

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं गई थी ।	हम गईं थीं ।
तू गई थी ।	तुम गईं थीं ।
वह गई थी ।	वे गईं थीं ।

(४) अपूर्णभूत बनाने की रीति ।

धातु के आगे **ता, ते, ती** वा **रहा, रहे, रही** लगाकर **होना** क्रिया के **भूतकाल** के **रूप** लगाये जाते हैं । जैसे :—

पुल्लिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं जाता था, जा रहा था ।	हम जाते थे, जा रहे थे ।
तू जाता था, जा रहा था ।	तुम जाते थे, जा रहे थे ।
वह जाता था, जा रहा था ।	वे जाते थे, जा रहे थे ।

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं जाती थी, जा रही थी ।	हम जाती थीं, जा रही थीं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू जाती थी, जा रही थी।	तुम जाती थीं, जा रही थीं।
वह जाती थी, जा रही थी।	वे जाती थीं, जा रही थीं।

(५) संदिग्धभूत बनाने की रीति।

सामान्यभूत के आगे **होना** क्रिया के **भविष्यत् काल** के **रूप** लगाये जाते हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

ए० व०	ब० व०
मैं गया हूँगा।	हम गये होंगे।
तू गया होगा।	तुम गये होगे।
वह गया होगा।	वे गये होंगे।

स्त्रीलिङ्ग।

मैं गई हूँगी।	हम गई होंगी।
तू गई होगी।	तुम गई होगी।
वह गई होगी।	वें गई होंगी।

(६) सामान्यहेतुहेतुमद्भूत बनाने की रीति।

धातु के परे **ता, ते, ती, तीं** लगाये जाते हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

ए० व०	ब० व०
मैं जाता।	हम जाते।
तू जाता।	तुम जाते।
वह जाता।	वे जाते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं जाती ।	हम जातीं ।
तू जाती ।	तुम जातीं ।
वह जाती ।	वे जातीं ।

(७) आसन्नहेतुहेतुमद्भूत बनाने की रीति ।

संदिग्धभूत के अन्त के गा, गे, गी के लोप कर देने से आसन्नहेतुहेतुमद्भूत बनता है । जैसे :—

पुल्लिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं गया हूँ ।	हम गये हों ।
तू गया हो ।	तुम गये हो ।
वह गया हो ।	वे गये हों ।

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं गई हूँ ।	हम गई हों ।
तू गई हो ।	तुम गई हो ।
वह गई हो ।	वे गई हों ।

(८) अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत बनाने की रीति ।

सामान्यभूत के आगे होता, होते, होती, होतीं लगाये जाते हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

ए० व०	ब० व०
मैं गया होता।	हम गये होते।
तू गया होता।	तुम गये होते।
वह गया होता।	वे गये होते।

स्त्रीलिङ्ग।

मैं गई होती।	हम गई होतीं।
तू गई होती।	तुम गई होतीं।
वह गई होती।	वे गई होतीं।

(९) अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत बनाने की रीति।

सामान्यहेतुहेतुमद्भूत के आगे होता, होते, होती, होतीं लगाये जाते हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग।

ए० व०	ब० व०
मैं जाता होता।	हम जाते होते।
तू जाता होता।	तुम जाते होते।
वह जाता होता।	वे जाते होते।

स्त्रीलिङ्ग।

मैं जाती होती।	हम जाती होतीं।
तू जाती होती।	तुम जाती होतीं।
वह जाती होती।	वे जाती होतीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भविष्यत्काल के भेद।

भविष्यत्काल **तीन प्रकार** का होता है:-

(१) सामान्यभविष्यत्, (२) हेतुहेतुमद्भविष्यत्,
(३) सम्भाव्यभविष्यत्।

(१) सामान्यभविष्यत्काल।

(१) राम आवेगा। (२) मोहन बैठेगा।

ऊपर के वाक्यों में **आवेगा, बैठेगा** से केवल यही सिद्ध होता है कि **आने** और **बैठने** का **काम आगे आने वाले समय में** आरम्भ होगा।

जिस **भविष्यत्काल** से केवल **काम का आरम्भ होना आगे आनेवाले समय में** जाना जाय उसे **सामान्यभविष्यत्** कहते हैं। इसलिये **आवेगा, बैठेगा सामान्य भविष्यत्काल** में हैं।

(२) हेतुहेतुमद्भविष्यत्काल।

(१) राम आवे तो मैं जाऊँ।

ऊपर के वाक्य में **आवे** और **जाऊँ भविष्यत्काल** की क्रियाओं से यह प्रकट होता है कि **जाने का काम आने के काम** पर **निर्भर** है।

जिस **भविष्यत्काल** में एक **कामका होना दूसरे**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम के होने पर निर्भर हो उसे **हेतुहेतुमद्भविष्यत्** कहते हैं । इसलिये **आवे, जाऊँ हेतुहेतुमद्भविष्यत्** **काल** में हैं ।

नोट—(१) जिस **क्रिया** पर **दूसरी क्रिया निर्भर** होती है उसे **कारण** कहते हैं और **जो क्रिया निर्भर** होती है उसे **कार्य्य** कहते हैं। इसलिये ऊपर के वाक्य में **आवे कारण** है और **जाऊँ कार्य्य** है।

(२) कहीं कहीं **कार्य्य छिपा** रहता है। जैसे:—

हे परमेश्वर ! उसका दुःख दूर होजाय ।

कार्य्य **प्रकट** होने पर यह वाक्य नीचे के ढंग पर लिखा जायगा:—

हे परमेश्वर ! उसका दुःख दूर होजाय तो अच्छा हो ।

(३) कहीं कहीं **सामान्य हेतुहेतुमद्भूत** के रूप का प्रयोग **हेतुहेतुमद्भविष्यत्** में होता है। जैसे:—

राम कल **आजाता** तो अच्छा **होता** ।

इस दशा में अर्थ से जाना जाता है कि **क्रिया भूत-काल** में है वा **भविष्यत्काल** में ।

(३) सम्भाव्य भविष्यत्काल ।

(१) कदाचित् राम आवे । (२) सम्भव है कि मोहन मुझे बुलावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **आवे और बुलावे भविष्यत्काल** की क्रियाओं से काम के होने में **सम्भावना** पाई जाती है।

जिस **भविष्यत्काल** की क्रिया से **सम्भावना** प्रकट हो उसे **सम्भाव्यभविष्यत्** कहते हैं। इसलिये ऊपर की क्रियायें **सम्भाव्य भविष्यत्काल** में हैं।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में **भविष्यत्काल** की क्रियाओं के भेद बताओ:—

(१) यदि राम पढ़े तो मैं उसे किताब दूँ। (२) यदि मोहन यहाँ आवे तो सब काम ठीक होजाय। (३) दो दिन के भीतर सोहन यहाँ आजावेगा। (४) क्या मोहन आज यहाँ आवेगा? सम्भव है कि वह आवे। (५) अगर लल्लू मेरी बात न मानेगा तो दुःख उठावेगा। (६) हे परमात्मन्! राम का स्वास्थ्य ठीक होजाय।

सामान्य भविष्यत्काल बनाने की रीति।

(१) **अकारान्त, एकारान्त** धातुओं के **भविष्यत्-काल** निम्नलिखित ढंग पर बनते हैं:—

चल, दे (धातु)

पुल्लिङ्ग।

ए० व०	ब० व०
मैं चलूँगा।	हम चलेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं दूँगा ।	हम देंगे ।
तू चलेगा ।	तुम चलोगे ।
तू देगा ।	तुम दोगे ।
वह चलेगा ।	वे चलेंगे ।
वह देगा ।	वे देंगे ।

स्त्रीलिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं चलूँगी ।	हम चलेंगी ।
मैं दूँगी ।	हम देंगी ।
तू चलेगी ।	तुम चलोगी ।
तू देगी ।	तुम दोगी ।
वह चलेगी ।	वे चलेंगी ।
वह देगी ।	वे देंगी ।

(२) **आकारान्त** धातुओं के **भविष्यत्काल** निम्न लिखित ढंग पर बनते हैं:—

आकारान्त धातु (जा)

पुल्लिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं जाऊँगा ।	हम जायेंगे, जावेंगे, जायँगे ।
तू जायेगा, जावेगा, जायगा ।	तुम जाओगे ।
वह जायेगा, जावेगा, जायगा ।	वे जायेंगे, जावेंगे, जायँगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीलिङ्ग ।

ए० व०	ब० व०
मैं जाऊँगी ।	हम जायेंगी, जावेंगी, जायँगी।
तू जायेगी, जावेगी, जायगी ।	तुम जाओगी ।
वह जायेगी, जावेगी, जायगी ।	वे जायेंगी, जावेंगी, जायँगी ।

इसी तरह **खा, ला, पा** इत्यादि के **रूप** होते हैं ।

(३) **ऊकारान्त, ओकारान्त** धातुओं के **भविष्यत्काल** निम्नलिखित ढंग पर बनते हैं :—

छू, धो (धातु)

मैं छुऊँगा । मैं धोऊँगा ।	हम छुयेंगे, छुवेंगे। हम धोयेंगे, धोवेंगे।
तू छुयेगा, छुवेगा । तू धोयेगा, धोवेगा ।	तुम छुओगे । तुम धोओगे ।
वह छुयेगा, छुवेगा । वह धोयेगा, धोवेगा ।	वे छुयेंगे, छुवेंगे । वे धोयेंगे, धोवेंगे ।

स्त्रीलिङ्ग ।

स्त्रीलिङ्ग में **गा, गे** के बदले **गी** का प्रयोग होता है।

हेतुहेतुमद् और सम्भाव्यभविष्यत् बनाने की रीति ।

सामान्यभविष्यत् काल की क्रियाओं के **गा, गे,**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गी निकाल देने से **हेतुहेतुमद्भविष्यत्** और **सम्भाव्य-भविष्यत् काल** बनजाते हैं। जैसे, (१) मैं आऊँ तो तुम घर जाओ। (२) सम्भव है कि वे यहाँ आवें।

भिन्न २ **कालों** में **क्रियाओं के रूप** केवल **मैं, हम, तू, तुम, वह, वे** के साथ दिखलाये गये हैं क्योंकि क्रियाओं के कर्त्ता यही शब्द होते हैं वा ऐसे शब्द होते हैं जिनके **पुरुष, लिङ्ग, वचन** इन्हीं **सर्वनामों** के समान होते हैं। **मैं, हम, तू, तुम** को छोड़कर शेष सर्वनाम और सारी संज्ञायें कर्त्ता की अवस्था में सदा **अन्यपुरुष** में होती हैं।

सर्वनाम कर्त्ता।

ए० व०	ब० व०
कौन बोलता है ?	कौन लोग बोलते हैं ?
कोई बोलता होगा।	कोई कोई कहते हैं।

संज्ञा कर्त्ता।

ए० व०	ब० व०
मोहन पढ़ता है।	लड़के पढ़ते हैं।
लड़की आई।	लड़कियाँ आई।

यदि **कर्त्ता एकवचन** में हो परन्तु वह पुरुष **आदर योग्य** हो तो उसकी क्रिया **अन्यपुरुष बहुवचन** में होती है। जैसे:—

पंडितजी कहाँ गये हैं ? वह नहाने गये हैं।

आपके पिताजी कहाँ जाते हैं ? वह पाठशाला जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप।

आप शब्द मध्यम पुरुष का **सर्वनाम** है परन्तु इसकी क्रिया **अन्यपुरुष** में होती है। जैसे, आप आते हैं। आप आये थे।

भविष्यत्काल में इसकी क्रिया **दो प्रकार से** लिखी जाती है। जैसे:—

धातु	(१)	(२)
पढ़	आप पढ़ेंगे।	आप पढ़ियेगा।
चल	आप चलेंगे।	आप चलियेगा।
कर	आप करेंगे।	आप करियेगा वा कीजियेगा।
जा	आप जायेंगे।	आप जाइयेगा।
आ	आप आवेंगे।	आप आइयेगा।
दे	आप देंगे।	आप दीजियेगा।
ले	आप लेंगे।	आप लीजियेगा।
सो	आप सोवेंगे।	आप सोइयेगा।
बो	आप बोवेंगे।	आप बोइयेगा।

ऊपर के उदाहरणों से प्रकट है कि दूसरे रूप में **गा** के पहिले **इये** का प्रयोग होता है।

नोट—वर्तमान और **भविष्यत्** ही काल में क्रियायें **कर्त्ता के लिङ्ग, वचन** के अनुसार होती हैं, और कहीं कहीं नहीं। इसका वर्णन आगे किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिन्न भिन्न पुरुष, लिङ्ग और वचन के कर्त्ताओं की एक ही क्रिया।

(१) यदि एकही क्रिया के भिन्न २ कर्त्ता हों तो क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष प्रायः **अन्तिमकर्त्ता** के अनुसार होते हैं। जैसे, (१) लड़का और लड़की आई। (२) लड़की और लड़का आया। (३) घोड़े और गायें आईं। (४) गायें और घोड़े आये।

(२) यदि **दो** वा **तीनो** पुरुष के **कर्त्ता** हों तो **क्रिया उत्तमपुरुष** के **कर्त्ता** के **अनुसार** होती है। जैसे, (१) हम तुम और वह चलेंगे। (२) मैं और वह जाऊँगा।

(३) यदि **मध्यम** और **अन्यपुरुष** के **कर्त्ता** हों तो **क्रिया मध्यमपुरुष** के **कर्त्ता** के **अनुसार** होती है। जैसे, (१) मोहन और तुम चलोगे। (२) आप और वह कहाँ जाते हैं?

(४) यदि **उत्तम** और **मध्यम** वा **अन्यपुरुष** के **कर्त्ता** हों तो **क्रिया उत्तमपुरुष** के **कर्त्ता** के **अनुसार** होती है। जैसे, (१) हम और तुम चलेंगे। (२) वह और मैं आऊँगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को शुद्ध करो:-

(१) तुम क्या खाता है ? (२) तुम कब लौटेगा ? मैं अभी लौटेंगे। (३) आप कहाँ रहते हो ? (४) आप कहाँ जाओगे ? मैं वहाँ जाऊँगी। (५) तुम कल यहाँ क्यों नहीं आया ? (६) मास्टर जी कब घर जायगा ? (७) तू राम के घर क्यों नहीं गये ? (८) वे लोग आज कहाँ से आया है ? (९) राम की बहिन क्या पढ़ता है ? (१०) ये स्त्रियाँ कहाँ से आए हैं ? (११) वह लड़का क्या खायेगी ? (१२) हम तुमको दो दिन में बुलाऊँगा। (१३) मैं लल्लू की किताब नहीं पढ़ते। (१४) हम सब आज यहाँ सोयेगा। (१५) हे धोबी ! तू मेरे वस्त्र अच्छी तरह क्यों नहीं धोते ? (१६) आप मेरे साथ जौनपुर क्यों नहीं चलता ? (१७) हे लड़के ! तुम कहाँ से आ रही है ? (१८) तुम यहाँ बैठिये तो मैं भी बैठें। (१९) पंडितजी क्या कररहा है ? (२०) आप के पिताजी कब सोता है ? (२१) तुम मुझे कब बुलाइयेगा ? (२२) हे बालक ! तू इस समय कहाँ से आते हो ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय ११।

क्रिया की विधि और पूर्वकालिक अवस्था।

क्रियाओं का प्रयोग **तीन अवस्थाओं** में होता है। (१) सामान्य, (२) विधि और (३) पूर्वकालिक।

अब तक **क्रिया** की **सामान्य अवस्था** का वर्णन हुआ है। **क्रिया** की **विधि** और **पूर्वकालिक अवस्था** का वर्णन आगे किया जाता है।

विधि क्रिया।

जब किसी **सकर्मक** वा **अकर्मक क्रिया** का प्रयोग **आज्ञा देने** वा **प्रार्थना करने** के लिये होता है तो **वह क्रिया विधि क्रिया** कही जाती है। जैसे:—

आज्ञा।	**प्रार्थना।**
(१) लड़की! यहाँ **बैठो**।	(१) पंडितजी! यहाँ **बैठिये**।
(२) तू घर मत **जा**।	(२) कृपा करके आप घर न **जाइये**
(३) तुम कल **आना**।	(३) आप कल **आइयेगा**।

नोट—अपने से **छोटे** को **आज्ञा** दी जाती है और **बड़ों** से **प्रार्थना** की जाती है।

विधि क्रिया का **कर्त्ता** अधिकतर **मध्यमपुरुष** में होता है (ऊपर के उदाहरणों में देखो)। परन्तु निम्नलिखित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढंग के वाक्यों में **उत्तम** और **अन्यपुरुष** में भी **कर्त्ता** होता है। जैसे :—

	एकवचन।	बहुवचन।
उ० पु०	अब मैं पढ़ूं।	अब हम लोग पढ़ें।
अ० पु०	अब वह पढ़े।	अब वे लोग पढ़ें।

विधि क्रिया **दो प्रकार** की होती है—(१) सामान्य विधि। (२) परोक्ष विधि।

जिस विधि क्रिया से यह जाना जाय कि **आज्ञा का पालन आज्ञा देनेवाले के सामने** होगा उसे **सामान्य विधि** कहते हैं। जैसे, तुम पढ़ो, वह जाय इत्यादि।

जिस विधि क्रिया से यह जाना जाय कि **आज्ञा का पालन कुछ समय के उपरान्त** अर्थात् आज्ञा देनेवाले के परोक्ष (आँख के परे) में होगा उसे **परोक्ष विधि** कहते हैं। जैसे, कल तुम मत आना या मत आइयो। कल आप न आइयेगा।

सामान्य विधि बनाने की रीति।

यदि कर्त्ता **तू** हो तो क्रिया के धातु ही का रूप **विधि क्रिया** में होता है। जैसे:—

क्रिया।	**विधि क्रिया।**
बोलना।	तू बोल।
आना।	तू आ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेना ।	तू ले ।
सोना ।	तू सो ।
पीना ।	तू पी ।
छूना ।	तू छू ।

यदि **तू** को छोड़ कर और कोई शब्द **कर्त्ता** हो तो **सामान्य भविष्यत्काल** का **गा, गे, गी** हटादेने से **विधि क्रिया** बनती है । जैसे:—

भविष्यत्काल ।	**विधि ।**
मैं बोलूँगा ।	अब मैं बोलूँ ।
हम बोलेंगे ।	अब हम बोलें ।
तुम बोलोगे ।	तुम बोलो ।
वह बोलेगा ।	वह बोले ।
वे बोलेंगे ।	वे बोलें ।
{ आप बोलेंगे ।	{ आप बोलें ।
{ आप बोलियेगा ।	{ आप बोलिये ।

परोक्ष विधि बनाने की रीति ।

परोक्ष विधि का **कर्त्ता** सदा **मध्यमपुरुष** में होता है । इसलिये इसके कर्त्ता **तू, तुम** और **आप** ही होसकते हैं । **तू, तुम** कर्त्ता के साथ धातु के आगे **इया** का प्रयोग होता है । जैसे, तू पढ़ियो—तुम पढ़ियो । तू मत जाइयो—तुम मत जाइयो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—लेना, देना, करना, होना क्रियाओं के साथ **जियो** का प्रयोग होता है। जैसे, (१) किताब मुझे दीजियो। (२) उससे पुस्तक मत लीजियो। (३) ऐसा काम फिर मत कीजियो। (४) दुखी मत हूजियो।

परन्तु आज कल **तू, तुम** कर्त्ता के साथ **परोक्ष विधि** में क्रिया के **सामान्य ही रूप** का प्रयोग होता है। जैसे, तू यहाँ अवश्य आना। तुम न डरना। तुम झूठ कभी न बोलना। तू यहाँ न सोना।

आप कर्त्ता के साथ **परोक्ष विधि** में क्रिया के **भविष्यत् ही काल** के रूपों का प्रयोग होता है। जैसे, आप वहाँ न ठहरियेगा। आप यहीं सोइयेगा।

विधि क्रिया का कर्त्ता अधिकतर **गुप्त** रहता है। जैसे:—

यहाँ मत बैठ।	यहाँ मत बैठो।
यहाँ न बैठिये।	यहाँ न बैठना।
यहाँ मत बैठियो।	यहाँ न बैठियेगा।

कर्त्ता का प्रयोग उसी समय किया जाता है जब **उसकी ओर संकेत करने** वा उसको **औरों से पृथक् करने** की आवश्यकता होती है। जैसे, सबको जाने दो पर तुम मत **जाओ**, इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय १२।

पूर्वकालिक क्रिया।

(१) लड़का पढ़कर सोता है। (२) लड़के पढ़कर सोते हैं। (३) लड़की पढ़कर सोती है। (४) लड़कियाँ पढ़कर सोती हैं। (५) मैं पढ़कर सोता हूँ।

ऊपर के वाक्यों में **पढ़कर** क्रिया **सोना** क्रिया के पहिले **समाप्त** होती है और यह क्रिया सोना क्रिया के समान **लिङ्ग, वचन** और **पुरुष** से युक्त नहीं है।

जिस क्रिया का सिद्ध होना किसी दूसरी क्रिया के सिद्ध होने के पहिले पाया जाय और जो लिङ्ग, वचन और पुरुष से युक्त न हो उसे **पूर्वकालिक क्रिया** कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में सोता है, सोते हैं इत्यादि **मुख्य क्रियायें** हैं। क्योंकि ये क्रियायें लिङ्ग, वचन और पुरुष से युक्त हैं।

पूर्वकालिक क्रिया **उसी काल** में समझी जाती है **जिस काल** में उसकी **मुख्य क्रिया** होती है।

नोट—**मुख्य क्रिया** से ही **वाक्य** बनता है। केवल **पूर्वकालिक** क्रिया से **वाक्य** नहीं बन सकता। जैसे, राम पढ़कर, मोहन आकर इत्यादि **वाक्य** नहीं हैं।

धातु के **अन्त में कर, के, करके** के प्रयोग से **पूर्वकालिक क्रिया** बनती है। जैसे, आकर, बोलकर, सोकर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठकर, देकर, जाके, सोके, मारके, देके, बैठके, रोके, जा करके, देख करके, सो करके, पढ़ करके ।

अध्याय १३ ।

प्रेरणार्थक क्रिया ।

जिस **क्रिया** से यह जाना जाय कि **कर्त्ता किसी दूसरे से काम लेता** है उसे **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं । जैसे, (१) राम मोहन से चिट्ठी लिखवाता है । (२) मैं यह पत्र तुम्हीं से पढ़ाऊँगा ।

निम्नलिखित क्रियाएँ प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं:-

चढ़वाना, दिलवाना, बुलवाना, कटवाना, घुमवाना, रखवाना, उठवाना, बजवाना इत्यादि ।

प्रेरणार्थक **क्रियाएँ सदा सकर्मक** होती हैं । जैसे:- (१) मैंने रामसे चिट्ठी लिखवाई । (२) मोहनको बुलवाओ।

कुछ अकर्मक और उनसे बनी हुई साधारण सकर्मक और प्रेरणार्थक सकर्मक क्रियाओं के उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं :-

(१)

अकर्मक ।	सा० सकर्मक ।	प्रे० सकर्मक ।
उड़ना ।	उड़ाना ।	उड़वाना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकर्मक।	सा० सकर्मक।	प्रे० सकर्मक।
गिरना।	गिराना।	गिरवाना।
चढ़ना।	चढ़ाना।	चढ़वाना।
दबना।	दबाना।	दबवाना।
बजना।	बजाना।	बजवाना।
चलना।	चलाना।	चलवाना।
उठना।	उठाना।	उठवाना।
लटकना।	लटकाना।	लटकवाना।
भटकना।	भटकाना।	भटकवाना।

(२)

जागना।	जगाना।	जगवाना।
कूदना।	कुदाना।	कुदवाना।
लेटना।	लिटाना।	लिटवाना
घूमना।	घुमाना।	घुमवाना।
सोना।	सुलाना।	सुलवाना।
डूबना।	डुबाना।	डुबवाना।
जीतना।	जिताना।	जितवाना।
पीना।	पिलाना।	पिलवाना।
देना।	दिलाना।	दिलवाना।
धोना।	धुलाना।	धुलवाना।
सीना।	सिलाना।	सिलवाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकर्मक।	सा० सकर्मक।	प्रे० सकर्मक।
रोना।	रुलाना।	रुलवाना।

(३)

कटना।	काटना।	कटवाना।
खुलना।	खोलना।	खुलवाना।
गड़ना।	गाड़ना।	गड़वाना।
मरना।	मारना।	मरवाना।

(४)

छुटना।	छोड़ना।	छोड़वाना।
टूटना।	तोड़ना।	तोड़वाना।
फटना।	फाड़ना।	फड़वाना।
फूटना।	फोड़ना।	फोड़वाना।
बिकना।	बेचना।	बिकवाना।

अध्याय १४।

संयुक्तक्रिया।

जब **दो** या **दो से अधिक क्रियाएँ** किसी **नवीन अर्थ** को उत्पन्न करने के लिये आपस में मिलकर **एक क्रिया** होजाती हैं तो ऐसी क्रिया को **संयुक्त क्रिया** कहते हैं। जैसे, (१) मोहन बोल उठा। (२) लल्लू खेलने लगा। (३) मैं सोचुका। (४) वह मुझे देख गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **बोलउठा, खेलने लगा, सो चुका, देखगया संयुक्त क्रिया** हैं।

नोट–सहायक क्रिया से **युक्तक्रिया** को **संयुक्त क्रिया** नहीं कहते क्योंकि **सहायक क्रियाओं** का प्रयोग **काल** बनाने के लिये होता है।

निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाएँ **संयुक्त क्रियाएँ** नहीं हैं।

(१) राम **आया होगा**। (संदिग्धभूत)
(२) मोहन **सो रहा है**। (तात्कालिक वर्तमान)
(३) लल्लू **गया होगा**। (अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत)

संयुक्त क्रियाएँ **सकर्मक** और **अकर्मक दोनों** प्रकार की **क्रियाओं** से बनती हैं। जैसे:–

अकर्मक क्रिया।

आना–देख आना। ले आना। नहा आना इत्यादि।
जाना–भाग जाना। सो जाना। लेट जाना इत्यादि।
पड़ना–देख पड़ना। जाग पड़ना। गिर पड़ना इत्यादि।
चुकना–खा चुकना। बोल चुकना। सो चुकना इत्यादि।

सकर्मक क्रिया।

पाना–जाने पाना। देखने पाना। खेलने पाना इत्यादि।
देना–चल देना। मार देना। गाड़ देना इत्यादि।
लेना–पढ़ लेना। सो लेना। बेच लेना इत्यादि।
करना–जाया करना। सोया करना। देखा करना इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयुक्त क्रियाएँ या तो **अकर्मक** होती हैं या **सकर्मक**। जैसेः—

अकर्मक।	**सकर्मक।**
भाग जाना।	खा जाना।
रोने लगना।	पढ़ने लगना।
चल देना।	मार देना।
जाया करना।	लिखा करना।

साधारण क्रिया के समान **बहुतसी संयुक्त क्रियाएँ** भी **भिन्न २ कालों** में लिखी जाती हैं। जैसे:—

राम पुस्तक पढ़ चुकता है।

राम पुस्तक पढ़ चुका।

राम पुस्तक पढ़ चुकेगा।

राम पुस्तक पढ़ चुका है।

राम पुस्तक पढ़ चुका होगा।

राम पुस्तक पढ़ चुका होता।

अध्याय १५।

सकर्मक क्रिया के भेद।

सकर्मक क्रिया **दो प्रकार** की होती है, (१) कर्त्तृप्रधान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) कर्मप्रधान । जैसे, (१) रामचन्द्रजी ने रावण को **मारा**। (२) रामचन्द्रजी से रावण **मारा गया** ।

ऊपर के दोनों वाक्यों के अर्थों में कोई भेद नहीं है। क्योंकि दोनों वाक्यों की क्रियाएँ सामान्य भूतकाल में हैं और जो व्यक्ति पहिले वाक्य में मारनेवाला है वही व्यक्ति दूसरे वाक्य में भी है और जो व्यक्ति पहिले वाक्य में मारा जाने वाला है वही व्यक्ति दूसरे वाक्य में भी है । केवल दोनों वाक्यों के रूप में भेद है । जब रामचन्द्रजी का वर्णन किया जायगा अर्थात् जब **रामचन्द्रजी** शब्द जोकि **कर्त्ता है प्रधान** होगा तो पहिले वाक्य का प्रयोग होगा । जैसे, सीताजी को लाने के लिये श्रीरामचन्द्रजी लंका को गये । वहाँ उन्होंने राक्षसों के साथ युद्ध किया और अन्त में उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) रावण को **मारा** । जब रावण का वर्णन किया जायगा अर्थात् जब **रावण** शब्द जोकि **कर्म है प्रधान** होगा तो दूसरे वाक्य का प्रयोग होगा । जैसे, रावण सीताजी को चुरा लेगया और इसी कारण वह (रावण) राम से **मारा गया** । जब क्रिया का **कर्त्ता प्रधान** हो तो वह **क्रिया कर्तृप्रधान** कही जाती है । जैसे, **मारा** । (कर्तृ=करनेवाला) । जब क्रिया का **कर्म प्रधान** हो तो वह **क्रिया कर्मप्रधान** कही जाती है । जैसे, **मारा गया** ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्तृप्रधान क्रियां से कर्मप्रधान क्रिया बनाने की रीति ।

कर्त्तृप्रधान क्रिया के सामान्यभूत के आगे **जाना** क्रिया के रूपों के प्रयोग से **कर्मप्रधान क्रिया** बनती है ।

कर्मप्रधान क्रिया के काल, वचन इत्यादि उसी प्रकार से बनते हैं जिस प्रकार से कर्त्तृप्रधान के । जैसे :—

कर्मप्रधान क्रिया के रूप ।

सामान्य रूप—खाया जाना । पढ़ा जाना । दिया जाना ।

धातु—खाया जा । पढ़ा जा । दिया जा ।

लाया जाना क्रिया के रूप भिन्न २ कालों, लिङ्गों इत्यादि में नीचे लिखे जाते हैं :—

(१) सामान्य वर्तमान ।

पुल्लिङ्ग ।	स्त्रीलिङ्ग ।
मैं लाया जाता हूँ ।	मैं लाई जाती हूँ ।
हम लाये जाते हैं ।	हम लाई जाती हैं ।
तू लाया जाता है ।	तू लाई जाती है ।
तुम लाये जाते हो ।	तुम लाई जाती हो ।
वह लाया जाता है ।	वह लाई जाती है ।
वे लाये जाते हैं ।	वे लाई जाती हैं ।

(२) तात्कालिक वर्तमान ।

मैं लाया जा रहा हूँ ।	मैं लाई जा रही हूँ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) संदिग्ध वर्तमान ।

कपड़ा लाया जाता होगा ।　　　टोपी लाई जाती होगी ।

(४) हेतुहेतुमद्‌वर्तमान ।

यदि वह लाया जाता हो ।　　　यदि वह लाई जाती हो ।

यदि मैं लाया जाता हूँ ।　　　यदि मैं लाई जाती हूँ ।

(१) सामान्यभूत ।

मैं लाया गया ।　　　मैं लाई गई ।

(२) आसन्नभूत ।

तुम लाये गये हो ।　　　तुम लाई गई हो ।

(३) पूर्णभूत ।

वे लाये गये थे ।　　　वे लाई गई थीं ।

(४) संदिग्धभूत ।

छाता लाया गया होगा ।　　　टोपी लाई गई होगी ।

(५) अपूर्णभूत ।

मैं लाया जाता था ।　　　मैं लाई जाती थी ।

मैं लाया जा रहा था ।　　　मैं लाई जा रही थी ।

(६) सामान्य हेतुहेतुमद्‌भूत ।

वे लाये जाते ।　　　वे लाई जातीं ।

(७) अन्तरितहेतुहेतुमद्‌भूत ।

मैं लाया गया होता ।　　　मैं लाई गई होती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८) अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत ।

मैं लाया जाता होता । मैं लाई जाती होती ।

(१) सामान्यभविष्यत् ।

मैं लाया जाऊँगा । मैं लाई जाऊँगी ।

(२) हेतुहेतुमद्भविष्यत् ।

छाता लाया जाय तो मैं देखूँ । किताब लाई जाय तो मैं पढ़ूँ ।

(३) सम्भाव्यभविष्यत् ।

सम्भव है कि वह लाया जाय । सम्भव है कि वह लाई जाय ।

सामान्यविधि क्रिया ।

कपड़ा लाया जाय । टोपी लाई जाय ।

परोक्षविधि क्रिया ।

तुम न पकड़ा जाइयो । तुम न पकड़ी जाइयो ।

तुम न पकड़ा जाना । तुम न पकड़ी जाना ।

पूर्वकालिक क्रिया ।

लाया जाकर । लाई जाकर ।

लाया जा करके । लाई जा करके ।

लाया जाके । लाई जाके ।

कर्त्तृप्रधान और कर्मप्रधान वाक्य ।

जिस वाक्य की क्रिया **कर्त्तृप्रधान** होती है उसे **कर्त्तृप्रधान वाक्य** कहते हैं । जैसे, राम किताब पढ़ता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस वाक्य की क्रिया **कर्मप्रधान** होती है उसे **कर्म-प्रधान वाक्य** कहते हैं। जैसे, राम से किताब पढ़ी जाती है।

निम्नलिखित उदाहरणों में **कर्त्तृप्रधान वाक्य कर्म-प्रधान** में पलटे गये हैं:—

कर्त्तृप्रधान।	**कर्मप्रधान।**
(१) राम मोहनको देखताहै।	(१) मोहन राम से देखा जाता है।
(२) वह किताब पढ़रहा है।	(२) उससे किताब पढ़ी जारही है।
(३) वे मुझको देखते होंगे।	(३) मैं उनसे देखा जाता हूँगा।
(४) मैंने उसे बुलाया।	(४) वह मुझसे बुलाया गया।
(५) मैंने उसे मारा है।	(५) वह मुझसे मारा गया है।
(६) वे किताब लाये थे।	(६) उनसे किताब लाई गई थी।
(७) मेरी बात सुनिये।	(७) मेरी बात सुनी जाय।
(८) मैं रोटी खा चुका हूँ।	(८) मुझसे रोटी खाई जाचुकीहै।
(९) मैं तुमको देखा करूँगा।	(९) तुम मुझसे देखे जाया करोगे।
(१०) इस पुस्तक को किसने फाड़ डाला ?	(१०) यह पुस्तक किससे फाड़ डाली गई ?

जब **कर्त्तृप्रधान वाक्य** में **दो कर्म** होते हैं तो **प्रधान कर्म कर्मप्रधान वाक्य** में **कर्त्ता की विभक्ति** (**प्रथमा**) पा जाता है और **कर्त्ता तृतीयाविभक्ति** पा जाता है और **गौणकर्म कर्म** ही बना रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे :—

कर्त्तृप्रधान वाक्य ।	कर्मप्रधान वाक्य ।
(१) रामने मोहन को पानी दिया ।	(१) मोहन को राम से पानी दिया गया ।
(२) उसने मुझको हिन्दी पढ़ाई ।	(२) मुझको उससे हिन्दी पढ़ाई गई ।

अभ्यास ।

निम्नलिखित **कर्त्तृप्रधान वाक्यों** को **कर्मप्रधान** में परिवर्तन करो :—

(१) लड़के गेंद खेलते हैं । (२) मोहन मुझे मारता है । (३) तुम उसे क्यों सताते हो ? (४) लल्लू ने मोहन को देखा । (५) मैं धोबी को बुला रहा था । (६) उसने मुझे देखा होगा । (७) वह मुझे न सतायेगा । (८) मैंने अपना चित्र उनको दिखलाया था । (९) तुमने उनको क्या सिखाया है ? (१०) मोहन को अभी बुलाइये । (११) यदि तुम मोहन को देखो तो उसे मेरे पास बुलाओ । (१२) मेरी किताब न पढ़िये ।

कर्मप्रधान वाक्य से कर्त्तृप्रधान वाक्य बनाने के नियम ।

जो शब्द **कर्मप्रधान वाक्य** में **कर्त्ता की विभक्ति** में होता है वह **कर्त्तृप्रधान वाक्य** में **कर्म** होजाता है और जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द **कर्मप्रधान वाक्य** में **तृतीया** विभक्ति में होता है वह **कर्तृप्रधान वाक्य** में **प्रथमा** विभक्ति में आ जाता है।

कर्मप्रधान।	**कर्तृप्रधान।**
मोहन लल्लू से पढ़ाया जाता है।	लल्लू मोहन को पढ़ाता है।
मुझसे किताब पढ़ी जारही है।	मैं किताब पढ़ रहा हूँ।

कर्मप्रधान वाक्य में **कर्त्ता कारक** जो **तृतीया** विभक्ति में आता है **बहुधा गुप्त** रहता है। जैसे :—

(१) जंगल में एक शेर देखा गया है। (लोगों से)
(२) वे लोग बुलाये गये हैं। (हम लोगों से)
(३) कल रात को दस चोर पकड़े गये। (लोगों से)
(४) पुस्तक अभी लाई जाय। (तुमसे वा आपसे)

ऊपर के वाक्यों के कर्तृप्रधान नीचे लिखे जाते हैं:—

(१) लोगों ने जंगल में एक शेर देखा है। (२) हम लोगों ने उन लोगों को बुलाया है। (३) लोगों ने कल रात को दस चोर पकड़े। (४) पुस्तक अभी लाओ वा लाइये।

अभ्यास।

निम्नलिखित **कर्मप्रधान वाक्यों** को **कर्तृप्रधान वाक्यों** में परिवर्तन करो:—

(१) मोहन किससे पढ़ाया जाता था ? (२) यह पुस्तक सोहन से लाई गई है। (३) मुझसे ऐसी बात नहीं सुनी जाती। (४) यदि तुम राम से देखे जाते तो तुम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवश्य मारे जाते। (५) अब तुम गुरुजी से न मारे जाओगे। (६) इस वर्ष बहुत से सर्प मारे जायँगे। (७) तुम लोग रात को क्यों जगाये जाते हो ? (८) छड़ी अभी तोड़ी जाय। (६) सर्प न मारा जाय।

निम्नलिखित वाक्यों को **उनके विपरीत वाक्यों** में परिवर्तन करो अर्थात् **कर्तृप्रधान वाक्यों** को **कर्मप्रधान** में और **कर्मप्रधान वाक्यों** को **कर्तृप्रधान** में।

(१) इस पुस्तक को आप क्यों बेचते हैं ? (२) मेरी टोपी किसने ली है ? (३) उसकी छड़ी तोड़ दीगई। (४) इस विषय पर बहुत सी पुस्तकें लिखी जा रही हैं। (५) वह कभी नहीं मेरी प्रार्थना सुनता था। (६) आज कल विचित्र समाचार सुनेजाते हैं।

नोट—अकर्मक क्रिया कर्मप्रधान में नहीं परिवर्तन हो सकती क्योंकि उसके कर्म नहीं होते। इसी कारण निम्नलिखित वाक्य कर्मप्रधान में नहीं परिवर्तन होसकते :—

(१) मोहन सो रहा था। (२) वह वहाँ पर है।

भावप्रधान क्रिया।

धातु का **भाव (अर्थ)** प्रकट करने के लिये **कर्मप्रधान क्रिया के समान भावप्रधान क्रिया** का प्रयोग होता है। जैसे, (१) मुझसे अब यहाँ नहीं रहा जाता। (२) रातभर किसी से नहीं जागा गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय १६ ।

कृदन्त और क्रियावाचक विशेषण ।

क्रिया के अन्त में प्रत्यय के प्रयोग से भिन्न २ प्रकार के शब्द बनते हैं जिनको **कृदन्त** अथवा **क्रियावाचक शब्द** कहते हैं । जैसेः—

	क्रिया ।	क्रियावाचक शब्द ।
(१)	पालना	पालक, पालनेवाला (कर्त्तृवाचक संज्ञा)।
	गाना	गवैया (कर्त्तृवाचक संज्ञा)।
(२)	कतरना	कतरनी (कर्त्तृवाचक संज्ञा)।
	खोदना	खोदनी (कर्त्तृवाचक संज्ञा)।
(३)	चलना	चाल (भाववाचक संज्ञा)।
	हँसना	हँसी (भाववाचक संज्ञा)।
(४)	खिलना	**खिलाहुआ** फूल (विशेषण)।
	लिखना	**लिखीहुई** पुस्तक (विशेषण)।
(५)	सोना	**सोताहुआ** बालक (विशेषण)।
	मुरझाना	**मुरझाताहुआ** फूल (विशेषण)।

(१) पालक, पालनेवाला, गवैया, कतरनी, खोदनी को **कर्त्तृवाचक शब्द** कहते हैं क्योंकि इनसे पालने और गाने आदि **काम करनेवाले** का बोध होता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) चाल और हँसी **भाववाचक संज्ञा** हैं जिनका वर्णन होचुका है।

(३) **खिला हुआ** और **लिखी हुई क्रियावाचक विशेषण** हैं क्योंकि क्रिया का अर्थ रखते हुये ये शब्द **विशेषण** का **काम** करते हैं।

(४) **सोता हुआ** और **मुरझाता हुआ** भी **क्रिया-वाचक विशेषण** हैं क्योंकि ये शब्द भी क्रिया का अर्थ रखते हुये **विशेषण** का काम देते हैं।

यहाँ पर **क्रियावाचक विशेषण शब्दों** का वर्णन किया जाता है क्योंकि इनके रूप प्रायः क्रिया के रूपों से मिलते जुलते हैं।

नं० ४ और नं० ५ के उदाहरणों के देखने से ज्ञात होता है कि **क्रियावाचक विशेषण दो प्रकार** के होते हैं।

खिला हुआ, लिखी हुई से **काम की समाप्ति** का बोध होता है।

जिस क्रियावाचक विशेषण से **काम की समाप्ति** बोध हो उसे **समाप्तिबोधक क्रियावाचक विशेषण** कहते हैं।

सोता हुआ, मुरझाता हुआ से **काम की असमाप्ति** का बोध होता है। जिस क्रियावाचक विशेषण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से काम की असमाप्ति का बोध हो उसे असमाप्ति-बोधक क्रियावाचक विशेषण कहते हैं।

समाप्तिबोधक क्रियावाचक विशेषण।

सामान्यभूत के आगे होना क्रिया के भूतकाल के प्रयोग से समाप्तिबोधक क्रियावाचक विशेषण बनता है। जैसे, मारा हुआ साँप, लिखी हुई पुस्तक, गिरे हुए पेड़।

कहीं कहीं होना क्रिया के रूप का प्रयोग नहीं भी होता। जैसे, बीता समय, मरा सर्प, मेरा लिखा पत्र।

कहीं कहीं संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे, गम् (जाना), गत (गया हुआ)। लिख (लिखना), लिखित (लिखा हुआ)।

साधारण विशेषण के समान समाप्तिबोधक क्रिया-वाचक विशेषण का प्रयोग विशेष्य के पहिले भी होता है और उसके पीछे भी। जैसे :—

विशेष्य के पहिले।

(१) यह मेरी पढ़ी पुस्तक है। (२) यह राम का लिखा पत्र है।

विशेष्य के पीछे।

(१) यह पत्र उसका लिखा है। (२) यह पुस्तक मेरी पढ़ी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार के और उदाहरण नीचे लिखे हुये हैं :—

(१) राम पुस्तक **लिये** है। (२) मोहन **लेटा** है। (३) लल्लू **खड़ा** है। (४) मोहन **बैठा** है।

ऊपर के वाक्यों में केवल **है** क्रिया है।

लिये, लेटा, खड़ा, बैठा **क्रियावाचक विशेषण** हैं। इन शब्दों से यह जाना जाता है कि **विशेष्य किस दशा** में हैं। **दौड़ा** है, **गया** है से यह जाना जाता है कि दौड़ने और जाने का काम **अभी हुआ** है। इसलिये **ये शब्द आसन्न भूतकाल** में हैं।

निम्नलिखित प्रकार के वाक्यों में इस प्रकार के विशेषण के रूप सदा **एकारान्त** होते हैं:—

(१) रामको **आये हुए** १० वर्ष बीते। (२) उसको विना **खाये** दो दिन बीत गये। (३) मुझे यहाँ **बैठे** ३ घंटे होगये।

असमाप्तिबोधक क्रियावाचक विशेषण।

असमाप्तिबोधक क्रियावाचक विशेषण, जिनको **क्रिया-द्योतक विशेषण** भी कहते हैं, विशेष्य के लिङ्ग, वचन इत्यादि के अनुसार हेतुहेतुमद्भूत के आगे **होना क्रिया** के भूतकाल के प्रयोग से बनते हैं। जैसे, (१) मैंने **मुरझाता हुआ** फूल देखा। (२) उस **सोती हुई** लड़की को मत जगाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहीं कहीं **होना क्रिया** का प्रयोग नहीं भी होता। जैसे, (१) **सोते** बालकों को मत जगाओ। (२) मैंने राम को **हँसते** देखा।

ऊपर के वाक्यों के देखने से ज्ञात होता है कि **इस प्रकार के विशेषण** भी **विशेष्य** के **पहिले** और **उसके पीछे** लिखे जाते हैं।

जिस प्रकार से कुछ **साधारण विशेषण** अपने **विशेष्य** की दशा प्रकट करते हैं उसी प्रकार से **असमाप्ति-बोधक क्रियावाचक विशेषण** भी अपने **विशेष्य** की दशा प्रकट करते हैं। जैसे:—

साधारण विशेषण।	असमाप्तिबोधक क्रि० वा० वि०
(१) राम **दुखी** आया।	(१) राम **खेलता** आया।
(२) मैंने मोहन को **बीमार** पाया।	(२) मैंने मोहन को **सोता** पाया।
(३) पंडितजी **उदास** गये।	(३) पंडितजी **हँसते** गये।

कहीं कहीं **इस प्रकार के विशेषण का प्रयोग सम्बन्ध** की **अवस्था** में **विना विशेष्य के** होता है इस अवस्था में ये सदा **एकारान्त** होते हैं। जैसे, (१) मेरे **रहते** तुम नहीं जा सकते। (२) राम के **आते** ही मोहन बैठ गया।

जब इस प्रकार के **विशेषण का विशेष्य कर्म कारक**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में होता है तब यह अधिकतर **एकारान्त** होता है। जैसे, (१) मैंने राम को **पढ़ते** देखा। (२) राम ने मुझे **खेलते** देखा।

अर्थ में अधिकता प्रकट करने के लिये कहीं कहीं **क्रियावाचक विशेषण** का प्रयोग **दो बार** होता है। इस दशा में भी यह **एकारान्त** ही होता है। जैसे, (१) राम **पढ़ते** २ सो गया। (२) वह **बोलते बोलते** घवड़ा गया। (३) तुम **बैठे** २ क्या करते हो। (४) वह **खड़े खड़े** मुझे देखता है।

क्रियावाचक विशेषण के कर्म।

सकर्मक क्रिया से बने हुए **क्रियावाचक विशेषण कर्म** भी रख सकते हैं। जैसे, (१) मैं इस **पुस्तक** को पढ़ते पढ़ते घबड़ा गया। (२) मोहन **आम** खाते चला गया।

अध्याय १७।

ने का प्रयोग और क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष।

ने कर्त्ता कारक का चिह्न है जिसका प्रयोग कहीं होता है और कहीं नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने का प्रयोग।

अपूर्णभूतकाल को छोड़ शेष भूतकालों में सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के आगे ने लगता है। जैसे, राम उसको देखता था। यहाँ पर ने नहीं आया और शेष भूतकालों में ने आता है। जैसे:—

(१) राम ने उसे देखा। (सामान्यभूतकाल)
(२) राम ने उसे देखा है। (आसन्नभूत)
(३) राम ने उसे देखा था। (पूर्णभूत)
(४) राम ने उसे देखा होगा। (संदिग्धभूत)
(५) यदि राम ने उसे देखा हो। (आसन्नहेतुहेतुमद्भूत)
(६) यदि राम ने उसे देखा होता। (अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत).

नोट—यदि एकही क्रिया के कई कर्त्ता हों तो ने का प्रयोग केवल अन्तिमकर्त्ता के साथ होता है। जैसे, राम, मोहन, सोहन ने मुझे देखा।

क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष।

जिस क्रिया के कर्त्ता के साथ ने का प्रयोग नहीं होता उस क्रिया का लिङ्ग, वचन और पुरुष वही होता है जो उसके कर्त्ता का लिङ्ग, वचन और पुरुष होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन ।	बहुवचन ।
उ० पु० मैं आम लाया हूँ ।	हम आम लाये हैं ।
म० पु० तू आम लाया है ।	तुम आम लाये हो ।
अ० पु० वह आम लाया है ।	वे आम लाये हैं ।

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन ।	बहुवचन ।
उ० पु० मैं आम लाई हूँ ।	हम आम लाई हैं ।
म० पु० तू आम लाई है ।	तुम आम लाई हो ।
अ० पु० वह आम लाई है ।	वे आम लाई हैं ।

इस दशा में केवल **आदरयोग्य एकवचन कर्त्ता** के साथ **क्रिया बहुवचन** होती है । जैसे:—

पु० पंडितजी आम लाये हैं। आप कहाँ से आम लाये हैं?

स्त्री० आपकी माता जी कहाँ गई थीं ? आप कहाँ से आई हैं ?

परन्तु **ने सहित कर्त्ता** की **क्रिया** के **लिङ्ग, वचन और पुरुष उसके कर्त्ता** के **लिङ्ग, वचन और पुरुष** के **अनुसार कदापि नहीं** होते ।

इस दशा में **आदरयोग्य कर्त्ता** की **क्रिया** का **रूप बहुवचन** में भी **नहीं** होता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने युक्त कर्त्ता की क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष या तो कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं या क्रिया पुल्लिङ्ग, एकवचन और अन्य पुरुष में होती है।

(१) निम्नलिखित दशा में ने युक्त कर्त्ता की क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं।

यदि कर्म संज्ञा शब्द हो और उसके साथ की विभक्ति का प्रयोग न हुआ हो तो ने युक्त कर्त्ता की क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष उसके कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं। जैसे:—

(१) सामान्यभूत।

(१) उस लड़की ने एक टुकड़ा खाया। (२) उस लड़की ने कई टुकड़े खाये। (३) उस लड़के ने एक किताब पढ़ी। (४) उस लड़के ने कई किताबें पढ़ीं।

(२) आसन्नभूत।

(१) उस स्त्री ने एक शेर देखा है। (२) उस स्त्री ने कई शेर देखे हैं। (३) उस आदमी ने मेरी छड़ी गिरा दी है। (४) उस आदमी ने मेरी छड़ियाँ गिरा दी हैं।

(३) पूर्णभूत।

(१) पंडित जी ने एक पत्र लिखा था। (२) पंडित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जी ने कई **पत्र लिखे थे**। (३) पंडित जी ने **पुस्तक पढ़ी थी**। (४) पंडित जी ने **पुस्तकें पढ़ी थीं**।

(४) संदिग्धभूत।

(१) लड़कों ने **कपड़ा देखा होगा**। (२) लड़कों ने **कपड़े देखे होंगे**। (३) लड़कों ने **बिल्ली देखी होगी**। (४) लड़कों ने **बिल्लियाँ देखी होंगी**।

(५) आसन्नहेतुहेतुमद्भूत।

(१) यदि उन्होंने **छाता देखा हो**। (२) यदि उन्होंने **छाते देखे हों**। (३) यदि तुमने **टोपी देखी हो**। (४) यदि तुमने **टोपियाँ देखी हों**।

(६) अन्तरितहेतुहेतुमद्भूत।

(१) यदि स्त्री ने **बकरा देखा होता**। (२) यदि स्त्री ने **बकरे देखे होते**। (३) यदि आपके भाई ने **बकरी देखी होती**। (४) यदि आपके भाई ने **बकरियाँ देखी होतीं**।

नोट—(१) निम्नलिखित वाक्यों में **बात कर्म गुप्त** है इसलिये **क्रियायें एकवचन स्त्रीलिङ्ग** में हैं।

(१) उन्होंने एक न मानी। (२) पंडित जी ने मेरी एक न सुनी। (३) उन्होंने मन मानी कही।

(२) यदि **कर्म कई शब्द** हों तो क्रिया का **लिङ्ग, वचन अन्तिम कर्म** के **लिङ्ग, वचन** के **अनुसार**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है। जैसे, राम ने मुझे एक छड़ी, दो टोपियाँ और तीन छाते दिये।

(३) यदि क्रिया द्विकर्मक हो तो उसका लिङ्ग, वचन प्रधान कर्म के लिङ्ग, वचन के अनुसार होता है। जैसे, (१) मैंने उन्हें हिन्दी पढ़ाई। (२) मैंने तुम्हें कपड़ा दिया था।

(२) निम्नलिखित दशाओं में ने युक्त कर्त्ता की क्रिया सदा एकवचन पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में होती है :—

(१) यदि कर्म को विभक्ति के सहित हो। जैसे, (१) इस किताब को उस लड़की ने पढ़ा है। (२) मैंने उन बालकों को नहीं पढ़ाया। (३) उन्होंने कुत्ते को भगाया होगा। (४) यदि तुमने उन स्त्रियों को देखा हो तो कहो।

(२) यदि कर्म सर्वनाम शब्द हों (चाहे वे किसी लिङ्ग, वचन में हों)। जैसे, (१) उन्हें तुमने कहाँ देखा है? (२) तुम्हें कल किसने मारा था? (३) वह स्त्री कहाँ है? मैंने तो उसे बुलाया था। (४) ये वही स्त्रियाँ हैं जिन्हें मैंने देखा था।

(३) यदि कर्म क्रियार्थक संज्ञा हो। जैसे, (१) राम ने तैरना नहीं सीखा। (२) उन्होंने मेरा पढ़ना न सुना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) यदि कर्म **वाक्य** हो। जैसे, (१) उन्होंने कहा कि ज़मीन गोल है। (२) लल्लू ने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम। (३) उन लोगों ने देखा कि कुत्ता सो रहा है। (४) उन्होंने समझाया कि झगड़ा करना बुरा है।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों को **शुद्ध** करो और उनके **अशुद्ध होने के कारण** भी बताओ:–

(१) राम ने यह किताब नहीं पढ़ा है। (२) मैंने अनार नहीं खाया हूँ। (३) तुमने बिल्ली नहीं देखे हो। (४) हमने पानी नहीं पिये हैं। (५) उन्होंने चिट्ठियाँ नहीं लिखे हैं। (६) राम ने मेरे पास एक छड़ी भेजा था। (७) लल्लू ने कोशिश किया होगा। (८) उन्होंने इन किताबों को क्यों फाड़ डालीं ? (९) राम ने क्यों उनको अपने घर बुलाये हैं ? (१०) मोहन ने अच्छा पढ़ना नहीं सीखे हैं। (११) पंडित जी ने कहे कि कल तुम लोग मत आना। (१२) चलिये आपको गुरु जी बुलाये हैं। (१३) पंडित जी कहे हैं कि तुम लोग शीघ्र लौट आना। (१४) कल मास्टर जी मुझे अपना चित्र दिखलाया था। (१५) उस दिन हेडमास्टर साहेब ने सत्यता पर व्याखान दिये थे। (१६) आप यह चिट्ठी किससे पढ़वाये। (१७) जब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मास्टर जी प्रश्न किये तो मैंने उसका उत्तर न दे सका। (१८) मुझसे आपके पिता जी फूल माँगे हैं। (१६) मैं अभीतक आपके पैसे नहीं लौटाया हूँ। (२०) यह बात तुमसे कौन कहा था ? (२१) उस नगर में आपने कितनी घोड़ियाँ ख़रीदे ? (२२) मैंने अभी स्नान नहीं किया हूँ। (२३) मैं चार रुपये में यह किताब मोल लिया हूँ। (२४) यदि राम मुझे पहिचाना होता तो अवश्य बुलाता। (२५) अपना घोड़ा आपने कितने को बेचे ? (२६) वे मुझे बहुत सी किताबें दी हैं। (२७) ये पाठशालायें कौन बनवाये हैं ? (२८) तुमने कुल नारंगियाँ खागये। (२६) उन्हों ने मेरे लिये बहुत सी पुस्तकें लाई हैं। (३०) लल्लू ने बोला कि मैं भी वहाँ था। (३१) उस समय आपके भ्राता जी सबकी दोहाई दिये। (३२) पिताजी कल मुझे बाज़ार नहीं जाने दिये। (३३) यदि आप मेरे भाई को देखे हों तो कृपा करके उसे बुलालाइये। (३४) पंडित जी ने मुझे लिखना सिखाचुके हैं। (३५) तुम्हारे कारण कल मैंने चिट्ठी नहीं लिखसका। (३६) मोहन ने मुझे देखता तो अवश्य पकड़लेता। (३७) मैंने तुम्हारी बातें अबतक नहीं भूलीं। (३८) जिस समय लड़के ने हिन्दी पढ़ता था उस समय उसके पास कोई नहीं जाने पाता था। (३६) स्त्रियों ने बोला कि हम लोग शेर नहीं देखी हैं। (४०) उन लोगों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने मेरी एक न सुने। (४१) कल बाज़ार में मैंने दो टोपियाँ और तीन कुर्ते ख़रीदा।

क्रिया शब्दों का पदान्वय।

(१) वे लोग जौनपुर से पढ़ने के लिये आये हैं।

आये हैं—अकर्मक क्रिया, आसन्नभूत, कर्तृप्रधान, बहुवचन, पुल्लिङ्ग, अन्यपुरुष, इसका कर्त्ता **वे लोग** है।

(२) राम ! पानी पीकर चलदो।

पीकर—सकर्मक पूर्वकालिक क्रिया।

चलदो—(संयुक्त) अकर्मक सामान्य विधि क्रिया, कर्तृप्रधान, एकवचन, पुल्लिङ्ग, मध्यमपुरुष, इसका कर्त्ता **तुम** गुप्त है।

(३) यहाँ मत सोना नहीं तो पकड़ी जाओगी।

सोना—अकर्मक परोक्षविधि क्रिया, कर्तृप्रधान, बहुवचन, स्त्रीलिङ्ग, मध्यमपुरुष, इसका कर्त्ता **तुम** गुप्त है।

पकड़ी जाओगी—सकर्मक क्रिया, सामान्य भविष्यत्काल, कर्मप्रधान, बहुवचन, स्त्रीलिङ्ग, इसका कर्त्ता **तुम** गुप्त है।

(४) मोहन अपने हाथ में छड़ी लिये है।

है—अकर्मक क्रिया, सामान्य वर्तमान, कर्तृप्रधान, एकवचन, पुल्लिङ्ग, अन्यपुरुष, इसका कर्त्ता **मोहन** है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) यह पत्र मैं राम से पढ़वाऊँगा ।

पढ़वाऊँगा—सकर्मक क्रिया (प्रेरणार्थक), सामान्य भविष्यत्काल, कर्त्तृप्रधान, एकवचन, पुल्लिङ्ग, उत्तमपुरुष, इसका कर्त्ता **मैं** है ।

(६) उसका लिखना अच्छा नहीं होता ।

होता—अकर्मक क्रिया, सामान्य वर्तमान, कर्त्तृप्रधान, एकवचन, पुल्लिङ्ग, अन्यपुरुष, इसका कर्त्ता **लिखना** है ।

(७) मोहन ने अपनी दोनों गायें बेच दीं ।

बेच दीं—सकर्मक क्रिया, सामान्य भूत, कर्त्तृप्रधान, अन्यपुरुष, स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन, इसका कर्म **गायें** है ।

(८) राम ने लड़कियों को अपने घर बुलाया है ।

बुलाया है—सकर्मक क्रिया, आसन्नभूत, कर्त्तृप्रधान, अन्यपुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन, इसका कर्म **लड़कियों को** है ।

अध्याय १८ ।

अव्यय ।

जिन शब्दों के रूप सदा एक से बने रहते हैं अर्थात् जिनमें लिङ्ग, वचन और कारक से कोई विकार नहीं होता उन्हें **अव्यय** कहते हैं । जैसे आज, कल, शीघ्र इ० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय के भेद ।

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं:—

(१) क्रियाविशेषण, (२) सम्बन्धबोधक, (३) समुच्चयबोधक, (४) विस्मयादिबोधक, (५) प्रादि ।

(१) क्रियाविशेषण अव्यय ।

जो अव्यय **क्रिया** के **विशेषण** होते हैं उन्हें **क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं । जैसे, (१) राम अच्छा गाता है । (२) मोहन अभी आवेगा ।

ऊपर के वाक्यों में **अच्छा गाता है** का विशेषण है और **अभी आवेगा** का विशेषण है ।

क्रियाविशेषण अव्यय के भेद ।

क्रियाविशेषण अव्यय **छः प्रकार** के होते हैं :—

(१) कालवाचक, (२) स्थानवाचक, (३) प्रकारवाचक, (४) परिमाणवाचक, (५) स्वीकारवाचक, (६) निषेधवाचक ।

(१) कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।

जो अव्यय **क्रिया के सिद्ध होने का समय** बताते हैं उनको **कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं । जैसे, (१) मोहन आज आवेगा । (२) वह नित्य खेला करता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर के वाक्यों में **आज** से आने का समय और **नित्य** से खेलने का समय जाना जाता है ।

निम्नलिखित शब्द **कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** हैं:–

अब, कब, कभी, जब, तब, आज, कल, परसों, तरसों, नित्य, सदा, सर्वदा, शीघ्र, तुरन्त, कभी, पूर्व, पश्चात्, बहुधा, परम्परा, बार बार, बारम्बार ।

नोट–निम्नलिखित शब्द **संज्ञा** हैं क्योंकि ये **समय के नाम** हैं :–

दिन, रात, सवेरा, सन्ध्या, दोपहर, वर्ष, सप्ताह, मास इत्यादि ।

(१) सारा दिन बीत गया । (कर्त्ता)
(२) रात होगई । (कर्त्ता)
(३) सवेरा हुआ । (कर्त्ता)

परन्तु दिन, रात, सन्ध्या, दोपहर जब किसी **कारक** की **अवस्था** में **नहीं होते** तो **क्रियाविशेषण** होते हैं । जैसे, (१) मोहन **दिनभर** खेला किया । (२) मैं सारी **रात** चिल्लाता रहा । (३) मैं **दोपहर** को स्नान करता हूँ । (४) वे **शाम को** आवेंगे ।

निश्चय वा **दृढ़ता** जनाने के लिये **जब** का **जभी, ज्योंही; तब** का **तभी, त्योंही; अब** का **अभी**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होजाता है। शेष कालवाचक अव्ययों के साथ **ही** का प्रयोग होता है। जैसे, आज ही, पूर्व ही इत्यादि।

एकही अव्यय को **दोहराने** से भी **निश्चय** जाना जाता है। जैसे, (१) राम कभी २ आता है। (२) मैं बार २ उनके पास जाता हूँ। (३) जब २ तुम आये तब २ मैंने तुम्हें धन दिया।

अनिश्चय जनाने के लिये दो अव्यय शब्दों के मध्य में **न** का प्रयोग होता है। जैसे, कभी न कभी। **कुछ कालवाचक अव्ययों** का **प्रयोग संज्ञा** के **समान** होता है। जैसे :—

(१) मोहन **कब** से पढ़ता है। (अपादान कारक)
(२) यह पुस्तक **कल** के लिये रख दो। (सम्प्रदान)
(३) मोहन **दोपहर** तक आ जायगा। (अधिकरण)
(४) **आज** की रोटी अच्छी हैं। (सम्बन्ध)
(५) यह काम **परसों पर** मत छोड़ो। (अधिकरण)

जिस वाक्य के पहिले अंश में **जब** का प्रयोग होगा उस वाक्य के दूसरे अंश में **तब** का प्रयोग होना आवश्यक है। जैसे, जब आप आवेंगे तब मैं आऊँगा।

नोट—कहीं कहीं **जब** का प्रयोग **यदि** के **बदले** होता है। इस अवस्था में **जब** के साथ **तो** का प्रयोग होता है। जैसे, जब (यदि) आप पढ़ें तो मैं पढ़ूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी तरह **जब जब** के साथ **तब तब** का, **जब तक** के साथ **तब तक** का, **ज्योंही** के साथ **त्योंही** का प्रयोग होता है। जैसे, (१) **जब** जब तुम आये **तब तब** मैंने तुम्हारी सहायता की। (२) **जब तक** तुम सोवोगे **तब तक** मैं बैठा रहूँगा। (३) **ज्योंही** राम आया **त्योंही** मैं भागा।

नोट–ऊपर की अवस्था में कहीं कहीं वाक्य के दूसरे अंश में **क्रियाविशेषण गुप्त** रहते हैं। जैसे, (१) जब तक तुम सोवोगे मैं जागता रहूँगा। (२) ज्योंही राम आया मैं भागा।

(२) स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय।

जो अव्यय क्रिया के सिद्ध होने का स्थान बताते हैं उनको **स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं। जैसे, (१) राम यहाँ आया। (२) मोहन दूर भागा।

ऊपर के वाक्यों में **यहाँ** से आने का स्थान और **दूर** से भागने का स्थान जाना जाता है।

निम्नलिखित शब्द **स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय हैं**:–

यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहीं, इधर, उधर, किधर, जिधर, तिधर, सर्वत्र, निकट, पास, दूर, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, दाहिने, बाएँ, बाहर, भीतर, वार वार, पार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चय जनाने के लिये **यहाँ** का **यहीं**, **वहाँ** का **वहीं**, **तहाँ** का **तहीं** होजाता है। शेष शब्दों के साथ **ही** का प्रयोग होता है। जैसे, निकट ही, इधर ही इत्यादि।

कुछ अव्यय शब्दों के दोहराने से भी **निश्चय** जाना जाता है। जैसे, कहीं कहीं, जहाँ जहाँ, जहाँ कहीं।

अनिश्चय जनाने के लिये दो अव्यय शब्दों के मध्य में **न** का प्रयोग होता है। जैसे, कहीं न कहीं।

कुछ **स्थानवाचक अव्यय शब्दों** का प्रयोग **संज्ञा** के समान होता है। जैसे, (१) राम **यहाँ से** भागा (अपादान)। (२) यह वस्तु **वहाँ के लिये** नहीं है (सम्प्रदान)। (३) **ऊपर का** दोहा पढ़ो (सम्बन्ध)।

जहाँ के साथ **वाक्य के दूसरे अंश में तहाँ** का, **जिधर** के साथ **तिधर** का, **जहाँ जहाँ** के साथ **तहाँ तहाँ** का प्रयोग होता है। जैसे, (१) जहाँ तुम जाओगे तहाँ मैं भी जाऊँगा। (२) जहाँ जहाँ वह जायगा तहाँ तहाँ मैं भी जाऊँगा। (३) जिधर तुम चलोगे तिधर मैं भी चलूँगा।

परन्तु इस अवस्था में आज कल **तहाँ** के बदले **वहाँ** और **तिधर** के बदले **उधर** का प्रयोग होता है। जैसे, जहाँ तुम जाओगे वहाँ मैं भी जाऊँगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) प्रकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय।

जो अव्यय क्रिया के सिद्ध होने की रीति वा प्रकार बताते हैं उनको **प्रकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं। जैसे, (१) मोहन **धीरे धीरे** आया। (२) मोहन **अच्छा** गाता है।

ऊपर के वाक्यों में **धीरे धीरे** से आने की और **अच्छा** से गाने की **रीति** ज्ञात होती है अर्थात् इनसे यह जाना जाता है कि आने और गाने का काम किस प्रकार से हुआ है।

निम्नलिखित शब्द प्रकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय हैं :—

अच्छा, बुरा, ज्यों, त्यों, क्यों, क्योंकर, कैसे, कैसा, जैसे, जैसा, तैसे, तैसा, वैसे, वैसा, केवल, अचानक, झटपट, ठीक, सचमुच, झूठमूठ, वृथा, यथार्थ, सेतमेत, परस्पर, निरर्थक, धीरे धीरे, साक्षात्, अनायास, शीघ्र।

नोट—अच्छा, बुरा, तेज़, कैसा, जैसा इत्यादि शब्दों का प्रयोग जब **संज्ञा** के साथ होता है तब ये शब्द **विशेषण** होते हैं और इस कारण उनके रूप में भेद भी होजाता है और जब इनका प्रयोग **क्रिया** के साथ होता है, अर्थात् जब ये शब्द क्रिया के विशेषण होते हैं, तब ये **क्रियाविशे-**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षण होते हैं और इस कारण इनके रूप में भी भेद नहीं होता। जैसे :–

विशेषण।

(१) मोहन अच्छा बालक है।

(२) यह बात बुरी है।

(३) कैसा घोड़ा, कैसे घोड़े।

(४) ऐसा लड़का, ऐसे लड़के।

प्रकारवाचक क्रियाविशेषण।

(१) मोहन ने अच्छा गाया।

(२) तुमने बुरा पढ़ा।

(३) कैसा पढ़ा, कैसा लिखा।

(४) ऐसा गाया, ऐसा रोया।

कैसा, कैसे, जैसा, जैसे, वैसा, वैसे इत्यादि के भेद।

कैसा=किस प्रकार का। कैसे=किस प्रकार से।

जैसा=जिस प्रकार का। जैसे=जिस प्रकार से।

जैसे:–

मोहन ने कैसा गाया? अर्थात् उसका गाना बुरा था या अच्छा। मोहन ने कैसे गाया? अर्थात् उसने धीरे धीरे या ज़ोर से इत्यादि।

इसी प्रकार का भेद **जैसा, जैसे, वैसा, वैसे** इत्यादि शब्दों में है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चय जनाने के लिये **ही** का प्रयोग होता है। जैसे, कैसेही, ठीकही इत्यादि।

इस प्रकार के कुछ **अव्यय शब्दों के दोहराने** से भी **निश्चय** जाना जाता है। जैसे:—

ज्यों ज्यों, त्यों त्यों; ज्यों का त्यों।

ज्यों ज्यों का प्रयोग **त्यों त्यों** के साथ, **जैसे** का **तैसे** के साथ, **जैसा** का **तैसा** के साथ होता है।

जैसे, (१) ज्यों ज्यों वह बुड्ढा होता गया त्यों त्यों निर्बल होता गया।

(२) जैसे तुम जाओगे तैसे मैं भी जाऊँगा।

(३) जैसा तुम पढ़ोगे तैसा मैं भी पढ़ूँगा।

नोट—आज कल **तैसे, तैसा** के बदले **वैसे, वैसा** का प्रयोग होता है।

निम्नलिखित शब्दसमूह भी **प्रकारवाचक क्रिया-विशेषण अव्यय** हैं:—

अव्यय।	**प्रयोग।**
सुखपूर्वक।	(१) सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करो।
सहज में।	(२) मैंने यह काम सहज में किया।
झट से।	(३) वह झट से बैठ गया।
क्रम से।	(४) राम और कल्लू क्रम से ४ और ५ मील चले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धीरे से। (५) धीरे से चले जाओ।
एक एक करके। (६) वे सब एक एक करके आये।
बात की बात में। (७) वह बात की बात में लौट आया।
पीठ के बल। (८) मोहन पीठ के बल गिरा।
हो न हो। (९) हो न हो राम यहाँ आया हो।

(४) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय।

जो अव्यय **क्रिया का परिमाण** बताते हैं उनको **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं। जैसे, (१) राम **बहुत** हँसता है। (२) यह बच्चा **कम** रोता है।

ऊपर के वाक्यों में **बहुत** और **कम** शब्द से हँसने और रोने का **परिमाण (अन्दाज़ा)** जाना जाता है।

निम्नलिखित शब्द परिमाणवाचक अव्यय हैं :–

अति, अत्यन्त, थोड़ा, बहुत, कम, बहुधा, कुछ, अधिक, तनिक, अतिशय, इतना, उतना, कितना, जितना, तितना, इत्यादि, प्रायः, निपट, निरा, केवल, एक बेर, दो बेर, तीन बेर।

थोड़ा, बहुत, अधिक इत्यादि शब्दों का **प्रयोग** जब **संज्ञा** के साथ होता है तब ये शब्द **परिमाणवाचक विशेषण** होते हैं और जब **इनका प्रयोग** क्रिया के साथ होता है तब ये **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

परिमाणवाचक विशेषण ।	परिमाणवा० क्रि० वि० ।
(१) बहुत पानी, थोड़ी चीनी, इतने घोड़े ।	(१) बहुत हँसा, थोड़ा पढ़ा, इतना दौड़ा ।

ही के प्रयोग से और दोहराने से निश्चय जाना जाता है । जैसे:—

(१) थोड़ा ही पढ़ो । (२) इतना ही हँसो ।

(१) थोड़ा थोड़ा पढ़ो । (२) वह कुछ कुछ पढ़ सकता है ।

इस प्रकार के शब्दों के मध्य में न के प्रयोग से अनिश्चय जाना जाता है । जैसे, कुछ न कुछ ।

विशेषण और प्रकारवाचक क्रियाविशेषण शब्दों के साथ बहुत, बड़ा, कम, कुछ, अधिक, अत्यन्त, केवल, इतना इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है । जैसे:—

विशेषण ।	प्रकारवाचक क्रि० वि० ।
यह छड़ी बहुत लम्बी है ।	उसने बहुत अच्छा पढ़ा ।
वह पुस्तक अत्यन्त सुन्दर है ।	वह अत्यन्त शीघ्रता से आया ।

जितना के साथ तितना वा उतना का प्रयोग होता है । जैसे, जितना तुम पढ़ोगे उतना मैं भी पढ़ूँगा ।

जब परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय शब्दों का प्रयोग विभक्ति के साथ होता है तब उनका प्रयोग संज्ञा के समान कहा जाता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

(१) राम ने **बहुतों को** पढ़ा दिया है।

(२) उसने **कितनों को** यहाँ से भगा दिया।

(५) स्वीकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय।

जिस अव्यय से **स्वीकार** जाना जाता है उसे **स्वीकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं।

जैसे:—

(१) तुम आवोगे ?   **हाँ,** मैं आऊँगा।

(२) तुम घर जाओ।   **अच्छा,** मैं जाता हूँ।

ऊपर के वाक्यों में **हाँ** और **अच्छा** से यह जाना जाता है कि जानेवालों को जाना स्वीकार है।

निम्नलिखित शब्द **स्वीकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** हैं:—

हाँ, अच्छा, जी, जी हाँ, अवश्य, निस्सन्देह, तो।

(६) निषेधवाचक क्रियाविशेषण अव्यय।

जिस अव्यय से क्रिया के होने में निषेध पाया जाता है उसे **निषेधवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** कहते हैं। जैसे, मैं **नहीं** जा सकता।

निम्नलिखित शब्द **निषेधवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** हैं:—नहीं, न, मत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—मत का प्रयोग **विधि क्रिया** के साथ **प्रथम** और **मध्यमपुरुष** में होता है।

जैसे, तुम मत जाओ, आप मत आइये।

न का प्रयोग **सब दशाओं** में होता है। जैसे:—

(१) मैं न जाऊँगा या नहीं जाऊँगा।

(२) मैं न आता या नहीं आता।

(३) इस समय न जाइये।

नोट—कब, कहाँ, क्यों, किसलिये, कैसे, कैसा, कितना से **प्रश्न** जाना जाता है।

इसलिये ये शब्द **प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण अव्यय** भी कहे जा सकते हैं। जैसे:—

(१) तुम **कब** आये ?

(२) वह **कहाँ** गया ?

(३) तुम **क्यों** घर गये ?

(४) तुम **क्योंकर** या **किसलिये** यहाँ आये ?

(५) वह **कैसे** आया ?

(६) तुमने **कैसा** पढ़ा ?

(७) मोहन **कितना** चला ?

(२) सम्बन्धबोधक अव्यय।

जिस अव्यय से **संज्ञा** वा **सर्वनाम** का **सम्बन्ध** वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाता है उसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं । जैसे, मेरी पुस्तकें मोहन के पास हैं ।

ऊपर के वाक्य में **पास** शब्द से **मोहन** का सम्बन्ध **पुस्तक** के साथ जाना जाता है । इसलिये **पास** शब्द **सम्बन्धवाचक अव्यय** है ।

निम्नलिखित **सूची** में **सम्बन्धवाचक अव्यय** और उनके **प्रयोग** दिखलाये गये हैं । इन उदाहरणों के देखने से ज्ञात होगा कि इस प्रकार के कुछ अव्यय शब्दों के पहिले **की** विभक्ति का **प्रयोग** होता है और अधिकांश शब्दों के साथ **के** का । कुछ शब्दों के साथ विभक्ति का प्रयोग **होता भी है** और **नहीं भी होता** और कुछ शब्दों के **आगे भी विभक्ति का प्रयोग** होता है :–

सम्बन्धवाचक अव्यय शब्द ।	संज्ञा वा सर्वनाम के साथ प्रयोग ।
ओर ।	उसकी ओर, राम की ओर, मेरी ओर ।
नाईं ।	इस पुस्तक की नाईं ।
सामने ।	उसके सामने बैठो । मेरे सामने वह क्या है ?
आगे ।	मोहन के आगे । मेरे आगे ।
पीछे ।	राम के पीछे । तुम्हारे पीछे ।
पूर्व ।	एक वर्ष के पूर्व ।
उपरान्त ।	दो दिन के उपरान्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर । पेड़ के ऊपर, मेरे ऊपर ।

नीचे । पेड़ के नीचे, कलेक्टर के नीचे ।

तले । पेड़ के तले ।

भीतर । घर के भीतर ।

पास । मेरे पास, राम के पास ।

निकट । नगर के निकट, उसके निकट ।

समीप । उसके समीप, मेरे समीप ।

लगभग । दो मास के लगभग ।

आसपास । ग्राम के आसपास ।

लों (तक) । दो वर्ष लों (तक) ।

निमित्त । राम के निमित्त, मेरे निमित्त ।

कारण । मेरे कारण, उसके कारण ।

मारे । जाड़े के मारे, मारे क्रोध के ।

द्वारा । राम के द्वारा, उसके द्वारा ।

समान । मेरे समान, इस पुस्तक के समान ।

तुल्य । उसके तुल्य ।

सदृश । इस लड़की के सदृश ।

अनुसार । मेरी आज्ञा के अनुसार ।

अनुकूल । मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल ।

प्रतिकूल । मेरी आज्ञा के प्रतिकूल ।

विरुद्ध । मेरी आज्ञा के विरुद्ध ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विपरीत ।	मोहन के विपरीत ।
बीच ।	उसके बीच, तालाब के बीच ।
मध्य ।	दोनो शब्दों के मध्य में ।
विषय ।	उसके विषय में ।
बदले ।	गेहूँ के बदले वा बदले में ।
बाहर ।	घर के बाहर, मेरी इच्छा के बाहर ।
परे ।	संज्ञा के परे, मेरी बुद्धि के परे ।
समेत ।	स्त्रीपुत्रसमेत, धन के समेत ।
रहित ।	बुद्धिरहित, बुद्धि से रहित ।
सहित ।	स्त्रीसहित, धन के सहित ।
पूर्वक ।	सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक ।
संग ।	मेरे संग, मेरे संग में ।

नोट—सा शब्द ऐसा का छोटा रूप है, जिसका अर्थ **समान** होता है । इसके **पहिले विभक्ति** का **प्रयोग नहीं होता।** जैसे, चाँद सा मुखड़ा, मुझसा मूर्ख ।

नोट—संग, साथ, विषय, कारण **संज्ञा** भी होते हैं । जैसेः—

(१) उसका **संग** बुरा है । (कर्त्ता)
(२) उसका **साथ** बुरा है । (कर्त्ता)
(३) यह **विषय** कठिन है । (कर्त्ता)
(४) इसका **कारण** क्या है ? (कर्त्ता)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ **सम्बन्धवाचक शब्दों** का **प्रयोग सम्बन्ध कारक** की **अवस्था** में भी होता है। जैसे, उसके **आगे** का भाग, **आस पास** के गाँव, मेरे घर के **सामने** का पेड़ इत्यादि।

सम्बन्धवाचक शब्दों की सूची देखने से ज्ञात होता है कि कुछ शब्द ऐसे हैं जो **क्रियाविशेषण अव्यय** भी होते हैं। जैसे, नीचे, आगे, पीछे इत्यादि।

जब इन शब्दों का प्रयोग **सम्बन्ध** जनाने के लिये **संज्ञा** वा **सर्वनाम** के साथ होता है तब ये **सम्बन्धवाचक अव्यय** होते हैं और जब ये **क्रिया** के **विशेषण** होते हैं तब **क्रियाविशेषण अव्यय** होते हैं।

जैसे :—

क्रियाविशेषण अव्यय।	**सम्बन्धवाचक अव्यय।**
(१) ऊपर मत आओ।	कोठे के ऊपर मत जाओ।
(२) नीचे बैठो।	पेड़ के नीचे मत बैठो।
(३) मोहन पीछे हटा।	मेरे पीछे आओ।
(४) वह पास ही रहता है।	मेरे पास मत आओ।

नोट—जिस **संज्ञा** वा **सर्वनाम** के साथ **सम्बन्धवाचक अव्यय** का प्रयोग होता है वह **संज्ञा** वा **सर्वनाम सम्बन्धकारक** में होता है। जैसे:—

(१) **राम के** सामने मत बैठो। (२) **मेरी** ओर मत देखो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) समुच्चयबोधक अव्यय।

जो अव्यय **शब्दों** वा **वाक्यों** को **आपस में मिलाते हैं** उन्हें **समुच्चयबोधक अव्यय** कहते हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों में **अव्यय** शब्दों को मिलाता है:—

(१) **राम** और **मोहन** आये।

(२) **वह** और **मैं** जाऊँगा।

(३) **सोहन** और **तुम** जाओ।

(४) कुत्ता **लंगड़ा** और **अन्धा** था।

(५) **वे आये** और **चलेगये।**

ऊपर के वाक्यों में **और** शब्द अपने **पहिले** और **पीछे** के **शब्दों** को **मिलाता है** इसलिये यह **समुच्चयबोधक अव्यय** कहा जाता है।

ऊपर के उदाहरणों के देखने से ज्ञात होता है कि मिलाने वाला अव्यय प्राय: एकही प्रकार के शब्दों को मिलाता है। पहिले वाक्य में **संज्ञा शब्दों** को मिलाता है, दूसरे में **सर्वनाम शब्दों** को, तीसरे में **संज्ञा और सर्वनाम शब्दों** को, चौथे में **विशेषण शब्दों** को और पाँचवें में **क्रिया शब्दों** को।

निम्नलिखित उदाहरणों में **अव्यय** वाक्यों को मिलाते हैं:—

(१) मोहन ने कहा **कि** मैं आऊँगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) तुम जाओ **क्योंकि** विलम्ब होता है।

(३) मैं अभी जाऊँ **यदि** आप आज्ञा दें।

(४) आप कहिये **तो** मैं आऊँ।

ऊपर के वाक्यों में **कि, क्योंकि, यदि, तो** अपने आगे और पीछे के वाक्यों को मिलाते हैं।

नोट—कविता में समुच्चयबोधक अव्यय शब्दों का प्रयोग काव्य के नियम के अनुसार वाक्य के मध्य में भी होता है। जैसे :—

(१) दादुरध्वनि चहुँ ओर सुहाई।
वेद पढ़ैं **जनु** बटुसमुदाई।

(२) विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा।
बढ़ै प्रजा **जिमि** पाइ सुराजा।

समुच्चयबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं, (१) संयोजक और विभाजक। जो समुच्चयबोधक अव्यय योजना करते हैं अर्थात् पदों वा वाक्यों को जोड़ते हैं उनको **संयोजक अव्यय** कहते हैं। जैसे ऊपर के उदाहरण में।

निम्नलिखित शब्द संयोजक अव्यय हैं:—औ, और, यथा, तथा, यदि, जो, तो, तथापि, तौभी, कि, भी, फिर, पुनः इत्यादि।

जो समुच्चयबोधक अव्यय शब्दों अथवा वाक्यों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को तो **जोड़ते हैं** परन्तु उनके **अर्थ** को **विभाग** करते हैं उन्हें **विभाजक अव्यय** कहते हैं। जैसे:-

(१) **राम** या **मोहन** जा सकते हैं। (दोनो नहीं)

(२) **वह जावे** वा **तुम जाओ**। (दोनो नहीं)

(३) मोहन आया **पर** उसका भाई नहीं आया।

निम्नलिखित शब्द विभाजक अव्यय हैं:-

वा, या, अथवा, पर, परन्तु, किन्तु, चाहे, वरन, बल्कि, नहीं तो।

जिन **समुच्चयबोधक अव्यय शब्दों** का प्रयोग साथ साथ होता है उनके उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं:-

जो, यदि....तो—जो (यदि) तुम कहो तो मैं जाऊँ।

यद्यपि ....तथापि वा तौभी—यद्यपि राम बीमार है तथापि वह लिख पढ़ सकता है।

चाहे............चाहे—चाहे राम जावे चाहे तुम जाओ।

न .... न—न वह पढ़ सकता है न लिख सकता है।

यथा..........तथा—यथा राजा तथा प्रजा।

क्या........... क्या—क्या राजा हो क्या प्रजा सभी को मरना है।

नोट—सम्बन्धवाचक सर्वनाम और **सम्बन्धसूचक क्रियाविशेषण अव्यय** भी **संयोजक अव्यय** का काम देते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे:—

(१) **जो** पढ़ेंगे **सो** विद्वान् होंगे ।

(२) **जैसे** तुम पढ़ोगे **वैसे** मैं भी पढूँगा ।

(३) **जैसे** मैं लिखता हूँ **वैसे** तुम भी लिखो ।

(४) विस्मयादिबोधक अव्यय ।

जिस अव्यय से, **चित्त का भाव** प्रकट होता है उसे **विस्मयादिबोधक अव्यय** कहते हैं । जैसे:—

(१) **हैं !** उसने बाघ को मार डाला ।

(२) **हाय !** उसके पिता का देहान्त होगया ।

(३) **छिः !** मूर्ख, तूने अपने गुरु का निरादर किया ।

ऊपर के वाक्यों में **हैं** शब्द से **विस्मय, हाय** शब्द से **चित्त का दुःख और छिः** से **निरादर** प्रकट होता है । इसलिये ये शब्द **विस्मयादिबोधक अव्यय** हैं ।

(१) **हैं, भला** इत्यादि शब्दों से **आश्चर्य** प्रकट होता है ।

(२) **हाय, ओह, अहह, त्राहि त्राहि, बाप रे, मैया रे** इत्यादि शब्दों से **चित्त का दुःख** प्रकट होता है ।

(३) **धिक्, धिक्कार, दुर दुर, छी छी, थू थू** से **लज्जा** वा **निरादर** प्रकट होता है ।

(४) **धन्य धन्य, जय जय, वाह वाह** इत्यादि शब्दों से **प्रशंसा** प्रकट होती है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) प्रादि अव्यय (उपसर्ग)।

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नी, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ये २२ **प्रादि अव्यय** हैं। जब ये **क्रिया के पूर्व** होते हैं तब **उपसर्ग** कहलाते हैं। जिस क्रिया के पूर्व आते हैं उसके **अर्थ** को भी **प्रायः बदल** देते हैं। जैसे:—

प्रहार, आहार, संहार, विहार, परिहार, निराहार, उपहार, उद्धार इत्यादि।

अव्यय का पदान्वय।

(१) मोहन और राम अभी मेरे पास आवेंगे।

और—संयोजक अव्यय, मोहन और राम को मिलाता है।

अभी—कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय, आवेंगे क्रिया का विशेषण है।

पास—सम्बन्धवाचक अव्यय, इसका सम्बन्ध मेरे और मोहन, राम से है।

(२) हाय ! इसका सारा धन सहजही में नष्ट होगया।

हाय—विस्मयादिबोधक अव्यय।

सहजही में—प्रकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय, नष्ट होगया क्रिया का विशेषण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय १९।

समास।

दो वा अधिक **पदों के योग** को **समास** कहते हैं। इसके **अन्तिम पद** में **विभक्ति** रहती है। जैसे:—

समस्त पद।	**विग्रह।**
राजपुत्र।	राजा का पुत्र।
मातापिता।	माता और पिता।
चित्रलिखितकपि।	चित्र में लिखित जो कपि।

समास के भेद।

समास **छः प्रकार** के होते हैं:—(१) द्वन्द्व, (२) द्विगु, (३) कर्मधारय, (४) तत्पुरुष, (५) अव्ययीभाव, (६) बहुव्रीहि।

(१) द्वन्द्व समास।

जिस समास में **और** शब्द का लोप होता है उसे **द्वन्द्व समास** कहते हैं। जैसे:—रातदिन, अन्नजल, लेनदेन इत्यादि।

(२) द्विगु समास।

जिस समास में **पहिला पद संख्यावाचक विशेषण** होता है उसे **द्विगु समास** कहते हैं। जैसे:—त्रिभुवन, नवरत्न इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) कर्मधारय समास ।

जिस समास में **पहिला पद विशेषण** होता है उसे **कर्मधारय समास** कहते हैं। जैसे, खलजन, महाराजा, मृदुवानी इत्यादि ।

(४) तत्पुरुष समास ।

जिस समास में **उत्तर पद प्रधान** होता है उस **तत्पुरुष समास** कहते हैं। जैसे, राजभवन, समरसुभट, भूमिशयन, विद्यालय, प्रेमवश, रामसायकनिकर इत्यादि ।

(५) अव्ययीभाव समास ।

जिस समास में **अव्यय** का **योग दूसरे शब्दों के साथ** होता है उसे **अव्ययीभाव समास** कहतें हैं। जैसे, अतिकाल, यथाशक्ति, प्रतिदिन इत्यादि ।

(६) बहुव्रीहि समास ।

बहुव्रीहि समास में **अन्यपद प्रधान** होता है । जैसे, दशानन । इसमें दश और आनन पदों के अतिरिक्त **अन्य पद** अर्थात् **वह** जिसके **दश आनन** हैं **प्रधान** है । बहुव्रीहि समास प्रायः **विशेषण** होता है। यथा, दशानन रावण। यहाँ पर **दशानन** रावण का **विशेषण** है ।

बहुव्रीहि समास के और उदाहरण ये हैं:-

समस्तपद ।	विग्रह ।	अर्थात् ।
पंचानन ।	पाँच हैं मुख जिसके ।	शिवजी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लम्बोदर। लम्बा है उदर जिसका। गणेशजी।

चतुर्भुज। चार हैं भुजायें जिसकी। विष्णुजी।

नोट–(१) समासयुक्त समस्त पद का **पदान्वय एक साथ** होता है क्योंकि यह **एकही पद** समझा जाता है। ऐसे पद **संज्ञा, विशेषण** वा **अव्यय** होते हैं।

(२) आज कल समस्त पदों में कहीं २ (-) का प्रयोग होता है। जैसे, राज-भवन, भूमि-शयन, चित्र-लिखित-कपि इत्यादि। कहीं कहीं **एकही समस्त पद** में **कई समास** होते हैं। इस अवस्था में प्राय: **अन्त का समास प्रधान** समझा जाता है। जैसे:–

(१) वनहित **कोल-किरात-किशोरी**। (तत्पुरुष समास)

(२) सादर **सास-ससुर-पद-पूजा**। (तत्पुरुष समास)

(३) विश्वविदित **क्षत्री-कुल-द्रोही**। (बहुव्रीहि समास)

(४) **शरद-विमल-विधु-वदन** निहारे। (बहुव्रीहि समास)

इस प्रकार के पदों का विग्रह निम्नलिखित प्रकार से होता है:–

(१) कोल-किरात-किशोरी।

कोल-किरात—द्वन्द्व समास।

कोल-किरात-किशोरी—तत्पुरुष समास।

(२) सास-ससुर-पद-पूजा।

सास-ससुर—द्वन्द्व समास।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सास-ससुर-पद—तत्पुरुष समास।

सास-ससुर-पद-पूजा—तत्पुरुष समास।

(३) क्षत्री-कुल-द्रोही।

क्षत्री-कुल—तत्पुरुष समास।

क्षत्री-कुल-द्रोही—तत्पुरुष समास।

अध्याय २०।

संधि।

दो अक्षरों के मेल को **संधि** कहते हैं। जैसे, महा और ईश से **महेश**, जगत् और नाथ से **जगन्नाथ**, मन और हर से **मनोहर** होजाता है।

संधि के भेद।

संधि **तीन प्रकार** की होती हैं:-(१) स्वरसंधि, (२) व्यञ्जनसंधि, (३) विसर्गसंधि।

नोट-(१) अ इ उ ऋ लृ **ह्रस्व स्वर** हैं और आ ई इत्यादि **दीर्घ स्वर** हैं।

(२) अ आ **समान स्वर** कहे जाते हैं। इसी प्रकार से इ ई भी **समान स्वर** कहे जाते हैं इत्यादि।

(३) **व्यञ्जन** का **उच्चारण विना स्वर** के नहीं हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकता। इसलिये स्वर उनके साथ मिला दिये जाते हैं। जैसे, क में क् व्यञ्जन और अ मिला है।

(१) स्वरसंधि।

स्वर के साथ स्वर के मेल को **स्वरसंधि** कहते हैं। जैसे, शब्द+अर्थ=शब्दार्थ। परम+आत्मा=परमात्मा।

स्वरों के मिलाने के नियम।

(१) दो समान ह्रस्व वा दीर्घ स्वर मिलने पर **दीर्घ स्वर** होजाते हैं। जैसे, विद्या+अर्थी=विद्यार्थी। विद्या+आलय=विद्यालय। कवि+इन्द्र=कवीन्द्र। मही+ईश्वर=महीश्वर। विधु+उदय=विधूदय। स्वयंभू+उदय=स्वयंभूदय। परम+अर्थ=परमार्थ। मातृ+ऋद्धि=मातृद्धि।

नोट–इस प्रकार की संधि को **दीर्घसंधि** कहते हैं।

(२) अ वा आ के परे इ वा ई हो तो ए होजाता है। जैसे, देव+इन्द्र=देवेन्द्र। महा+ईश=महेश। परम+ईश्वर=परमेश्वर। रमा+ईश=रमेश।

(३) अ वा आ के परे उ वा ऊ हो तो ओ हो जाता है। जैसे, पर+उपकार=परोपकार। महा+उत्सव=महोत्सव। गंगा+ऊर्म्मि=गंगोर्म्मि।

(४) अ वा आ के परे ऋ हो तो अर् होजाता है। जैसे; हिम+ऋतु=हिमर्तु। महा+ऋषि=महर्षि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—नं० (२), (३), (४) की संधि को **गुण-संधि** कहते हैं।

(५) अ वा आ के परे ए वा ऐ हो तो ऐ होजाता है। जैसे, एक+एक=एकैक। परम+ऐश्वर्य=परमैश्वर्य।

(६) अ वा आ के परे ओ वा औ हो तो औ हो जाता है। जैसे, सुन्दर+ओदन=सुन्दरौदन। वन+औषधि=वनौषधि।

नोट—नं० ५ और ६ को **वृद्धिसंधि** कहते हैं।

(७) इ के परे कोई **असमान स्वर** हो तो इ को य् होजाता है। जैसे, रीति+अनुसार=रीत्यनुसार। गोपी+अर्थ=गोप्यर्थ। इति+आदि=इत्यादि। देवी+आगम=देव्यागम। अभि+उदय=अभ्युदय। सखी+उक्त=सख्युक्त। नी+ऊन=न्यून। नदी+ऊर्म्मि=नद्यूर्म्मि। प्रति+एक=प्रत्येक। अति+ऐश्वर्य=अत्यैश्वर्य।

(८) उ के परे कोई **असमान स्वर** हो तो उ को व् होजाता है। जैसे, अनु+अय=अन्वय। सु+आगत=स्वागत। अनु+इत=अन्वित। अनु+एषण=अन्वेषण। बहु+ऐश्वर्य=बह्वैश्वर्य।

(९) ऋ के परे कोई **असमान स्वर** हो तो ऋ को र् होजाता है। जैसे, पितृ+अनुमति=पित्रनुमति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मातृ+आनन्द=मात्रानन्द । पितृ+उपदेश=पित्रुपदेश ।

(१०) ए के परे **कोई स्वर** हो तो ए को **अय्** हो जाता है। जैसे, ने+अन=नयन ।

(११) ऐ के परे **कोई स्वर** हो तो ऐ को **आय्** हो जाता है। जैसे, नै+अक=नायक ।

(१२) **ओ** के परे **कोई स्वर** हो तो **ओ** को **अव्** हो जाता है। जैसे, पो+अन=पवन । पो+इत्र=पवित्र । गो+ईश=गवीश ।

(१३) **औ** के परे **कोई स्वर** हो तो **औ** को **आव्** हो जाता है। जैसे, पौ+अक=पावक । भौ+इनी=भाविनी । भौ+उक=भावुक ।

नोट–नं० १०, ११, १२ और १३ को **अयादि-संधि** कहते हैं ।

अभ्यास ।

निम्नलिखित शब्दों को ऊपर की **संधियों के अनुसार मिलाकर** लिखो :–

विद्या+आलय, अधि+ईश्वर, मही+इन्द्र, नदी+ईश, लघु+ऊर्म्मि, महा+इन्द्र, जल+ऊर्म्मि, तथा+एव, महा+ऐश्वर्य, महा+औदार्य, आज्ञा+अनुसार, नाम+एव, महा+ओघ, दव+ऋषि, गण+ईश, नर+इन्द्र, रमा+ईश, भाग्य+

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदय, राम+अनुज, साधु+उपाय, राजा+ऋषि, यदि+अपि, प्रति+उत्तर, पितृ+अनुमति ।

(२) व्यंजनसंधि ।

व्यंजन के साथ व्यंजन के मेल को व्यंजनसंधि कहते हैं । जैसे, जगत्+नाथ=जगन्नाथ ।

(१) पाँचो वर्गों के प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ वर्ण से परे वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह वा कोई स्वर आवे तो प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ वर्ण के स्थान में तृतीय वर्ण होजायगा । जैसे, दिक्+गज= दिग्गज । दिक्+अम्बर=दिगम्बर । अच्+अंत= अजंत । षट्+दर्शन=षड्दर्शन । जगत्+नाथ= जगन्नाथ । अप्+भाग=अब्भाग ।

(२) यदि वर्गों के प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ वर्ण से परे कोई सानुनासिक अक्षर हो तो वह भी सानुनासिक होजाता है । जैसे, वाक्+ मय=वाङ्मय । जगत्+नाथ=जगन्नाथ ।

(३) तवर्ग और चवर्ग के योग में तवर्ग को चवर्ग होजाता है । तवर्ग और टवर्ग के योग में तवर्ग को टवर्ग होजाता है । जैसे, उत् + चारण=उच्चारण । उत्+छिन्न=उच्छिन्न । उत्+ज्वल=

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उज्ज्वल । सत्+जाति=सज्जाति । तत्+टीका=तट्टीका । भवत्+डमरु=भवड्डमरु ।

(४) यदि त् द् के परे श हो तो च्छ हो जाता है। जैसे, सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र ।

(५) यदि त् द् के परे ल हो तो ल् होजाता है। जैसे, उत्+लंघन=उल्लंघन । उत्+लास=उल्लास ।

(६) यदि त् द् के परे ह हो तो द्ध होजाता है। जैसे, तत्+हित=तद्धित । उत्+हार=उद्धार ।

(७) यदि ह्रस्व स्वर के परे छ हो तो छ में च् मिला दिया जाता है । जैसे, परि+छेद=परिच्छेद । गृह+छिद्र=गृहच्छिद्र ।

(८) अनुस्वार के परे स्वर हो तो अनुस्वार म् हो जाता है । जैसे, सं+आचार=समाचार । सं+उदाय=समुदाय ।

(९) यदि अनुस्वार के परे कोई स्पर्श वर्ण हो तो अनुस्वार का पंचम वर्ण होजाता है । जैसे, सं+गम=सङ्गम । किं+चित्=किञ्चित् । सं+तोष=सन्तोष । सं + वन्ध=सम्वन्ध ।

नोट—यदि अनुस्वार के परे अन्तस्थ वा ऊष्म वर्ण हो तो अनुस्वार नहीं पलटता । जैसे, सं + वाद=संवाद । सं + हार=संहार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) विसर्गसंधि ।

विसर्ग के साथ **व्यंजन** वा **स्वर** के **मेल** को **विसर्ग-संधि** कहते हैं । जैसे, मनः + हर=मनोहर । निः + आधार=निराधार ।

(१) यदि विसर्ग के पहिले इ वा उ हो और उसके परे **क ख प फ** हो तो **विसर्ग ष्** होजाता है । जैसे, निः+कपट=निष्कपट । निः+पाप=निष्पाप । दुः+कर्म=दुष्कर्म । दुः+प्राप्य=दुष्प्राप्य ।

(२) यदि **विसर्ग** के **पहिले अ** हो और उसके **परे ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह** हो तो **विसर्ग ओ** हो जाता है । जैसे, मनः+हर=मनोहर । तेजः+मय=तेजोमय । सरः+रुह=सरोरुह । मनः+नीति=मनोनीति ।

नोट—इस अवस्था में यदि **विसर्ग** के परे **अ** हो तो **अ** का **लोप** होजाता है और **खंडाकार** का **चिह्न (ऽ)** लिख दिया जाता है । जैसे, मनः+अवधान=मनोऽवधान ।

(३) यदि **विसर्ग** से परे **च, छ** हो तो **विसर्ग श्** होजाता है, **त, थ** हो तो वह **स्** होजाता है और **ट, ठ** हो तो वह **ष्** होजाता है । जैसे, निः+चल=निश्चल । निः+छल=निश्छल । निः+तार=निस्तार । धनुः+टङ्कार=धनुष्टङ्कार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) यदि विसर्ग के पहिले अ, आ को छोड़कर दूसरा स्वर हो और उसके परे ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह अथवा कोई स्वर हो तो विसर्ग र् होजाता है। जैसे, निः+धन=निर्धन। निः+गुण= निर्गुण। निः+जल=निर्जल। निः+भय=निर्भय। निः+अन्न=निरन्न। प्रातः+आश=प्रातराश।

(५) यदि विसर्ग के पहिले अ इ उ स्वर हो और उसके परे र हो तो विसर्ग का लोप होजाता है और उसके पहिले का स्वर दीर्घ होजाता है। जैसे, पुनः+रमते=पुनारमते। निः+रस=नीरस। निः+रोग=नीरोग। शम्भुः+राजते=शम्भूराजते।

अध्याय २१।

वाक्यविभाग।

वाक्य।

जिस शब्द-समूह से पूरा अर्थ प्रकट होता है उसे वाक्य कहते हैं। जैसे, पहाड़ पर रहनेवाले लोग जंगली जानवरों से नहीं डरते। प्रत्येक वाक्य में दो अंग होते हैं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उद्देश्य और **विधेय**। जिसके **विषय** में कुछ कहा जाता है उसे **उद्देश्य** और जो कुछ **उद्देश्य** के **विषय** में कहा जाता है उसे **विधेय** कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में **पहाड़ पर रहनेवाले लोग** उद्देश्य है और **जंगली जानवरों से नहीं डरते** विधेय है।

वाक्य के मुख्य कर्त्ता को मुख्य उद्देश्य और **मुख्य क्रिया को मुख्य विधेय** कहते हैं।

ऊपर के वाक्य में **लोग मुख्य उद्देश्य** और **डरते मुख्य विधेय** है। कुछ **वाक्य** अनेक **छोटे २ वाक्यों** से बने रहते हैं जिनको **वाक्यांश** कहते हैं। ऐसे **वाक्यों** में भी **मुख्य विधेय** प्रायः **एकही क्रिया** होती है। जैसेः—

राम ने मोहन से कहा कि तुम पढ़ो तो मैं पढ़ाऊँ।

इस **वाक्य** में **मुख्य उद्देश्य राम** है और **मुख्य विधेय कहा** है।

वाक्य के भेद।

उद्देश्य और **विधेय** के अनुसार वाक्य **तीन प्रकार** के होते हैंः—

(१) **स्वतंत्र** वा **साधारण वाक्य**, (२) **मिश्रित** वा **संकीर्ण वाक्य**, (३) **संसृष्ट वाक्य**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) साधारण वाक्य।

जिस वाक्य में मुख्य विधेय एकही क्रिया हो उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे, (१) राम ने हिन्दी नहीं पढ़ी है। (२) राम और मोहन पाठशाला जा रहे हैं।

(२) मिश्रित वाक्य।

जिन छोटे २ वाक्यों से पूर्ण वाक्य बनता है उन्हें वाक्यांश कहते हैं। जैसे, राम ने मोहन से कहा कि यदि तुम मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें अपनी पुस्तक दूँ।

ऊपर के वाक्य में तीन वाक्यांश हैं:—

(१) राम ने मोहन से कहा।
(२) तुम मेरे पास आओ।
(३) मैं तुम्हें अपनी पुस्तक दूँ।

नोट-कि, यदि, तो वाक्यांशों के संयोजक हैं।

इस प्रकार के पूर्ण वाक्य के प्रत्येक वाक्यांश में कर्त्ता और क्रिया होती है, परन्तु वह प्राय: अकेले पूर्ण अर्थ नहीं प्रकट करता। ऊपर के वाक्यांशों में पहिले वाक्यांश से पूर्ण अर्थ नहीं निकलता क्योंकि कहा क्रिया सकर्मक है इसका कर्म होना आवश्यक है। इसलिये आगे कही हुई बात इसका कर्म है। दूसरा वाक्यांश भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्ण है क्योंकि इस वाक्य की **आओ** क्रिया **हेतुहेतुमद्भविष्यत्काल** में है। यह क्रिया केवल **कारण** प्रकट करती है, **कार्य्य** नहीं। तीसरा वाक्यांश भी **अकेले अर्थ नहीं** प्रकट कर सकता क्योंकि इसकी क्रिया भी **हेतुहेतुमद्भविष्यत्काल** में है और यह वाक्यांश केवल **कार्य्य** प्रकट करता है, **कारण** नहीं। इसलिये ये तीनों वाक्यांश **पूर्ण अर्थ** प्रकट करने के लिये **एक दूसरे के आश्रित** हैं और तीनों मिलकर **पूर्ण वाक्य** बनाते हैं। इस प्रकार के वाक्य को **मिश्रित वाक्य** कहते हैं क्योंकि इनमें दो वा दो से अधिक **छोटे छोटे वाक्य** अर्थात् **वाक्यांश** मिले होते हैं। यद्यपि **मिश्रित वाक्यों** में एक से **अधिक कर्त्ता** और **क्रिया** होती है परन्तु **मुख्य कर्त्ता** वा **क्रिया एक ही** होती है। ऊपर के वाक्य में मुख्य कर्त्ता **राम** है और मुख्य क्रिया **कहा** है क्योंकि **राम** ही इस वाक्य का **मुख्य उद्देश्य** है और **कहा मुख्य विधेय** है। जिस वाक्यांश में **मुख्य उद्देश्य** और **मुख्य विधेय** होता है उसे **मुख्य वाक्यांश** कहते हैं और जो **वाक्यांश मुख्य वाक्यांश** के **आश्रित** होते हैं उन्हें **आश्रित** वा **परतन्त्र वाक्यांश** कहते हैं। ऊपर के वाक्य में **पहिला वाक्यांश मुख्य वाक्यांश** है और **शेष दो वाक्यांश आश्रित वाक्यांश** हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुख्य और आश्रित वाक्यांशों के और उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :–

(१) वह आदमी जो कल आया था मेरा नौकर था ।

(१) वह आदमी मेरा नौकर था । (मुख्य)

(२) जो कल आया था । (आश्रित)

(२) देखो मोहन क्या कर रहा है ।

(१) (तुम) देखो । (मुख्य)

(२) मोहन क्या कर रहा है । (आश्रित)

(३) जो पढ़ेंगे वे धनी होंगे ।

(१) वे धनी होंगे । (मुख्य)

(२) जो पढ़ेंगे । (आश्रित)

(४) जैसे तुम पढ़ोगे वैसे मैं भी पढ़ूँगा ।

(१) वैसे मैं भी पढ़ूँगा । (मुख्य)

(२) जैसे तुम पढ़ोगे । (आश्रित)

(५) यद्यपि वह दुखी है तौ भी वह काम करता है ।

(१) तौभी वह काम करता है । (मुख्य)

(२) यद्यपि वह दुखी है । (आश्रित)

(६) मोहन परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होगा क्योंकि उसने परिश्रम किया है ।

(१) मोहन परीक्षा में उत्तीर्ण होगा । (मुख्य)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) क्योंकि उसने परिश्रम किया है। (आश्रित)

(७) राम ने मोहन से कहा कि यदि तुम पढ़ो तो मैं तुम्हें हिन्दी पढ़ाऊँ।

(१) राम ने मोहन से कहा। (मुख्य)

(अ) यदि तुम पढ़ो तो मैं तुम्हें हिन्दी पढ़ाऊँ। (नं० १ का आश्रित)

(२) यदि तुम पढ़ो। (नं० ३ का आश्रित)

(३) तो मैं तुम्हें हिन्दी पढ़ाऊँ। (नं० २ का मुख्य)

आश्रित वाक्यांश के भेद।

आश्रित वाक्यांश **तीन प्रकार** के होते हैं:—(१) संज्ञा वाक्यांश, (२) विशेषण वाक्यांश, (३) क्रियाविशेषण वाक्यांश।

(१) संज्ञा वाक्यांश।

जो वाक्यांश **संज्ञा** का **काम** देते हैं अर्थात् किसी **कारक** का **काम** देते हैं उन्हें **संज्ञा वाक्यांश** कहते हैं। जैसे, राम ने कहा कि मैं **आऊँगा**।

ऊपर के वाक्य में **मैं आऊँगा संज्ञा वाक्यांश** है क्योंकि यह **कहा** क्रिया का **कर्म** है।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में **संज्ञा वाक्यांश** बताओ:—

(१) मोहन पूछता है कि पंडितजी बुलाये जायँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) लड़के ने देखा कि सिंह पानी पी रहा है।
(३) पंडितजी ने मुझ से प्रश्न किया कि संज्ञा कितने प्रकार की होती है।

(२) विशेषण वाक्यांश।

जो वाक्यांश **संज्ञा** वा **सर्वनाम** को पृथक् करते हैं अर्थात् उनकी **विशेषता** बताते हैं उन्हें **विशेषण वाक्यांश** कहते हैं। जैसे, वह आदमी कहाँ है जो कल आया था ?

ऊपर के वाक्य में **जो कल आया था विशेषण वाक्य** है क्योंकि यह **आदमी** को दूसरे आदमियों से पृथक् करता है अर्थात् **उसकी विशेषता** बताता है।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में **विशेषण वाक्यांश** बताओ:—

(१) जो लोग परिश्रम करते हैं वे सुखी रहते हैं।
(२) वह पुस्तक कहाँ है जिसे मैंने तुमको दिया था ? ।
(३) मोहन उसी स्थान पर सोता है जहाँ हमलोग सोते हैं।
(४) जो शब्द संज्ञा की विशेषता जनाते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं।

(३) क्रियाविशेषण वाक्यांश।

जो वाक्याश **क्रिया की विशेषता** प्रकट करते हैं उन्हें **क्रियाविशेषण वाक्यांश** कहते हैं। जैसे:—

(१) जब सब लोग सो जाते हैं तब राम पढ़ता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) सोहन को बुलाओ यदि वह पढ़ना समाप्त कर चुका हो।
(३) जैसे तुम पढ़ोगे वैसे मैं भी पढ़ूँगा।
(४) जहाँ कहीं पंडितजी जाते हैं उनका आदर होता है।

नं० (१) में **(जब सब लोग सो जाते हैं) पढ़ता है** का **क्रियाविशेषण** है।

नं० (२) में **(यदि वह पढ़ना समाप्त कर चुका हो) बुलाओ** का **क्रियाविशेषण** है।

नं० (३) में **(जैसे तुम पढ़ोगे) पढ़ूँगा** का **क्रियाविशेषण** है।

नं० (४) में **(जहाँ कहीं पंडितजी जाते हैं) आदर होता है** का **क्रियाविशेषण** है।

इसलिये ये वाक्यांश **क्रियाविशेषण वाक्यांश** हैं।

अभ्यास।

निम्नलिखित वाक्यों में **क्रियाविशेषण वाक्यांश** बताओ:—

(१) जब मैं आता हूँ तब तुम कहाँ भागते हो ?
(२) यदि मोहन सोता हो तो उसे मत जगाओ।
(३) ज्योंही मैं मोहन के घर पहुँचा त्योंही वह अपने नौकर के साथ गाँव को भागा।
(४) जैसे तुम पढ़ते हो वैसे मैं नहीं पढ़ सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) संसृष्ट वाक्य ।

जिस वाक्य में दो वा दो से अधिक वाक्यांश हों परन्तु वे वाक्यांश एक दूसरे के आश्रित न हों तो ऐसे वाक्य को **संसृष्ट वाक्य** कहते हैं। जैसे, **मोहन पढ़ रहा है** पर **सोहन सो रहा है।**

ऊपर के वाक्य के **दोनों वाक्यांश** अलग अलग पूर्ण अर्थ प्रकट करते हैं। इसलिये वे **एक दूसरे के आश्रित** नहीं हैं।

संसृष्ट वाक्य के **वाक्यांश समान वाक्यांश** कहे जाते हैं।

मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अनुसार वाक्य के भेद।

(१) जिस वाक्य का **मुख्य विधेय कर्तृप्रधान क्रिया** हो उसे **कर्तृप्रधान वाक्य** कहते हैं। जैसे, मोहन ने कहा कि मैं आऊँगा।

(२) जिस वाक्य का **मुख्य विधेय कर्मप्रधान क्रिया** हो उसे **कर्मप्रधान वाक्य** कहते हैं। जैसे, यदि आप कहें तो पंडितजी बुलाये जायँ।

(३) जिस वाक्य का **मुख्य विधेय भावप्रधान क्रिया** हो उसे **भावप्रधान वाक्य** कहते हैं। जैसे, सोहन से बैठा नहीं जाता क्योंकि वह बीमार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) जिस वाक्य से **प्रश्न** जाना जाय वा जिस वाक्य के **मुख्य वाक्यांश** से **प्रश्न** जाना जाय उसे **प्रश्नवाचक वाक्य** कहते हैं। जैसे, (१) तुम कहाँ जाते हो ? (२) जब मैं वहाँ पहुँचा तब तुम क्या कर रहे थे ?

नोट–(१) प्रश्नवाचक वाक्य में **न** का प्रयोग।

जिस समय प्रश्न का उत्तर प्रश्न करनेवाले को कुछ कुछ ज्ञात होता है उस समय **प्रश्नवाचक वाक्य** के **अन्त** में **न** अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे, (१) तुम भी जाओगे न ? (२) वह तो न आवेगा न ?

(२) निम्नलिखित वाक्य **प्रश्नवाचक वाक्य** नहीं हैं क्योंकि उनके **मुख्य वाक्यांश प्रश्नवाचक** नहीं हैं। जैसे:–(१) देखो मोहन कहाँ सो रहा है। (२) कल्लू से पूछो कि वह क्यों नहीं पढ़ने जाता। (३) मैंने उससे पूछा था कि तुम क्यों नहीं आते।

(५) जिस वाक्य का **मुख्य विधेय विधिक्रिया** हो उसे **विधिसूचक वाक्य** कहते हैं। जैसे, मोहन से कहो कि वह घर जाय।

(६) जिस **वाक्य** से अथवा वाक्य के **मुख्य वाक्यांश** से **निषेध** जाना जाय उसे **निषेधवाचक वाक्य** कहते हैं। जैसे, (१) मैं घर न जाऊँगा। (२) उसने मुझसे नहीं कहा था कि तुम घर जाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७) जिस वाक्य से **विस्मय** वा **चित्त का भाव** प्रकट होता है उसे **विस्मयादिबोधक वाक्य** कहते हैं। जैसे, (१) हैं ! मोहन ने सिंह को मारा है। (२) हाय ! उनके पिता का देहान्त होगया।

अध्याय २२।

हिन्दी में केवल **एकही विराम** है अर्थात् (।) जिसको **पूर्णविराम** कहते हैं। परन्तु आज कल **हिन्दी** में **अंगरेज़ी भाषा** के निम्नलिखित **विरामों** का भी **प्रयोग** होता है:—

(,), (;), (:—), (?), (!), (" "), (-)

(१) (,) इस चिह्न को अंगरेज़ी में **कामा** और हिन्दी में **अल्पविराम** कहते हैं। इसका प्रयोग उस समय होता है जब एकही प्रकार के कई शब्दों वा वाक्यांशों का प्रयोग **एकही अवस्था** में होता है। इस दशा में अन्त के **दो शब्दों** के **मध्य** में **और** का प्रयोग होता है। जैसे :—

(१) राम, सोहन, मोहन, लल्लू और कल्लू आये।
(२) यह लड़का चंचल, नटखट और जुआरी है।
(३) जिसका हृदय गिग हुआ है, जिसका साहस नष्ट होगया है, जिसकी कमर झुक गई है, तथा जिसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कन्धा गिर गया है, अर्थात् जो पुरुषार्थरहित है, उस मनुष्य की अवस्था शोचनीय है।

(२) (;) इस चिह्न को अंगरेज़ी में **सेमीकोलन** और हिन्दी में **अर्द्धविराम** कहते हैं। इसका प्रयोग प्राय: बड़े २ **स्वतन्त्रवाक्यांशों** को **अलग करने के लिये** होता है। जैसे, पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वे अपने घर लौटकर आये; तब वे हाथ पाँव और डील डौल में हृष्ट पुष्ट और गाँठ गठीले थे।

नोट—इस चिह्न का प्रयोग **हिन्दी** में **बहुतकम** होता है। इसके बदले **अल्पविराम** का ही **प्रयोग** किया जाता है।

(३) (:—) इसको **कोलन** और **डैश** कहते हैं। इस का प्रयोग उस समय होता है जब किसी **वाक्य** के आगे **कई बातें क्रम** में लिखी जाती हैं। जैसे, निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखो :—

(१) संज्ञा, (२) सर्वनाम, (३) क्रिया।

(४) (?) इसको **प्रश्नवाचक चिह्न** कहते हैं। इसका प्रयोग **प्रश्नवाचक वाक्य** के **अन्त** में **पूर्ण विराम** के **बदले** होता है। जैसे, तुम कहाँ जा रहे हो ?

(५) (!) इसको **विस्मयादिबोधक चिह्न** कहते हैं। इसका प्रयोग कहीं **विस्मयादिबोधक वाक्य** के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्त में, कहीं **विस्मयादिबोधक अव्यय** के अन्त में और कहीं **सम्बोधन कारक** की **संज्ञा** के **अन्त** में होता है। जैसेः—

(१) हैं, उसने सिंहको मारा ! (२) हाय ! उसका देहान्त होगया। (३) हे राजन् ! जो आज्ञा हो सो हम लोग करें।

(६) (" ") इस चिह्न को **उलटा विराम** कहते हैं। इसका प्रयोग **किसी की कही हुई बात** के **आदि** और **अन्त** में होता है। जैसे, किसी महात्मा ने कहा है कि " जिस कुल की स्त्रियाँ दुखी होती हैं उस कुल का नाश होजाता है "।

(७) (-) इसको **हाइफ़न** कहते हैं। इसका प्रयोग **सामासिक शब्दों** के **मध्य** में होता है। जैसे, (१) रे रवि-कुल-कलंक ! मति-रंक हमें निरधार्‌यो। (२) मानस-सलिल-सुधा-प्रतिपाली।

(८) (।) इसको **विराम** कहते हैं। इसका प्रयोग प्रत्येक वाक्य के **अन्त** में **अत्यावश्यक** है। **वाक्यांशों** के **आदि** में इसका **प्रयोग कभी न होना** चाहिये।

(९) (॥) इसको **पूर्ण विराम** कहते हैं। जब सम्पूर्ण आशय समाप्त होजाता है तब उसके **अन्त** में इसका **प्रयोग** होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभ्यास ।

निम्नलिखित वाक्यों में **उचित विराम** का प्रयोग करो:—

समय का अच्छा व्यवहार करनेवाले लोग मनुष्य-मात्र के लिये असंख्य उपकार कर गये हैं महात्मा और भाग्यवान् लोगों की भी यही शैली है क्योंकि प्रधान २ ग्रन्थकार आविष्कारक विज्ञानवित् पंडित अध्यापक देश-हितैषी परोपकारी धार्मिक सीधे शान्त और सच्चरित्र आदि महानुभाव लोग इसी शैली के हुये और होते हैं और येही पृथ्वी के भूषण भी हैं यदि ये न जन्म लेते तो क्या पृथ्वी ऐसी सुखद होती कभी नहीं बस इन्हींको सभ्य और शिक्षित मण्डलियाँ धन्यवाद देती हैं इन्हींकी पूजा करती हैं और इन्हींके दिखाये हुये पथ पर चल कर उन्नति प्राप्त करती हैं ।

निम्नलिखित वाक्यों के **अनुचित विरामों** को हटाकर आवश्यकतानुसार **उचित विराम** चिह्नों का प्रयोग करो:—

इसीसे कहते हैं "भाइयो; आलस्य में पड़े पड़े अपने दिन न बिताओ " ? जब तुम प्रत्येक घड़ी, और पल को अपने सद्, व्यवहार में लाओ । तब देखोगे कि हमारे हाथ, पाँव किस प्रकार काम करने में समर्थ होते हैं:—हमारा जीवन कैसा सुखद होता है ? समय का जैसा व्यवहार किया जाता है । फल भी वैसाही होता है, वे बड़े ही मूर्ख हैं, जो समय को दुखदाई मानकर, क्योंकर यह शीघ्र बीते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा कहकर अपने लिये खेद; पश्चात्ताप और नरक का द्वार खोल देते हैं, किन्तु बुद्धिमान् लोग, बड़े उमङ्ग से इसे आदर-पूर्वक स्वागतकर इसके सद् व्यवहार से सांसारिक उन्नति करके, अपने मनुष्य, जन्म को सफल करते हैं ?

अध्याय २३ ।

छन्दोनिरूपण ।

छन्दोनिरूपण व्याकरण का वह भाग है जिसमें **छन्द बनाने अर्थात् कविता करने के नियम** दिये जाते हैं ।

छन्द में **मात्रा** वा **वर्ण** की **गिनती** रहती है ।

छन्दों के विषय में **दो बातों** का जानना **बहुत आवश्यक** है:—

(१) **छन्दों का परिमाण** अर्थात् कौन २ छन्द कितना बड़ा होता है ।

(२) **छन्दों के भेद** ।

(१) छन्दों का परिमाण ।

छन्दों का परिमाण (नाप) **गणों** द्वारा होता है । **गण तीन वर्णों** के **समूह** को कहते हैं । वर्ण **दो प्रकार** के होते हैं:—

नोट—स्कूलों में कविता नहीं सिखाई जाती । इस लिये यह विभाग बहुत ही सूक्ष्म रीति से लिखा है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) गुरु जिसमें **दो मात्रायें** हों। इसका चिह्न 'ऽ' है।

(२) लघु जिसमें **एक मात्रा** हो। इसका चिह्न '।' है।

प्रत्येक गण में तीन वर्ण होने के कारण **एक गण** में कम से कम **तीन** और अधिक से अधिक **छः मात्रायें** होनी चाहियें।

निम्नलिखित वर्ण **लघु** हैं:—

(१) ह्रस्व स्वर। जैसे, अ, इ, उ, ऋ।

(२) ह्रस्व स्वरान्त व्यञ्जन। जैसे, क, कि, गु, कृ।

निम्नलिखित वर्ण **गुरु** हैं:—

(१) सब **दीर्घ स्वर** और **दीर्घ स्वरान्त व्यञ्जन** वा **वे स्वर** जिनमें **अनुस्वार** वा **विसर्ग** हो। जैसे, आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, का, कै, को, कं, गं, गाः।

(२) पद के अन्त के **लघु** जो ज़ोर देकर **दीर्घ** की **भाँति** पढ़े जायँ।

(३) संयुक्त व्यञ्जनों से **पहिले आनेवाला ह्रस्व**। जैसे, सत्य के स का अ।

गण के **भेद कभी मात्रा** और कभी **वर्ण की गिनती से** होते हैं।

मात्रा के हिसाब से **पाँच गण** होते हैं:—

(१) ऽऽऽ छः मात्राओंवाला **टगण** कहाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) SSI पाँच मात्राओंवाला **ठगण** कहाता है।
(३) SS चार मात्राओंवाला **डगण** ,, ,, ।
(४) SI तीन मात्राओंवाला **ढगण** ,, ,, ।
(५) S दो मात्राओंवाला **णगण** ,, ,, ।

वर्ण के हिसाब से आठ गण होते हैं:—

(१) ISI (**जगण**) जिसमें बीच का वर्ण गुरु और शेष लघु हों।
(२) SSI (**तगण**) जिसमें अन्त का लघु और शेष गुरु हों।
(३) III (**नगण**) जिसमें तीनो वर्ण लघु हों।
(४) SII (**भगण**) जिसमें पहिला गुरु और शेष लघु हों।
(५) SSS (**मगण**) जिसमें तीनो वर्ण गुरु हों।
(६) ISS (**यगण**) जिसमें पहिला लघु और शेष गुरु हों।
(७) SIS (**रगण**) जिसमें बीच का लघु और शेष गुरु हों।
(८) IIS (**सगण**) जिसमें अन्त का गुरु और शेष लघु हों।

(२) छन्दों के भेद।

छन्दों के बहुत से भेद हैं। थोड़े से यहाँ लिखे जाते हैं:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) **चौपाई**—जिसके **प्रत्येक चरण** में **१६ मात्रायें** हों। जैसे,

तात जनकतनया यह सोई, धनुषयज्ञ ज्यहि कारण होई।
पूजन गौरि सखी लै आई, करति प्रकाश फिरति फुलवाई॥

(२) **दोहा**—जिसके **चारो पदों** में **क्रम** से **१३, ११, १३, ११ मात्रायें** हों। जैसे,

सिय शोभा हिय बरणि प्रभु, आपनि दशा बिसारि।
बोले शुचि मन अनुज सन, वचन समय अनुहारि॥

(३) **सोरठा**—जिसके **चारो पदों** में **क्रम** से **११, १३, ११, १३ मात्रायें** हों। जैसे,

सीय विवाहत राम, गर्व दूरि करि नृपन कर।
जीति को सक संग्राम, दशरथ के रण बाँकुरे॥

(४) **कुण्डलिया**—आदि में **एक दोहा**, दोहा के पीछे **रोला छन्द** जोड़ो। इस प्रकार **२४, २४ मात्राओं** के **छः चरण** रक्खो। **आदि** और **अन्त का पद** प्रायः **एकसा हो** ऐसे छन्द को **कुण्डलिया छन्द** कहते हैं। जैसे,

दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाइ विनय सबही की कीजै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व
लौटा दें। विल ़ लौटानेपर ५ पैसे

कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशि दिन चारि रहत सबही के दौलत॥

(५) **कवित्त (मनहरन)–३१, ३१ अक्षरों के चार चरण** रक्खो। **प्रति चरण में १६ और १५** पर **विराम** हो। ऐसे छन्द को **मनहरन कवित्त** कहते हैं। जैसे,

सुन्दर सुजान पर मन्द मुसुकान पर बाँसुरी की तान पर ठौरन ठगी रहै। मूरति विशाल पर कंचन सी माल पर हंसन सी चाल पर खोरन खगी रहै॥ भौंहें धनु मैन पर लोने युग नैन पर शुद्ध रस बैन पर वाहिद पगी रहै। चंचल से तन पर सांवरे वदन पर नन्द के नँदन पर लगन लगी रहै॥

(६) **सवैया–सात भगण और अन्त में एक गुरु २२ अक्षर** का "**मदिरा**" नाम **सवैया छन्द** कहलाता है। जैसे,

भा सत गौरि गुसाइन को वर राम धनू दुइ खंड कियो।
मालिनि को जयमाल गुहो हरि के हिय जानकि मेलि दियो॥
रावन की उतरी मदिरा चुप चाप पयान जु लंक कियो।
राम वरी सिय मोदभरी नभ में सुर ने जयकार कियो॥

नोट–आठ सगण का "**माधवी**" **सवैया छन्द और आठ जगण** का "**मुक्तहरा**" **सवैया छन्द** कहलाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi